अदबी सुगंध

(सिन्धी साहित्य)

दर्जो 12

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

अदबी सुगंध

दर्जो 12

दरसी किताबु तियार कंदड़ कमेटी

संयोजिका :

डा. कमला गोकलाणी, उप निदेशक- सिंधु शोधपीठ महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

सम्पादक मंडल :

श्रीमती कान्ता मथराणी, प्रधानाचार्य, सेठ दौलत राम निहालचन्द, राजकीय सिन्धी उच्च माध्यमिक विद्यालय, खारी कुई, अजमेर

डा. सविता खुराना, व्याख्याता-सिन्धी, सेठ दौलत राम निहालचन्द, राजकीय सिन्धी उच्च माध्यमिक विद्यालय, खारी कुई, अजमेर

शुक्रगुज़ारी

सम्पादक मण्डल ऐं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर उन्हनि सभिनी अदीबनि जी शुक्रगुज़ारी मञे थो, जिनजूं अमुल्ह रचनाऊं ऐं वीचार हिन किताब में शामिल कया विया आहिनि।

जेतोणीक हिन किताब में छपियल समूरनि पाठनि/कविताउनि में कापी राईट जो ध्यानु रखियो वियो आहे, तड्हिं वि जेकड्हिं के हिस्सा रहिजी विया हुजनि त हीउ सम्पादक मण्डल उन लाइ पछताउ ज़ाहिरु करे थो। अहिड़ी ज़ाण मिलण ते असांखे ख़ुशी थींदी।

पाठ्यक्रम समिति

पुस्तक : अदबी सुगन्ध (सिंधी साहित्य)

कक्षा – 12

1. **डॉ. कमला गोकलाणी, सेवानिवृत व्याख्याता सिंधी**
   राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

2. **डॉ. परमेश्वरी पमनानी व्याख्याता**
   सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

3. **श्री आतु अहिलयानी, व्याख्याता**
   शहीद अमित भारद्वाज राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
   माणक चौक, जयपुर

4. **डॉ. सविता खुराना, सेवानिवृत**
   राजकीय सिंधी उच्च माध्यमिक विद्यालय, खारीकुंई, अजमेर

5. **लता ठारवानी,** वरिष्ठ अध्यापक
   हरी सुन्दर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,
   आशागंज, अजमेर

ब्र अखर

शागिर्दनि लाइ दरसी किताब पढ़णु, साबित करण, समीक्षा करण ऐं अग्रिते अभ्यास जो आधारु आहे। मोज़ूअ ऐं पढ़ाइण जे तरीके जे लिहाज़ सां स्कूल जे दरसी किताब जो मय्यार तमामु अहम थिए थो। दरसी किताबनि खे कड्डहिं बेजान या महिमा वधाईंदड़ न बणिजणु घुरिजे। दरसी किताबु अज्रु बि पढ़ाइण सिखण जे कम जो हिकु ज़रूरी वाहणु (उपकरण) बणियलु आहे, जंहिंखे असीं दर गुज़र न था करे सघूं। बेशक तइलीम जो मक़र्जु ब्रालकु आहे, मास्तरु खेसि सहूलियत मुय्यसर कराईंदड़ जे रूप में आहे।

गुज़िरियल कुझु सालनि में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान जे पाठ्यक्रम में राजस्थान जी भाषाई ऐं सकाफ़ती (सांस्कृतिक) ख़ूबियुनि जे एवज़ीपणे जी कमी महसूस कई पेई वञे। इनखे नज़र मे रखंदे राज्य सरकार पारां दर्जे 9 खां 12 ताईं जे शागिर्दनि लाइ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान पारां पंहिंजो पाठ्यक्रम लागू करण जो फ़ैसलो कयो वियो आहे। इन मुताबिक बोर्ड पारां तइलीमी साल 2017-18 खां दर्जे 10 ऐं 12 जा दरसी किताब बोर्ड पारां मुकरर पाठ्यक्रम जे आधार ते तियारु कराया विया आहिनि। उम्मेद आहे त ही किताब शागिर्दनि में असुलोके सोच, चिंतन ऐं इज़हार जा मौका मुय्यसर कंदा।

प्रो. बी.एल. चौधरी
अध्यक्ष
माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

मास्तरनि लाइ हिदायतूं

भाषा ज़रीए इन्सानु पंहिंजा वीचार ग़ाल्हाए ऐं लिखी इज़हारे थो। असांजी सिन्धी भाषा दुनिया जे क़दीम ब्रोल्युनि मां हिक आहे, जंहिंमें तमाम घणियूं ख़ूबियूं आहिनि। लफ़्ज़ भण्डार जे ख़्याल खां शाहूकार आहे ऐं बहितरीन अदबी शाहकार मौजूद आहिनि।

तइलीमदान ऐं भाषा विज्ञानी यकराइ कबूल कनि था त ब्रार खे शुरूआती तइलीम मादरी ज़ुबान ज़रीए ड्रिजे, पर असीं भारत जे जुदा-जुदा हंधनि ते पखिड़ियल आहियूं। वक्त सां गड्डु हलंदे-हलंदे सिंधी माध्यम जा स्कूल बंदि थींदा था वञनि। भारत जे जोड़जक में सिंधी ब्रोली तस्लीम कयल आहे। उनखे बचाइण, वधाइण वीझाइण में तइलीम जो अहम योगदान आहे, इनकरे तव्हां सिंधी पढ़ाईंदड़ उस्तादनि जी इहा ब्रिटी ज़िम्मेदारी थी बणिजे त ब्रारनि खे साहित्य जे रूप में सिन्धी पढ़ायो, गड्डोगड्डु ब्रोलीअ ऐं अदब लाइ चाहु बि जाग़ायो। जीअं हू पंहिंजा वीचार ज़ुबानी चाहे लिखियल नमूने सिंधीअ में ज़ाहिरु करे सघनि। सिंधी नसुर ऐं नज़्म जे गूनागून सिंफुनि जी ज्ञाण हासुल कंदे, सिंधी सभ्यता संस्कृतीअ जी ज्ञाण हासुल करण सां गड्डोगड्डु, संत महात्माउनि, देश भग़तनि, शहीदनि ऐं सामाजिक मसइलनि जी ज्ञाण हासुल करे सघनि।

सिंधी भाषा देवनागिरी ऐं सिंधीअ (अरेबिक) में लिखी वञे थी। हीउ किताबु देवनागिरीअ में ई लिखियो वियो आहे, जेका हिंदीअ मिसलि ई आहे। सिंधीअ में ख़ास चार आवाज़ ध्यान सां सेखारण जी ज़रूरत आहे, उन्हनि जो उच्चारणु ऐं लिखणु थोरे अभ्यास सां अची वेंदो। असीं मुंहं मां जेके अखर उच्चारींदा आहियूं उन्हनि में हवा मुख मां ब्राहिर कढिबी आहे, पर हिननि चइनि अखरनि में हवा अंदरि छिकिबी।

जीअं चॾकलेट चूसिबो आहे। उहे अखर आहिनि:-

ड्ड ब्र ग्र ऐं ज्ञ

ड, ब, ग ऐं ज चवण वक्त हवा ब्राहिर कढिबी जड्डहिं त **ड्ड, ब्र, ग्र ऐं ज्ञ** चवण वक्त हवा अन्दर छिकिबी ऐं लिखण वक्त अखर हेठां लीक पाइबी। इहा दिलचस्प रांदि करण सां ब्रार जल्दु सिंधी लिखणु ग्राल्हाइणु सिखी वेंदा।

किताब जे नसुर जे 14 पाठनि में मज़मून, कहाणी, एकांकी, यादिगीरी, जीवनी, मज़मून एं आत्मकथा जो अंशु शामिल कया विया आहिनि, जिनमें, देश भग्रिती, वीरता, सिंधु घाटी सभ्यता जी ज्ञाण, संतनि शहीदनि, अहम शख़्सियतुनि सिंधी संस्कृति सां गड्डु भारतीय संस्कृति जी ज्ञाण पिण ड्रिनी वेई आहे।

नज़्म में गीत, गज़ल, पंजकड़ा, सलोक, तस्वीरूं, बैत ऐं नई कविता सिंफुनि शामिल आहिनि जिनमां आस्तिकता, प्रेम, कला लाइ सम्मान, देश भग्रिती, आशावाद जहिड़ा गुण विस्तार पाईंदा। पाठ जे शुरूआत में रचनाकार जी मुख़्तसर वाक़िफ़यत ऐं रचना बाबत ज्ञाण ड्रिनी वेई आहे ऐं हरहिक पाठ जे आख़रि में नवां लफ़्ज़, हवाला, नंढा सुवाल ऐं वड्डा सुवाल ऐं वहिंवारी कमु ड्रिनो वियो आहे।

ब्रारनि खे वहिंवार में सिन्धी ग्राल्हाइण लाइ हिम्थायो जीअं असीं माउ जे लोल्युनि जी मिठिड़ी सिन्धी ब्रोलीअ जो कर्ज़ु चुकाए सघूं।

डॉ. कमला गोकलाणी
संयोजिका

फ़हिरस्त

नसुर

क्र.सं.	पाठ		लेखक	पेज नं.
1.	गिरनार जो गुलु	लोक कथा	जेठमल परसराम	1
2.	पार्लियामेंट जे अन्दर	आत्म कथा	प्रो. नाराणदास मल्काणी	5
3.	मुहमद राम	कहाणी	कीरत ब्राब्राणी	11
4.	कुदरत सां कुर्ब	मज़्मून	पोपटी हीरानन्दाणी	17
5.	मुंहिंजो तजुर्बो	यादिगरी	ईश्वरी जोतवाणी	20
6.	परी	कहाणी	हरी हिमथाणी	24
7.	ऐं.... अञां.... छो?	कहाणी	नन्दलाल परसरामाणी	32
8.	रोशिनीअ जो सौदागरु	कहाणी	पदम शर्मा	41
9.	साधू टी. एल. वासवाणी	जीवनी	डॉ. दयाल 'आशा'	49
10.	काश	मज़्मून	मनोहर चुघ	56
11.	हिकु ब्रियो विरहाङो	कहाणी	झमूं छुग्राणी	59
12.	सिन्धी शख़्सियतुनि ते निकितल टपाल टिकलियूं	मज़्मून	डॉ. कमला गोकलाणी	65
13.	जज़्बो	एकांकी	डॉ. सुरेश बबलाणी	69
14.	ड्राहरसेन स्मारक, अजमेर	सैरु सफ़र	संपादक मंडल	83
15.	छन्द	छंद	डॉ. सविता खुराना	86

नज़्म

क्र.सं.	कविता जो सिरो		रचनाकार	पेज नं.
1.	लीला चनेसरु	बैत	शाहु अब्दुल लतीफ़	91
2.	मुंदूं मोटी आयूं	बैत	सचलु 'सरमस्त'	94
3.	सामीअ जा सलोक	सलोक	चैनराइ बचोमल 'सामी'	96
4.	ज़िन्दगी	नज़्म	हूंदराज 'दुखायल'	98
5.	देश भगुत जो ख़तु	बैत	प्रो. राम पंजवाणी	101
6.	हलो	ग़ज़ल	परसराम 'ज़िया'	104
7.	वाझाए त ड्रिसु	गीत	हरी 'दिलगीर'	107
8.	तस्वीरूं	हाइकू	नारायण 'श्याम'	109
9.	सिन्धु सागर	नज़्म	गोवर्धन महबूबाणी 'भारती'	111
10.	सिंधु ऐं सिंधी	बैत	कृष्ण 'राही'	115
11.	कलजुगु	गीत	मिर्चूमल सोनी	118
12.	सौदागरु	नज़्म	खीमन यू. मूलानी	121
13.	अखरु जो अघे	ग़ज़ल	लछमण दुबे	123
14.	गड्रिजी घारियूं	कविता	ढोलण 'राही'	125
15.	देश भक्ति ऐं सिन्धी भाषा	पंजकड़ा	कमला गोकलाणी	127

कक्षा : XII

विषयः सिन्धी साहित्य

समय : 3:15 घण्टे **पूर्णांक : 80**

क.सं.	अधिगम क्षेत्र	अंकभार
1.	**अपठित गद्यांश**	**05**
2.	**रचना (निबन्ध, पत्र / प्रार्थना–पत्र)** **10+15=**	**15**
3.	**व्याकरण, मुहावरे, कहावतें**	**05**
4.	**छन्द–दोहे, सोरठो, पंजकड़ा, तस्वीर या हाईकों (परिभाषा उदाहरण)**	**05**
5.	**पाठ्यपुस्तक– गद्य, पद्य, उपन्यास**	**50**

क.सं.	पाठ्यवस्तु	कालांश	अंकभार
1.	**अपठित गद्यांश** (100 से 150 शब्दों में)	10	05
2.	**रचना–**		
(i)	निबन्ध–(200 शब्दों में) किसी एक विषय पर विकल्प सहित	15	10
(ii)	पत्र या प्रार्थना पत्र	10	05
3.	**व्याकरण**–मुहावरें, कहावतें (अर्थ व वाक्य प्रयोग) (सात में कोई पाँच)	10	05
4.	**छन्द**–दोहे, सोरठो, पंजकड़ा, तस्वीर या हाईकों (परिभाषा उदाहरण)	10	05
5.	**पाठ्यपुस्तक**– (गद्य,पद्य संग्रह) शीर्षक– 'अदबी सुगन्ध'		
(i)	गद्य खण्ड–(कहानियां–6, निबन्ध–4, जीवनी–2, एकांकी–1, आत्म–कथा–अंश–1 दर्शनीय स्थल–1)	50	20
(ii)	उपन्यास–अझो–लेखक–हरी मोटवाणी	25	10
	पद्य–खण्ड 15 कविताएँ (कवि को परिचय सहित)	50	20

प्रश्नों का अंक विभाजन :

गद्य खण्ड

1. संसदर्भ व्याख्या– दो में से एक	1X4= 04
2. लघुत्तरात्मक प्रश्न– पाँच में से तीन	3X2= 06
3. निबन्धात्मक प्रश्न– तीन में से दो	2X5= 10
(ii) **उपन्यास**– तीन में से दो प्रश्न	2X5= 10

पद्य खण्ड

1.संसदर्भ व्याख्या– दो में से एक	1X4= 04
2.लघुत्तरात्मक प्रश्न– पाँच में से तीन	3X2= 06
3.कविता का सार/कवि का परिचय	1X5= 05
4. निबन्धात्मक प्रश्न– दो में से एक	1X5= 05

नोटः प्रत्येक लेखक लिखते समय प्रारम्भ में लेखक व कवि का परिचय एवं प्रत्येक अध्याय के पीछे कठिन शब्दों के अर्थ, सम्बन्धित प्रश्न (लघुत्तरात्मक व निबन्धात्मक प्रश्न) व संसदर्भ व्याख्या के उदाहरण दिये जाए। इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है आवश्यक है कि वर्तमान प्रचलित पाठ्यक्रम का लगभग 50% भाग पाठ्यक्रम में समाहित हो। लगभग 25% जानकारी राजस्थान के संदर्भ में एवं लगभग 25% जानकारी भारत के सन्दर्भ में होनी चाहिए।

आवश्यकतानुसार राजस्थान और भारत के वीर एवं महापुरूषों की जीवनियाँ एवं उनके योगदान का उल्लेख भी पाठ्यक्रम में समाहित किया जाना चाहिए।

यथासम्भव कहानियों का चयन करते समय मा. शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित **(सिन्धी साहित्यिक कहाणियूँ 2006)** पुस्तक को आधार माना जाए।

व्याकरण के लिए पुस्तक राजस्थान सिन्धी अकादमी, जयपुर द्वारा प्रकाशित **'सिन्धी व्याकरण'** लेखक गंगाराम ईसराणी प्रस्तावित है।

अदबी सुगंध

(सिन्धी साहित्य)

दर्जो 12

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

अदबी सुगंध

दर्जो 12

दरसी किताबु तियार कंदड़ कमेटी

संयोजिका :

डा. कमला गोकलाणी, उप निदेशक- सिंधु शोधपीठ महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

सम्पादक मंडल :

श्रीमती कान्ता मथराणी, प्रधानाचार्य, सेठ दौलत राम निहालचन्द, राजकीय सिन्धी उच्च माध्यमिक विद्यालय, खारी कुई, अजमेर

डा. सविता खुराना, व्याख्याता-सिन्धी, सेठ दौलत राम निहालचन्द, राजकीय सिन्धी उच्च माध्यमिक विद्यालय, खारी कुई, अजमेर

शुक्रगुज़ारी

सम्पादक मण्डल ऐं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर उन्हनि सभिनी अदीवनि जी शुक्रगुज़ारी मञे थो, जिनजूं अमुल्ह रचनाऊं ऐं वीचार हिन किताब में शामिल कया विया आहिनि।

जेतोणीक हिन किताब में छपियल समूरनि पाठनि/कविताउनि में कापी राईट जो ध्यानु रखियो वियो आहे, तड्हिं बि जेकड्हिं के हिस्सा रहिजी विया हुजनि त हीउ सम्पादक मण्डल उन लाइ पछताउ ज़ाहिरु करे थो। अहिड़ी ज़ाण मिलण ते असांखे ख़ुशी थींदी।

पाठ्यक्रम समिति

पुस्तक : अदबी सुगन्ध (सिंधी साहित्य)

कक्षा – 12

1. **डॉ. कमला गोकलाणी, सेवानिवृत व्याख्याता सिंधी**
   राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

2. **डॉ. परमेश्वरी पमनानी व्याख्याता**
   सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

3. **श्री आतु अहिलयानी, व्याख्याता**
   शहीद अमित भारद्वाज राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
   माणक चौक, जयपुर

4. **डॉ. सविता खुराना, सेवानिवृत**
   राजकीय सिंधी उच्च माध्यमिक विद्यालय, खारीकुंई, अजमेर

5. **लता ठारवानी,** वरिष्ठ अध्यापक
   हरी सुन्दर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,
   आशागंज, अजमेर

ब्र अखर

शागिर्दनि लाइ दरसी किताब पढ़णु, साबित करण, समीक्षा करण ऐं अग्रिते अभ्यास जो आधारु आहे। मोज़ूअ ऐं पढ़ाइण जे तरीके जे लिहाज़ सां स्कूल जे दरसी किताब जो मय्यार तमामु अहम थिए थो। दरसी किताबनि खे कड़हिं बेजान या महिमा वधाईंदड़ न बणिजणु घुरिजे। दरसी किताबु अजु बि पढ़ाइण सिखण जे कम जो हिकु ज़रूरी वाहणु (उपकरण) बणियलु आहे, जंहिंखे असीं दर गुज़र न था करे सघूं। बेशक तइलीम जो मक़र्जु ब्रालकु आहे, मास्तरु खेसि सहूलियत मुय्यसर कराईंदड़ जे रूप में आहे।

गुज़िरियल कुझु सालनि में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान जे पाठ्यक्रम में राजस्थान जी भाषाई ऐं सकाफ़ती (सांस्कृतिक) ख़ूबियुनि जे एवज़ीपणे जी कमी महसूस कई पेई वञे। इनखे नज़र मे रखंदे राज्य सरकार पारां दर्जे 9 खां 12 ताईं जे शागिर्दनि लाइ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान पारां पंहिंजो पाठ्यक्रम लागू करण जो फ़ैसलो कयो वियो आहे। इन मुताबिक बोर्ड पारां तइलीमी साल 2017-18 खां दर्जे 10 ऐं 12 जा दरसी किताब बोर्ड पारां मुकरर पाठ्यक्रम जे आधार ते तियारु कराया विया आहिनि। उम्मेद आहे त ही किताब शागिर्दनि में असुलोके सोच, चिंतन ऐं इज़हार जा मौका मुय्यसर कंदा।

प्रो. बी.एल. चौधरी
अध्यक्ष
माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

मास्तरनि लाइ हिदायतूं

भाषा ज़रीए इन्सानु पंहिंजा वीचार ग़ाल्हाए ऐं लिखी इज़हारे थो। असांजी सिन्धी भाषा दुनिया जे क़दीम ब्रोल्युनि मां हिक आहे, जंहिंमें तमाम घणियूं ख़ूबियूं आहिनि। लफ़्ज़ भण्डार जे ख़्याल खां शाहूकार आहे ऐं बहितरीन अदबी शाहकार मौजूद आहिनि।

तइलीमदान ऐं भाषा विज्ञानी यकराइ कबूल कनि था त ब्रार खे शुरूआती तइलीम मादरी ज़ुबान ज़रीए ड्रिजे, पर असीं भारत जे जुदा-जुदा हंधनि ते पखिड़ियल आहियूं। वक्त सां गड्डु हलंदे-हलंदे सिंधी माध्यम जा स्कूल बंदि थींदा था वञनि। भारत जे जोड़जक में सिंधी ब्रोली तस्लीम कयल आहे। उनखे बचाइण, वधाइण वीझाइण में तइलीम जो अहम योगदान आहे, इनकरे तव्हां सिंधी पढ़ाईंदड़ उस्तादनि जी इहा ब्रिटी ज़िम्मेदारी थी बणिजे त ब्रारनि खे साहित्य जे रूप में सिन्धी पढ़ायो, गड्रोगड्डु ब्रोलीअ ऐं अदब लाइ चाहु बि जाग़ायो। जीअं हू पंहिंजा वीचार ज़ुबानी चाहे लिखियल नमूने सिंधीअ में ज़ाहिरु करे सघनि। सिंधी नसुर ऐं नज़्म जे गूनागून सिंफुनि जी ज़ाण हासुल कंदे, सिंधी सभ्यता संस्कृतीअ जी ज़ाण हासुल करण सां गड्रोगड्डु, संत महात्माउनि, देश भग़तनि, शहीदनि ऐं सामाजिक मसइलनि जी ज़ाण हासुल करे सघनि।

सिंधी भाषा देवनागिरी ऐं सिंधीअ (अरेबिक) में लिखी वञे थी। हीउ किताबु देवनागिरीअ में ई लिखियो वियो आहे, जेका हिंदीअ मिसलि ई आहे। सिंधीअ में ख़ास चार आवाज़ ध्यान सां सेखारण जी ज़रूरत आहे, उन्हनि जो उच्चारणु ऐं लिखणु थोरे अभ्यास सां अची वेंदो। असीं मुंहं मां जेके अखर उच्चारींदा आहियूं उन्हनि में हवा मुख मां ब्राहिर कढिबी आहे, पर हिननि चइनि अखरनि में हवा अंदरि छिकिबी।

जीअं चॾकलेट चूसिबो आहे। उहे अखर आहिनि:-

ड्ड ब्र ग्र ऐं ज्ञ

ड, ब, ग ऐं ज चवण वक्त हवा ब्राहिर कढिबी जड्डहिं त **ड्ड, ब्र, ग्र ऐं ज्ञ** चवण वक्त हवा अन्दर छिकिबी ऐं लिखण वक्त अखर हेठां लीक पाइबी। इहा दिलचस्प रांदि करण सां ब्रार जल्दु सिंधी लिखणु ग्राल्हाइणु सिखी वेंदा।

किताब जे नसुर जे 14 पाठनि में मज़मून, कहाणी, एकांकी, यादिगीरी, जीवनी, मज़मून एं आत्मकथा जो अंशु शामिल कया विया आहिनि, जिनमें, देश भग्रिती, वीरता, सिंधु घाटी सभ्यता जी ज्ञाण, संतनि शहीदनि, अहम शख़्सियतुनि सिंधी संस्कृति सां गड्डु भारतीय संस्कृति जी ज्ञाण पिण ड्रिनी वेई आहे।

नज़्म में गीत, गज़ल, पंजकड़ा, सलोक, तस्वीरूं, बैत ऐं नई कविता सिंफुनि शामिल आहिनि जिनमां आस्तिकता, प्रेम, कला लाइ सम्मान, देश भग्रिती, आशावाद जहिड़ा गुण विस्तार पाईंदा। पाठ जे शुरूआत में रचनाकार जी मुख़्तसर वाक्फ़यत ऐं रचना बाबत ज्ञाण ड्रिनी वेई आहे ऐं हरहिक पाठ जे आख़रि में नवां लफ़्ज़, हवाला, नंढा सुवाल ऐं वड्डा सुवाल ऐं वहिंवारी कमु ड्रिनो वियो आहे।

ब्रारनि खे वहिंवार में सिन्धी ग्राल्हाइण लाइ हिम्थायो जीअं असीं माउ जे लोल्युनि जी मिठिड़ी सिन्धी ब्रोलीअ जो कर्ज़ु चुकाए सघूं।

डॉ. कमला गोकलाणी
संयोजिका

फ़हिरस्त

नसुर

क्र.सं.	पाठ		लेखक	पेज नं.
1.	गिरनार जो गुलु	लोक कथा	जेठमल परसराम	9
2.	पार्लियामेंट जे अन्दर	आत्म कथा	प्रो. नाराणदास मल्काणी	13
3.	मुहमद राम	कहाणी	कीरत ब्राब्राणी	19
4.	कुदरत सां कुर्ब	मज़्मून	पोपटी हीरानन्दाणी	25
5.	मुंहिंजो तजुर्बो	यादिगरी	ईश्वरी जोतवाणी	28
6.	परी	कहाणी	हरी हिमथाणी	32
7.	ऐं.... अञां.... छो?	कहाणी	नन्दलाल परसरामाणी	40
8.	रोशिनीअ जो सौदागरु	कहाणी	पदम शर्मा	49
9.	साधू टी. एल. वासवाणी	जीवनी	डॉ. दयाल 'आशा'	57
10.	काश	मज़्मून	मनोहर चुघ	64
11.	हिकु ब्रियो विरहाङो	कहाणी	झमूं छुग्राणी	67
12.	सिन्धी शख़्सियतुनि ते निकितल टपाल टिकलियूं	मज़्मून	डॉ. कमला गोकलाणी	73
13.	जज़्बो	एकांकी	डॉ. सुरेश बबलाणी	77
14.	ड्राहरसेन स्मारक, अजमेर	सैरु सफ़र	संपादक मंडल	91
15.	छन्द	छंद	डॉ. सविता खुराना	94

नज़्म

क्र.सं.	कविता जो सिरो		रचनाकार	पेज नं.
1.	लीला चनेसरु	बैत	शाहु अब्दुल लतीफ़	99
2.	मुंदूं मोटी आयूं	बैत	सचलु 'सरमस्त'	102
3.	सामीअ जा सलोक	सलोक	चैनराइ बचोमल 'सामी'	104
4.	ज़िन्दगी	नज़्म	हूंदराज 'दुखायल'	106
5.	देश भगत जो ख़तु	बैत	प्रो. राम पंजवाणी	109
6.	हलो	ग़ज़ल	परसराम 'ज़िया'	112
7.	वाझाए त ड्रिसु	गीत	हरी 'दिलगीर'	116
8.	तस्वीरूं	हाइकू	नारायण 'श्याम'	117
9.	सिन्धु सागर	नज़्म	गोवर्धन महबूबाणी 'भारती'	119
10.	सिंधु ऐं सिंधी	बैत	कृष्ण 'राही'	123
11.	कलजुग	गीत	मिर्चूमल सोनी	126
12.	सौदागरु	नज़्म	खीमन यू. मूलानी	129
13.	अखरु जो अघे	ग़ज़ल	लछमण दुबे	131
14.	गड्रिजी घारियूं	कविता	ढोलण 'राही'	133
15.	देश भक्ति ऐं सिन्धी भाषा	पंजकड़ा	कमला गोकलाणी	135

(1)

गिरनार जो गुलु

– जेठमल परसराम गुलराजाणी

(1886-1948)

लेखक परिचयः-

जेठमल परसराम सिन्धु जे नसुर नवीसनि में अवलि जगुहि थो वालारे। संदसि तकरीर ख़्वाहि लिखण जो ढंगु बेशक असराइतो हो। जेठमल जे नसुर में रवानी आहे, शइर वारी लरज़िश ऐं उमंगु अथसि। हिन जा मुख्य किताब आहिनि- सचल 'सरमस्तु', शाह जूं आखाणियूं, 'इमरसन जा मज़मून', 'पूरब जोती'। पोएं किताब में नाविल जे रूप में गौत्तम बुद्ध जी जीवनी ड्रिनी अथसि। किताब पढ़ण वटां आहे। हिन में थियासाफ़ी ऐं सूफ़ी मतनि जो मेल आहे।

हिन पाठ में राग़ ते सिरु घोरीदड़ राजा राइ ड्रियाच जी लोक कथा जो बयानु आहे।

राइ ड्रियाच, जंहिंखे राइ खंगार बि चवन्दा हुआ, सो गिरनार जो राजा हो। संदसि माउ जो नालो रवरी हो। राजा जी राणीअ जो नालो हो सोरठ, जंहिंखे मायूं, दायूं, ब्रायूं घणियूं हुयूं। राजा वटि माल जी कमी कान हुई। राजा जहिड़ो ड्रातारु ब्रियो कोन थियो। हातिमताई सख़ावत में हिन खां सरसु कीन हो। हथु मुड़िस जो कड्रहिं ख़ाली न हो। तंहिं हूंदे बि जहिड़े तहिड़े साधूअ जे वरि चढ़ण वारो कीन हो। पर रंदनि ऐं आरफ़न जो ग़ोल्हाऊ हो। इएं चइजे त पंहिंजी जीवति में राज़ रूहानीअ जो तालिबु हो। अहिड़ा साईं लोक राजा जनक वांगुरु दुनिया में रही, दुनिया खां दूर था रहनि। महिलनि में रहन्दे बि नितु दिलि जी कुटिया में था घारीनि।

कंहिं ड्रींहुं हिन राजा जे झूनागढ़ शहर में हिकु अजीब अताई आयो। वेस जोगीअ जो होसि। शिकिल शाहाणी हुअसि। सुहिणो वणन्दड़ जुवान हो, मगरि अखियुनि में तेज ऐं मन करे विरह जो ख़ावन्द हो। हिकु साज़ु हथ में होसि, जंहिंखे चंगु थे चयाऊं।

जोग्रीअ ब्रीजल जे चंग में को राग़ जो राज़ रखियल हो, उहो वाजो विलाइती राज़ वारो साज़ हो, जंहिं मां आवाज़ अहिड़ो निकिरन्दो हो जो बुधी झंगल जा मिरूं बि शोख़ी छड्डे रिहाणियूं रंग कन्दा हुआ। अहिड़ो त हो ब्रीजल राग़ाई ! सो मङणहार ड्राढा पंध करे राइ ड्रियाच ड्रातार जी ड्रेढीअ वटि पहुतो।

दर वटि दरबानी बीठा हुआ, छड़ीदार पिण खड़ा हुआ। हुन अजीब अताईअ सभिनी ते छाया विझी छड्डी ऐं ड्राढे मेठाज सां चयाई, ''दरबानी, दरवाज़ो खोल, आंऊं परदेसी मङणो।'' दरबानीअ जी छा मजाल, जो अहिड़े मिठे आवाज़ ते दरु न खोले। चारणु अची ड्रेढीअ अन्दर सहिड़ियो। राजा मथे माड़ीअ ते हो। जाजिक हथु बीन ते हलायो। अहिड़ो को मधुर आवाज़ ''सालिब साज़ सराद सीं, की जो कमायो।'' जो सुणी रूंअ रूंअ राग़ ते उथी खड़ो थियो घोट।

सोरठि - राइ ड्रियाचु

हेठि निहारियाईं त ड्रिठाईं सुहिणो अताई ज़मीन ते बीठो आहे। राजा हुकुम कयो त हिन मङणे, जंहिं मुंहिंजे दिल में दर्द जा दरियाह खोले छड्डिया आहिनि, तंहिंखे मुंहिंजे रंग महल में बिनह अन्दरि वठी अचो। हुकुम जा बन्दा हेठि लही आया ऐं सुहिणो चारण राजा खे मिलियो। राजा चयुसि,

''ए चारण! बुधाइ त सहीं त तुंहिंजे चंग में छा आहे, जंहिं मुंहिंजो मन उथारे फिटो कयो आहे?'' आउ निच आएं जीउ आएं, हाणे वरी महिरबान, ''चोरे चंग चइजि की।'' पोइ त राजा रागाईअ सां ग़ाल्हियूं कयूं। रागाई बि इसरारी हो, तंहिं राजा खे चयो त ''ए राजा, अञां त मूं तोखे सुर फ़कति को ब्राहिरियों बुधायो, अञा त मुंहिंजे सुर ऐं आलाप में के रिहाणियूं आहिनि। आंऊं तोखे उहो इसरारी आलाप त बुधायां, पर बुधाइ त मूंखे ड्रीन्दें छा?''

राजा जे हुकुम ते ब्रीजल वास्ते ख़ूब ख़ज़ाना खुली विया। घोड़ा हाथी बि वठी आया। तड्हिं ब्रीजल इश्क जूं अखियूं खणी चयो, ''सुण रे राइ ड्रियाच, तो भांयो हो त आंऊं अहिड़ो पेनू आहियां, जो नाणे लाइ थो तन्दु हणां। ए राजा! दिलि में त सुझेई थो त आंऊं कहिड़ीअ मङ लाइ तो वटि आयो आहियां, पर कनु ड्रीं त बुधायांइ।''

राजा वटि उन वक्त दरब़ार अची लगी हुई। पर्दे अन्दर राणियूं, दायूं, मायूं, ब्रान्हियूं हुयूं, तिनि वेठे रंगु ड्रिठो। ब्राहिरि वज़ीर अमीर, उमरा, आकिल, अकाबर वेठा हुआ, तिनि बि पिए हीअ हैरत ड्रिठी त हीउ कहिड़ो मङणो आयो आहे ऐं कहिड़ियूं राज़ जूं ग़ाल्हियूं थो राइ सां करे। इहा गुझी ग़ाल्हि राइ ड्रियाच समुझी वरिती, तड्हिं ब्रीजल जे पेरनि ते किरी पियो ऐं चयाईं त ''ए ब्रीजल, तुंहिंजो कदमु कदमु न पाड़ियां, हाण भली खुलियो चउ।'' तड्हिं ब्रीजल चयो त ''आंऊं सिर सुवाली मङणो, परड्हेां पंधु करे तो वटि आयुसि, सो सिर जूं सदाऊं करण लाइ न कंहिं ब्रिए माल लाइ। इन्हीअ करे ई तो दरि आयसि, जीअं तो नांह न सिखियो।''

ब्रीजल जा हीउ ब्रोल बुधी राणी सोरठ वाइड़ी थी वेई ऐं चयाईं, ''ए ब्रीजल, मुंहिंजे वर जो सिरु कीअं थो खणीं? सुहागिण खे ड्रुहागिण कीअं थो करीं?'' पर ब्रीजल चवे त आंऊं वठन्दुसि त सिरु, सिर खां सवाइ ब्री सुलह कान थीन्दी।

होड्हांहुं सोरठ, राणियुनि, वज़ीरनि जो इहो दर्दमन्द हाल, त होड्हांहुं राइ ड्रियाच त कंहिं ब्रिए हाल में दाख़िल हो, तंहिंजे दिलि में ज़रे जो डपु कोन उथियो। चवण लगो त

''सिसियूं सौ हुजनि त लाहे हूंद ड्रियां,
पर धड़ मथे सिरु हेकिड़ो, जो ड्रींदे लज़ मरां।
सिर त आहे सट में, घुरु ब्रियो की मङिणा दान।''

अहिड़ी दरियाह दिली, बेख़ुदी राजा जी ड्रिसी ब्रीजल ड्राढो ख़ुश थियो। हिन विलाइती वाज़ो हथ में खंयो, जो वाज़ो बिरह जो कीनरो हो। हिनजे हथ लगण सां कीनरो किंझण लगो। अहिड़ी त का तन्दु पारस हंई, जो सुलतान खे ज़ाहिरु थियो सभु ज़ाती। पोइ कढन्दे काती, विधाईं कर्ट कपार में।

सोरठ जे अगियां राजा जो रतु वही निकितो ऐं धड़ु वञी पट ते पियो ऐं मथो वञी खट ते पियो। राणियुनि में राड़ो थियो। सोरठ सरतियुनि खे चवे, ''मुठियसि मङणहारा।''

सारे गिरनार में ग़लगलो मची वियो। गिरनार जो घोट गुज़र करे वियो। गिरनार जे चमन मां गिरनारी गुल छिज़ी वियो। आख़रि सोरठ राइ डियाच जो विछोड़ो सही न सघी ऐं साणुसि गड़ु साग़ी चिख्या ते चढ़ी अग्नीअ में सड़ी वेई।

नवां लफ़्ज़ :

डातार = डियण वारो। **सख़ावत** = दानवीर। **सरसु** = वधीक सुठो।
अताई = मङणहार। **विरह** = जुदाई। **मिरुं** = जानवर।
राग़ाई = ग़ाईंदड़। **डेढीअ** = चौखट, चांउठि । **इसरारी** = गुझ।
पेनूं = पेनाक, पिन्दड़। **परडेहा** = परदेस । **ग़लगलो** = ब्राएताल ।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो:-

(1) सारे गिरनार में ग़लगलो छो मची वियो? कारण समेति बयानु करियो।

(2) राजा राइ डियाच संगीत जो प्रेमी हो। संदसि संगीत प्रेम खे पंहिंजनि लफ़्ज़नि में बयानु करियो।

(3) राजा राइ डियाच जी जीवनी पंहिंजनि लफ़्ज़नि में लिखो।

सुवालः II. हेठियां हवाला समुझायो:-

(1) ''सिसियूं सौ हुजनि त लाहे हूंद डियां, पर धड़ मथे सिरु हेकिड़ो, जो डींदे लज़ मरां। सिर त आहे सट में, घुरु ब्रियो की मडिणा दान।''

(2) ''ए चारण! बुधाइ त सहीं त तुंहिंजे चंग में छा आहे, जंहिं मुंहिंजो मन उथारे फिटो कयो आहे?''

●●

(2)

पार्लियामेंट जे अन्दर

– प्रो. नाराणदास मल्काणी
(1890-1974)

लेखक परिचय:-

नारायणदास मल्काणीअ जो जनमु हैदराबाद सिन्धु में अगस्त 1890 में दीवान रतनलाल जे घर में थियो हो। हीउ साहिब सघारो लेखक, स्वतंत्रता सेनानी, देशभक्त ऐं समाज सेवी हो। हिन वकालत जे बदिरां प्रोफेसर बणजण कबूल कयो। गुजरात विद्यापीठ में पिण प्रोफेसर रहियो। संदसि लिखियल मुख्य किताब आहिनि- अनारदाना, ग्रोठाणी चहर, कश्मीर जो सैर ऐं बेहद असराइती आत्म कथा निराली ज़िन्दगी वग़ैरह छपिजी चुका आहिनि। राज्य सभा जा मेम्बर रही चुका आहिनि। हिननि जे हासिलात ऐं शख़्सियत ते असांखे नाज़ आहे।

हिन बाब में पार्लियामेंट में रहेंदें लेखक पंहिंजे आज़मूदनि जो आत्म कथा जे रूप में बयानु कयो आहे।

राजस्थान में जड्डहिं मुंहिंजी नौकरी पूरी थी, ऐं चड़ो जो पूरे वक्त ते ख़तमु थी, तड्डहिं अप्रेल में मां दहलीअ वञी पंडित जवाहरलाल नेहरूअ सां गड्डियुसि। ख़बरचार वरताईं ऐं पोइ चयोमांस त मूंखे को मुंहिंजे लाइकु कमु डे।

उन्हनि डींहंनि में गवर्नर जी सालियानी कांफ्रेस राष्ट्रपति भवन में थिए थी श्री जैरामदास आसाम जो गवर्नर बि उते लथलु हो। पुराणो ऐं वेझो साथी हो ऐं दहलीअ में केतिरा भेरा अगु गड्डिया हुआसीं, साणुसि गड्डिजण त सुभावीक हो। श्री शेवकराम कर्मचन्द ऐं आंउ ब्रई गड्डिजी हिन वटि वियासीं। चांहिं

वेठे पीतीसीं ऐं हालु अहवालु वरितोसीं। ग़ाल्हियुनि कंदे शेवकराम खिली चयुसि त राज्य सभा में ब़ारहां ज़ुणा नामीनेट कया वेन्दा, छोन तव्हीं मल्काणी जो नालो सिन्ध जे पारां ड॒सियो। मूंखे बि अजबु लग़ो, पर ग़ाल्हि वणी। पर जैरामदास खे बि ग़ाल्हि पसंदि पेई ऐं चयाईं त मां ज़रूर कोशशि कंदुसि। नेहरूअ सां ऐं ख़ास करे राजेन्द्र बाबूअ सां चङो रस्तो होसि। नेहरू सां मां जड॒हिं गड्डियो होसि त बि इहा ग़ाल्हि साणुसि थी त छोन को सिन्धु मां बि नालो ड॒सियो वञे। मूं पहिरियाईं कुमारी ज़ेठी सिपाहीमलाणीअ जो नालो ड्डिनो। जड॒हिं न बासियाईं त भाई प्रताप जो, जंहिं सिन्धियुनि जे वसण लाइ हिकु शहरु (गांधीधाम) अड्डियो हो, तंहिंजो नालो बि ड॒सियुमि। पर ड्डिठुमि त ब़ई नाला न आउड़ियसि, तड॒हिं बस कयमि। (कुमारी ज़ेठी त पोइ बम्बई कांउसिल जी मेम्बर ऐं डिप्टी चैयरमैन बणी) सो मां जैरामदास सां गड्डिजी पोइ वरी जयपुर मोटियुसि ऐं हिन मूं बाबत पूरी कोशशि कई, जा साब पेई। वक्तु आयो तड॒हिं मुंहिंजो नालो बि ब़ारहनि ज़ुणनि में शायइ कयो वियो। तड॒हिं ख़ुदि जैरामदास मूंखे हिकु ख़तु लिखियो:

राजभवन, शिलांग
3 अप्रेल 1952

प्यारा मल्काणी,

मुंहिंजूं दिली वाधायूं। मूंखे बि घणी उम्मेद हुई त तूं थापियो वेंदें। मूं ब़िन्ही ज़ुणनि खे पारत कई हुई ऐं तो बाबत ख़बरचार ड्डिनी हुअमि, जीअं ठीक फ़ैसिलो करे सघनि। ताज़ो वटांउनि हिकु ख़तु आयुमि। जंहिं मां समुझियुमि त मिड़योई ख़ैर थींदो.....

जैरामदास

मूंखे ब़ई सुञाणंदा हुआ ऐं ख़ास करे नेहरू खे मूं लाइ कदुर हो। पर को खपंदो हो जो ग़ाल्हि खे वठाए ऐं नालो ड॒से। जैरामदास नालो ड॒सियो ऐं संदसि राइ बि वज़न वारी हुई। के माण्हू नाराज़ थिया हुआ जो सिन्धियुनि खे वसाइण महल जैरामदास सिन्धु छड्डे गवर्नर बणिजी वियो। पर उन्हनि जी दृष्टि संकुचित हुई। हिकु सिन्धी अहिड़े वड्डे ओहिदे ते त ज़रूर खपे जो वक्ते सिन्धियुनि जी घुरिबल शेवा करे सघे। मां संदसि थोराइतो आहियां पर मूं जहिड़ा ब़िया बि केतिरा आहिनि जो संदसि शुकुर मञींदा।

पार्लियामेंट में अचण सां मुंहिंजी रहिणी करिणीअ जो नमूनो ब़ियो थी पियो। नार्थ एवेन्यू में रहियुसि जिते मेम्बरनि लाइ ब़ सौ खां मथे फ्लैट्स आहिनि। हिक हिक फ्लैट में ब़ कमरा पर नएं उम्दे सामान सां झिंझियल। मां त पट ते विहण ऐं सन्दल ते सुम्हण ते हिरियलु होसि। पर सिन्धी थी करे बि हिननि सां एतिरे में हिरी वियुसि। मेम्बरनि में पंज सैकड़ो मस हिरियल हुआ, हिकु ब़ सेकड़ो मस सामानु सरो संभाले सुम्हिया। असांखे ज़ुणु ज़ोरीअ विलाइती नमूने रहणु सेखारियो वियो।

राज्य सभा में विहंदो होसि त गदियुनि वारा विहण लाइ सोफ़ा ऐं सभा जो हालु एयर कंडीशंड सो वेठे निन्ड खंयो वञे। शाही हालु, ऊन्ही छत, आलीशान कमानियूं ऐं रोबदारु चैयरमैन जी कुर्सी, भांइ त अहिड़े शानदार हंधि भुणिको कढणु बि नाशानाइतो थींदो। हिन नन्ढड़े नगर अन्दर सभु सुख-पोस्ट ऐं तार आफिस, नन्ढी अस्पताल, वड्डी कैंटीन, तंहिं में वड्डी लाइब्रेरी ऐं तेहां वड्डो सेन्ट्रल हालु। सभु कुछ शाही, ऑलीशान ऐं भभकेदारु। जुणु त मां हिति कंहिं भुल मां घिड़ी आयो होसि।

रोज़ानी बैठक सुवालनि जवाबनि सां शुरू थींदी हुई। उन्हीअ कलाक में सवनि मेम्बरनि सां हालु भरियो पियो हूंदो आहे। कएं अजाया पर के सजाया सुवाल बि पुछिया वेन्दा आहिनि ऐं सुवालनि मंझां उथंदड़ ब्रिया सुवाल बि पुछंदा आहिनि। के मेम्बर सुवाल उथारण में काबिल थियनि था पर घणो करे मुख़ालिफ़त धुरियुनि वारा। पर उन्हीअ कलाक अन्दर वज़ीरनि जी सची परख थींदी आहे। अक्सर त अध जवाबी, दब्रियल जवाब में नाजवाब ड्रींदा आहिनि। पर सुवाल जवाब में कड्डहिं छिकताण थींदी आहे ऐं गर्मी चढ़ंदी हुई त असांजो चेयरमैन डॉ. राधाकृष्णन् विच में पई को चर्चो कंदो हो, जो ब्रिन्हीं धुरियुनि खे खिलाए थधो कंदो हो। मूं ड्रिठो त उन्हीअ कलाक में वारे मूजिबि जवाहरलाल ज़रूर हाज़ुर हूंदो हो, पर वक्ते उथी उन्हे खे वठाईंदो हो। वधीक ज्ञाणू हो सो जवाबु ख़ातरि ख़्वाह, बल्कि कड्डहिं कंहिं तिखे सुवाल खे हाज़ुर जवाब बि ड्रींदो हो। जवाबु ड्रियण खां अगु मन में जवाब सोचे पोइ उथंदो हो। तुर्त जवाब जी पलिथे बाज़ी विन्दुराईंदड़ हूंदी हुई।

पर सदन में बिलनि ते बहस हलंदा हुआ त जुणु हालु ख़ाली थियण लगंदो हो। सभ कंहिंखे ग्राल्हाइण जी सर सर थींदी हुई ऐं वक्तु पूरे थियण ते हरिको मिन्थ कंदो हो त सर बाकी हिकु मिन्ट, सर बाकी हिक मुख्य ग्राल्हि.... तां जो भांइ त ज़ोरीअ खेसि विहारणो पवंदो हो। पोइ विहंदो बि कीन हो पर ब्राहिर लाबीअ में वञी गप शप कंदो हो। बुधिणो या सिखिणो कीन हो, पर बुधाइणो ऐं सेखारणो होसि। ब्राहिरां अक्सर को बि बुधण जी न कन्दो हो त उहो ''मेम्बर'' समुझिबो हो। बुधण जो कमु ऐं वर वर ड्रेई साग़ी ग्राल्हि बुधण पोइ बि उब्रासी न ड्रियण सो सिर्फ़ स्पीकर जो कमु हो ऐं ड्राढो अणवंदड़ कमु हूंदो हो। दर हकीकत खेसि ''लिसनर'' चवण खपे ऐं न स्पीकर। असांजो चैयरमैन त सुवालनि जे किलासनि बैदि हालु छड्डे उथी वेन्दो हो।

पर के कानून ख़ास कामेटियुनि जे वीचार लाइ मोकलिबा हुआ। उन्हनि जो मेम्बर थियण लाइ मेम्बर आझरंदा हुआ। छो जो कमाइण या दौरो लग्राइण जो वझु मिलंदो हो। पर कामेटियुनि में हिक हिक फ़िकरे, सिट ऐं लफ़्ज़ ते वीचार सां बहस हलंदा हुआ। हरकंहिं खे कुछु न कुछु चवण जो वझु मिलंदो हो ऐं विरोधी दलनि जा मेम्बर बि चङी दिलचस्पी वठंदा हुआ। मंत्री महोदय बि जे सुधारा संदनि में शायदि न कबूल करे से कामेटी में कबूल कन्दो आहे। अहिड़ियूं कामेटियूं जेकर घणियूं वधीक थियनि त हरकंहिं मेम्बर खे ग्राल्हाइण जो वझु मिले ऐं कानून जो अभ्यासु वधीक गंभीर थिए। रुग्रो कानून पास करण लाइ सदन में कार्यवाही थियण खपे।

पर पार्लियामेंट में हरकंहिं विषय ते बहस हलनि था जे बिल्कुल दिलचस्प थियनि था, हरकंहिं मुल्क बाबत कुछ समाचार मिले थो। देश जे पेचीदनि मसइलनि ते गर्मा गर्म राया बुधिजनि था। पोइ ज़ाती, मकानी ऐं शख़्सी सुवाल बिल्कुल हल्का पिया नज़र अचनि ऐं मेम्बर पाण खे न रुगो हिन्दुस्तान पर दुनिया जो नगरवासी पियो समुझे। मूं बि कएं विषयनि में थोरो घणो बहिरो वरितो पर ख़ूब लिखियुमि ऐं घर में वीहारो खनु फ़ाईल ठाहियमि जिन में काराइता काग़ज़ सांढे रखियमि। कड्हिं त परदेसी मुल्कनि जा बुज़ुर्ग हाकिम, मशहूर माण्हू ईन्दा हुआ ऐं सेन्ट्रल हाल में संदनि मरहबा डॉ. राधाकृष्णन् कंदो हो। तंहिं मां को ख़ासु कीन सिखिबो हो, पर हौसलो ऐं शानु वधंदो हो। ज़ुणु त हिकु अधु इंचु वड्डेरो थियुसि। तंहिं वायू मंडल, सो वझु हाणे कोन्हे। अरमानु जो हिन वक्त पार्लियामेंट में रही करे बि असीं नंढिड़ीअ दुनिया में डेड्डर वांगुरु नन्ढड़े खूह में पिया ग़ोता मारियूं। असांजो ज़मानो नेहरू ऐं डॉ. राधाकृष्णन् जो हो, जड्हिं पार्लियामेंट जो अज़ीम-अल-शानु हो।

पर पार्लियामेंट जो सचो रंगु इहो रहंदो हो त संदसि मेम्बरनि जो हूंदो। उहो रंगु यक रंगु न पर बहुरंगी ऐं आंउ कांग्रेस पार्टीअ जो मेम्बर होसि। माहियानो चालीह रुपया बरवक्त भरींदो होसि, ऐं हर हफ़्ते या ब्रिए हफ़्ते पार्टी जा सेन्ट्रल हॉल में चांहिं जी प्याली पीअंदे मीटिंग थींदी हुई। भांइ त माहियानो चंदो ख़ासु उन्हनि मीटिंगुनि लाइ ड्डींदो होसि। नेहरू पार्टीअ जो लीडर थी करे हाज़ुर हूंदो हो, पर पार्टीअ जे रंग में न वज़ीर-ए-आज़म जे रोब में। साथियुनि में मुख्य साथी हूंदो। चाहिं बि पीअंदो, ब्रीड़ी बि छिकींदो ऐं कुर्सीअ खे आरामु कुर्सी बणाए लेटी विहंदो हो। पोइ ब्र अखर सलाह जा, ब्र अखर समुझाइण जा, ब्र अखर चर्चे जा ऐं ज़रूरत थी त ब्र अखर ताब तंके जा बि चवंदो हो, पर जीअं को बुज़ुर्ग हमराहु ऐं साथी चवे। कड्हिं पार्टीअ अन्दरि दिल जो दरवाज़ो खोले के सूर न सलींदो हो। कड्हिं दुनिया जे कंहिं गश्त तां मोटंदो हो त दुनिया ते नज़र डोड़ाईंदो हो, सो फ़ख़ुर सां बुधाईंदो हो त असांजो कदूमात वधाईंदो हो। से मीटिगूं न हुयूं पर दिलियूं खोलण ऐं गर्म करण जा ओराणा हुआ। उन्हनि खां सवाइ आउं हाणे बेचैन आहियां। पार्टीअ जा मेम्बर बि दिल खोले पाण में ग्राल्हियूं कन्दा हुआ, जिनजी पार्लियामेंट में हूंद ब्रिर्क बि ब्राहिर न निकिरे। वज़ीर बि किनि लाइ संदनि ड्रोरापा ऐं महिणा सहिणा पवंदा हुआ। सभिनी जो अन्दरु थधो थींदो हो ऐं सभिनी जी गर्मी पार्लियामेंट जे मुख़तलफ़ धुरियुनि लाइ सांढे रखी वेन्दी हुई।

पर मेम्बर घणो वक्तु सेन्ट्रल हाल में चांहिं काफी पीअंदे ऐं कुछ खाईंदे काटींदा आहिनि। हरिको पंहिंजी यारी भारी ठाहे विहंदो आहे ऐं हिक मां ब्रीअ में ऐं टींअ ड्डे वेन्दो आहे। उन्हीअ वक्त सभु पिया खाईनि ऐं खिलनि ऐं सभु पिया हिक ब्रिए खे वणनि। उन्हनि टोलियुनि में हिक ब्रिए सां लग् लाग्रापा ठाहींदा आहिनि। के साज़िश हूंदे बि हाल में मिठीअ तरह ऐं इशारनि सां ठही वेन्दा, ब्रियो त संदनि में जेकी वहे वापरे थो तंहिंजो असरु कहिड़ो सो हाल में ई पधिरो थिए थो। ड्डींको सदन में वज्रे ऐं पराड्डो हाल में ब्रधिजे। अख़बारुनि वारा सज़ो ड्डींहुं हाल में पिया फिरन्दा ऐं नूसींदा

आहिनि तां जो का चीदी ख़बर कंहिं वटां झटीनि। इहो हालु रुग़ो मिलण जो हालु न आहे, पर मालिक जे नब्ज़ तपासण जो बि आहे।

पर हरिको मेम्बर हिक शख़्सियत बि रखे थो। अक्सर सुबुह जो देर सां उथंदो छो जो देर सां सुम्हनि था। उथण सां रोज़ानियूं अख़बारूं पढ़ंदा-हिक ब्र.... टे अख़बारूं पढ़ण हिननि लाइ ज़रूरी आहिनि। शायदि उन्हनि में कुछ संदनि बाबत या साथियुनि बाबत या पार्टी वग़ैरह बाबत हूंदो। अख़बारूं बि ज़ुणु सियासी ई आहिनि ऐं सियासतदाननि जे कमनि करतूतनि बाबति आहिनि। हरिको मेम्बर मन में चवंदो त अख़बारुनि में कंहिं बि तरह मुंहिंजो नालो पवे न त मेम्बर छा लाइ थियुसि ऐं अख़बारूं बि सभ खां वधीक सियातदाननि लाइ लिखियूं वञनि थियूं। अज़ु काल्ह सियासत खे अहमु थो समुझियो वञे। पर केतिरनि मेम्बरनि जे फ्लैट्स में पार्लियामेंट जा रोज़ाना काग़ज़ ढिग़ थिया रखिया हूंदा आहिनि। उहे लिफ़ाफ़ो बि कोन खोलीनि ऐं ड्रिसनि त मंझिनि कहिड़ो लिलू पियो आहे। जे खोलींदा त रिपोर्ट खणी पासे रखंदा। संदनि किताबनि जे जारे ते किताब विरले रखिया हूंदा। ब्रियूं शयूं रखियूं हूंदियूं। पार्लियामेंट जे कार्यवाहीअ जूं वक्त बि वक्त रिपोर्टूं अलाए छो सभिनी मेम्बरनि खे मोकिलियूं वेंदियूं आहिनि। आख़िर त कब्राड़ीअ जे साहिमीअ में अठें आने सेर जे हिसाब सां विकामंदियूं आहिनि। मूं बि अठें आने सेर ते हिक ढिग़ विकिणी छड्डियो। जंहिंखे खपे सो छोन वञी लाइब्रेरी में पढ़े? पर लाइब्रेरी जी बि हिक कहाणी आहे। हज़ारें किताब लखनि जी लाइब्रेरी, सारो ड्रींहुं झलिकेदारु बतियूं पेयूं ब्ररनि ऐं पंखा पिया फिर फिर कनि, पर हेड्डे हाल में ब्र टे मेम्बर मस हूंदा। मेम्बरनि खे पढ़ण जी आदत हूंदी त बि हित विसरी वेंदी ऐं पंज सत सैकड़ो अभ्यासी हूंदा ऐं जे हिकु या ब्रिनि कमनि में ज़ाणू हूंदा। अक्सरी मेम्बर उथा मार ते ग़ाईंदा आहिनि। तकरीरुनि में बि अभ्यासु या वीचार जी झलक विर्ले मिलंदी।

सज़ो ड्रींहुं पार्लियामेंट जो सदन भांइ त ख़ाली पर सेन्ट्रल हाल भरपूर। कुटंबियुनि जी ग्राहकी ख़ूब। चांहिं ऐं काफ़ीअ जा प्याला जाम पोइ सज़ो हालु खिल ऐं टहिकड़े सां पियो वञे। सांझहि जो मेम्बरु अक्सर घर में मिलंदो। को न को शग़ुल, कंहिं न कंहिं वटि चांहिं ऐं खानो हूंदो। जे हलंदीअ वारा मेम्बर तिनि खे घरनि में मीटिंगूं, सलाहूं साज़िशूं, शांत जो या अभ्यास जो हरिको वक्तु कोन मिलंदो। अज़ु कल्ह सज़े हिन्दुस्तान लाइ रेल्वे जूं पासूं खीसे में अथनि। हफ़्ते में कम अज़ कम हिकु भेरो निकरंदो ऐं अक्सरी पंहिंजे प्रांत में वेन्दो, पंहिंजे तक में फेरो ड्रेई वोटरनि सां मिले सो विरले। या ख़ानगी कम ते या पार्टीअ जे कम ते पर घणो करे चूंडुनि पुठियां- म्यूसिंपल चूंड, पंचायत चूंड, विधान सभा जी चूंड, चूंडुनि में बहिरो वठण हिननि जो मुख्य धर्मु थी पियो आहे। ब्रियो त कलेक्टर, कमिश्नर, चीफ इंजीनियर वग़ैरह आइला अमलदारनि सां मिलण ऐं कंहिं जो कमु कराइणु या कंहिं जे ख़िलाफ कदमु रोकण, हुकूमत जे कम में वज़ीरनि जे कमनि में संदनि दस्तअंदाज़ी हिकु डुखियो मसइलो थी पियो आहे। जिते ऐं जंहिं वटि वेन्दो उते रोब सां ऐं शान सां ऐं कुछ दब्राइण जे वीचार

सां, खुलियो खुलायो या ढकियो। हिन जो मुंहुं पियो खुले ऐं ॿोले त ''मां पार्लियामेंट जो मेम्बरु आहियां।'' ईमानदार हूंदो या न, काबिल हूंदो या मूर्ख, शेवक हूंदो या भक्षक, पर सभिनी जो अहमु भाव बिल्कुल तेज़ त मां बि का चीज़ आहियां।

नवां लफ़्ज़ :

पार्लियामेंट = संसद।

साब पेई = सफली थी।

काराइती = उपयोगी।

मुख़ालिफ़ = विरोधी।

नॉमीनेट = नामज़द करणु।

लिसनर = ॿुधंदड़।

ताब तुनके = ठठोली, टोकजनी।

सांझनि = शाम जो वक्तु।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब लिखो:-

(1) लेखक जैरामदास बाबत कहिड़ी ॼाण ॾिनी आहे?

(2) पार्लियामेंट मेम्बर बणिजण खां पोइ लेखक जी रहिणी कहिणीअ में कहिड़ी तब्दीली आई?

(3) रोज़ानी बैठक बाबति लेखक कहिड़ो अहवालु ॾिनो आहे?

(4) पार्लियामेंट जे रिपोर्टनि बाबति लेखक जी कहिड़ी नापसंदी हुई?

(5) पार्लियामेंट जे मेम्बरनि बाबति लेखक कहिड़ी तन्ज़ कई आहे?

सुवालः II. 'पार्लियामेंट जे अन्दर' पाठ जो पंहिंजनि लफ़्ज़नि में सारु लिखो।

●●

(3)

मुहमद राम

– कीरत बा॒बा॒णी

(1922-2015)

लेखक परिचयः-

कीरत बा॒बा॒णी सिन्ध में कंडियारो (नवाबशाहु) जो असुलु रहाकू हो ऐं विरहाङे खां पोइ बम्बईअ में अची मुक़ीमु थियो। हिन्दुस्तान जे आज़ादीअ जी लड़ाईअ में हुनजो सरगर्मु योगदानु रहियो ऐं उन सां गडो॒गडु॒ भारत में सिन्धी बो॒लीअ जी मान्यता लाइ पिणु हुन जो अहम किरदार रहियो। हिन जा नाटक, कहाणियूं ऐं मज़मूननि जा किताब ''अव्हीं सभु नंगा आहियो'', ''अदब में कदुरनि जो सवाल'', ''सूरीअ सडु॒ कयो'', ''कुझु बु॒धायमि कुझु लिकायमि'', सिरे सां चार भाङा आत्म कथा छपियल आहिनि। खेसि साहित्य अकादमी इनाम ऐं महाराष्ट्र गौरव सम्मान हासिलु थियो। साहित्य सभा पारां संदसि भभिकेदार सम्मानु करे ''बाबा-ए-सिन्धु'' जो खिताबु अता कयो वियो ।

हू पाण खे मुहमद राम चवाईंदो हो। के हुन खे मस्तु समझंदा हुआ, के खेसि ढोंगी सडी॒ंदा हुआ, पर के अहिड़ा बि हुआ जे खेसि सिद्दक जी नज़र सां डि॒संदा हुआ ऐं संदसि इज़्ज़त ऐं अहितरामु कंदा हुआ। हू जोगी॒ बि हो त मीरासी बि, गदा बि हो त शाहु बि! कडु॒हिं डि॒सोसि त कलंदरनि वारो ओनी खथो ओढे, मथे ते कलाहु रखी, हथ में किश्कोलु खणी ऐं गले में वडु॒नि शीशनि ऐं चिमकंदड़ पथरनि जी माल्हा पाए 'मस्त कलंदर' जी झूंगार पयो कंदो ईंदो, कडु॒हिं डि॒सोसि त जोगि॒युनि वारी गेड़ूअ रती कफ़नी ओढ़े कननि में कुंढल पाए, हथ में करमंडलु लोडी॒ंदो रमतनि वारी 'बेअंत' जी धुनी लगा॒ईंदो पयो वेंदो। कडु॒हिं डि॒सोसि त डा॒ढ़ी, मुछूं ऐं मथे जा वार वधाए झंगु करे छडी॒ंदो त कडु॒हिं डा॒ढ़ी, मथो, मुछुनि ऐं वेंदे भिरुनि सूधी सफ़ाई करे बे॒टारीअ वांगुरु मथो चिमकाईंदो

Unfiled Notes Page 19

पियो वेंदो, कड़हिं ड्रिसोसि त हिक पेर ते घेतिले जो पादरु ऐं ब्रिए में चंपलि त कड़हिं ब्रेई पेर सुकल गाहु या इग्रिड़ियुनि ते रेढ़ियो वेंदो।

हू किथे सांति करे कीन विहंदो हो। हर वक्त पियो फिरंदो हो, कड़हिं कंहिं ग्रोठ में त कड़हिं कंहिं ग्रोठ में, मुश्किल सां कंहिं ग्रोठ में हिक खां वधीक डींहं तरसंदो हो। हू चवंदो हो त ''जोग्री रमता भला'' पर भिर्यनि जे शहर सां संदसि ख़ासु नींहुं हो। वर-वर करे हू भिर्यनि जे शहर में ईंदो हो ऐं उते हफ़्तो ब्र रही पवंदो हो। असुल में हू केरु हो ऐं कहिड़े ग्रोठ जो हो, तंहिंजी सुधि कंहिं खे कान हुई या चइजे त कंहिं ज्राणण जी कोशशि ई न कई हुई।

हू हथ में हमेशह हिकु डुंडो खणंदो हो ऐं संदसि चेल्हि में ब्रधल रसीअ मां हर वक्ति हिकड़ो भग्रलु घड़ियालु लटिकंदो रहंदो हो। उहो घड़ियालु किथां हथि लग्रो होसि ऐं कहिड़नि अयामनि खां चेल्हि सां ब्रधंदो आयो हो, तंहिंजी ज्राण बि शायद किन थोरनि खे हुई। हिकिड़े ड्रिहाड़े अजब विचां या शायद रौंशे मंझां हिक शख़्स मज़ाकी नोअ में पुछियुसि, ''फ़क़ीर तव्हांजी घड़ी त अयामनि खां हिकड़े ई हंधि बीठी आहे, वक़्त जी फेरफार ड्रेखारण खां पिड़ु कढी बीठी आहे।'' हुन मुश्की वराणियो, ''हीअ घड़ी हिक वड्डी हक़ीक़त जो राज़ु तव्हां खे पेई सले। तव्हीं रुग्रो समिझण जी कोशशि करियो। तव्हीं माण्हू समझो था त वक्तु पयो फिरे। तूं ई बुधाइ त गुज़रियल पंजवीहनि सालनि जे अंदरि तूं फिरियो आहीं या वक़्तु! वक़्त जी हालत त साग्री वक़्त खे न इब्तिदा आहे न इन्तहा! तो कड़हिं वक़्त खे फिरंदो ड्रिठो आहे?''

अग्रिलो अहिड़ी सवली हार मञण वारो न हो। तंहिं पंहिंजी चतुराईअ जो सबूतु ड्रियण लाइ चयो, ''पर इहो त बुधायो त ब्रेई कांटा हिक हंधि छो बीहारे छड्रिया अथव?''

जवाबु मिलयो, ''छाकाणि त ब्रेई साग्री ग्राल्हि आहिनि।''

''केरु साग्री ग्राल्हि आहिनि?''

''मुहमद ऐं राम''

''भला ब्रेई ब्रारहनि ते छो बीठा आहिनि।''

''छाकाणि त ब्रिनि मां हमेशह ब्रारहां थींदा आहिनि।''

बीठलनि जूं अखियूं चरख़ु थी वेयूं ऐं सुवालु पुछंदड़ु खिखो-विखो थी मुंहुं लिकाए हलियो वियो।

ब्रिए हिक भेरे जी ग्राल्हि आहे त कंहिं शख़्स शरारत करे खेसि वाट वेंदे पकड़े चयो हो, ''भला हीउ त बुधायो त तव्हां पंहिंजे नाले जी खिचिणी छो बणाए छड्डी आहे?'' तड़हिं बिल्कुल तहमुल ऐं धीरज सां जवाबु ड्रिनो हुआईं ''तोखे ख़बर आहे त जेकड़हिं कंहिं बि किस्म जो रोगु थींदो आहे, त हक़ीमु खिचणी खाइण जी सलाह ड्रींदो आहे।'' हू हिंदुनि वटि बि वेंदो हो त मुसलमाननि वटि बि वेंदो हो। हू मंदर में बि रात गुज़ारींदो हो त मस्जिद में बि ड्रींहुं काटे वठंदो हो। 'कल्मो' बि पढ़ंदो

हो त 'ओम्' जो मन्तरु बि उचारे सघंदो हो। हिन्दुनि खे 'रामु रामु' चवंदो हो त मुसलमाननि खे 'असलामु अलैकुमु' पुकारींदो हो।

हिकिड़े ड्रींहुं हू कंहिं ग्रोठ मां लंघे रहियो हो, ओचितो साम्हूं टिकाणो ड्रिसी उन में लंघे वयो। टिकाणे जे भाईअ हुन खे कलंदरनि जी पोशाक में ड्रिसी, शूके खांउसि पुछियो, ''तूं केरु आहीं जो इएं टिकाणे में लंघे आयो आहीं?'' जवाबु ड्रिनाईं, ''मुहमद राम'', टिकाणे दारु कुझु मुंझी वयो। पर रोबु रखण लाइ आकिड़जी चयाईं, ''तुंहिंजी ज़ात?'' मुहमद राम वराणियो, ''पाकु!'' भाई साहब खे गजी अची वेई। सो चयाईं ''ढोंगु छड्डे बुधाइ त हिन्दू आहीं या मुसलमानु?'' हुन बिल्कुलु तहमुल सां जवाबु ड्रिनो, ''तूं पंहिंजो हिंदूपिणे जो ढोंगु छड्डे ड्रिसु त मालूमु थींदुइ त आउं केरु आहियां'' ऐं वेंदे वेंदे चवंदो वियो, ''जे जीअरो आहियां त वरी तुंहिंजी शिकिल बि कीन ड्रिसंदुसि।'' ऐं चवनि था त साल गुज़री वया, पर उन्हीअ ग्रोठ में वरी पेरु कीन पाताईं।

हुन जी ख़सूसियत इहा हुई, जो जंहिं वटि बि चढ़ी ईंदो हो, तंहिंखे छूटि में गारि कढंदो हो। हिंदूअ खे बि गारि ड्रींदो हो, त मुसलमान खे बि, कंहिंखे कीन छड्डींदो हो। कंहिंजी मजाल न थींदी हुई जो खेस वरजाए नाराज़पो ड्रेखारे, हू जंहिंजी पिड़ी या दुकान ते चढ़ी ईंदो हो, त न सिर्फ़ धणीअ जी गारियुनि सां मरहबा कंदो हो, बल्कि हू कंहिं बि चीज़ में हथु विझी पंहिंजे थेल्हे जे हवाले करे छड्डींदो हो। अक्सरि ड्रिठो वयो हो त रस्ते हलंदे हलंदे हू पंहिंजे थेल्हे मां उहा चीज़ कढी कंहिं न कंहिं घुरिजाऊअ जे अग्रियां रखी हलियो वेंदो हो।

घणो करे संदसि ख़ासु सम्ब्रंधु टीकम चांहिं वारे सां हो। हुन जे दुकान ते घणो करे कलाकनि जा कलाक वेठो हूंदो हो। टीकम जी पिणु हुन सां दिल वारी यारी हुई ऐं खेसि ड्राढो प्रेम सां खाराईंदो हो ऐं पीआरींदो हो। हुन जो चांहिं सां ख़ासु शौंकु हो ऐं ब्रियो नास चपुटीअ सां; टीकम जे दुकान ते संदसि ब्रेई ख़्वाहिशूं पूरियूं थींदियूं हुयूं। जड्डहिं बि हू दुकान ते चढ़ंदो हो त टीकमु हिकदम सुठी चांहिं जो ग्लास ठाहे हुनजे अग्रियां रखंदो हो ऐं नास जी दबुली पिण भरे ड्रींदो होसि। हिकड़े ड्रींहुं टीकम जे दुकान ते चढ़ंदे टीकम जे बरिनीअ मां बिस्कूटनि जी लप भरे भरिसां बीठल फ़कीरयाणीअ खे ड्रींदे टीकम ते वठी गारियुनि जो धूड़ियो वसायाईं। टीकम ख़ामोश बुधंदो रहियो ऐं चांहिं जो ग्लास ठाहे अग्रियां रखियाईं। हुन चांहिं गटर में हारींदे चयो, ''टीकम तो वटि पंज रुपया आहिनि?''

''न क़िबिला, हिन वक़्ति त मौजूदु न आहिनि।''

''जेकड्डहिं मूंखे ज़रूर घुरिबल हुजनि त?''

''चओ त बंदोबस्तु करे वठां।''

''कंहिं बि किस्म जी देर न करि।''

टीकम हेठि लही कंहिं खां पंज रुपया उधारा वठी आणे संदसि अग्रियां रखिया। हू ख़ामोश पैसा खीसे में विझी हेठि लथो। टीकम जे दिल जी कंहिं कुहिनी कुंड मां पलक लाइ शक जी हिक लहर

उभिरी आई। कंहिंखे दुकान जी पारत करे हू मुहमद राम जे पुठियां वियो। मुहमद राम हिकिड़े कपड़े जे दुकान ते चढ़ी वियो। कुझु ख़रीद करे पंहिंजे थेल्हे में विझी, हू तकड़ो तकड़ो ब्राहिर निकतो। ग्रोठ जी शाही सड़क पार करे, ग्रोठ खां ब्राहर हिक सुञे पेचिरे ते हलंदो हलियो। आख़िर हू हिक अकेली ऐं वीरानु जग्रह ते हिक छिनल झूपिड़ीअ जे अग्रियां अची बीठो। दरिवाज़ो हटाए अंदरि घिड़ी वियो। एसिताईं टीकम बि अची झूपिड़ीअ भेरो थियो। हिक सोराख़ मां लीओ पाए अंदरि ड्रिठाईं त किन पलकनि लाइ संदसि दिल जी धक धक ज़ुणु बीहजी वेई। झूपिड़ीअ जे अंदरि हिकु मैथु पयो हो, जंहिं जे भरिसां हिकु लीडुनि में ओढ़ियलु औरत ऐं उघाड़ा ब्रार गूंगा ग्रोढ़ा ग्राड़े रहिया हुआ। मुहमद राम पंहिंजे थेल्हे मां कफ़न जो ग्राढ़ो कपिड़ो कढी मैथ मथां विधो ऐं रहियल ड्रोकड़ कढी उन औरत जे हथ में ड्रिनाईं। टीकम जे अखियुनि मां आंसू टपकी पिया ऐं हू पोयां पेर करे वापसि मोटियो।

हिकड़ी ग्राल्हि संदसि लाइ आलिमु आश्कारु हुई त ग्रोठ जे मौलवीअ सां असुल कान पवंदी हुअसि। उन लाइ पिणु हिकु वड्डो क़िसो हो। चवनि था त रात आराम जे इरादे सां हू मस्जिद में घिड़ी वियो। मौल्वी साहब खे ग्राल्हि कान वणी, सो ग्रुसे में अची चयाईंसि, ''तूं काफ़रु आहीं, हिंदुनि जे टुकरनि ते थो पलिजीं। शरीअ जा ब्रंधन कोन थो पालीं तोखे अल्लाह जे पाकु घर में क़दमु रखण जो को बि हकु न आहे। जंहिंखे दीनु ईमानु कोन्हे उहो ख़ुदा जे घर में कीअं थो पेरु पाए सघे।'' मुहमद राम ओड्डीअ महल त कुझु कीन कुछियो, पर पूरे हफ़्ते खां पोइ पंजनि ज़ुणनि खे साणु करे आधीअ रात जो वञी मौलवीअ जो दरु खड़िकायाईं। मौल्वी साहब दरु खोले मुहमद राम जे पेरनि ते किरी पयो ऐं हथ ब्रुधी अरिज़ु कयाईंसि त वापसि मोटी वञे ऐं हुन जी इज़त बचाए... सुबुह जो ग्रोठ में माण्हुनि मस्जिद जे भरिसां लघंदे ड्रिठो त भित ते वड्डनि अखरनि में लिखियलु हो, ''हिन पाकु घर मां अल्लाह खे नेकाली ड्रिनी वेई आहे ऐं शैतान खे अझो ड्रिनो वियो आहे।'' वरी कड्डहिं बि उन मस्जिद में पेरु कीन पाताईं।

हिकड़े ड्रींहुं धरततीअ जो चकरु हणंदो अलाए किथां अची ओचतो सेठि मिरचूमल जे खूरे ते प्रघटु थियो। बटई पिए हली। सेठि मिरचूमल खट ते वेठे 'राधेश्याम' जो जापु पे जपियो ऐं संदसि गुमाश्तनि वेठे तोर कई। मुहमद राम जे ''मस्तु कलंदर'' जो नारो ब्रुधी हाल सभिनी जे मुंहं जो पनो ई लही वियो। सेठि मिरचूमलु ब्राहिरां मुंहं जी पकाई करे चयो, ''अड़े नालाइक़! पहिरीं पंज टोया भरे हिन मस्त कलंदर जे झोलीअ में विझो ऐं खेसि रवानो करियो।'' हुन वड्डो टहकु ड्रेई चयो, ''सेठि साहब, मुहमद राम खे रोटीअ टुकरो रइयत खाराईंदी आहे। कफ़न जी खेसि ग्रणिती कोन्हे। छो त हिन्दुनि खे मुंहिंजो मैथु हथि आयो त जलाए ख़ाक करे छड्डींदा ऐं जे मुस्लमाननि खे मिलियो त छहनि फुटनि वारी खड्ड खोटे मिटीअ सां लटे छड्डींदा। पोइ जो ओनो तोखे आहे; इहे पंज टोया बि तोखे कमि अची वेंदा। आउं तोखे ख़ैराति थो करियां बाकी उन जे एवज़ि तूं रुग्रो पंहिंजनि गुमाश्तनि खे चउ त साहिमीअ पुड़ हेठां जेको आनो मेणि जो लग्राए वेठा कुड़मियुनि खे धड़ा तोरे ड्रियनि, उहा

कढी छड्डिन। इएं चई हू रमंदो रहियो। सेठि मिर्चूमल जे चपनि तां 'राधे श्याम' जो मन्तरु इएं उड्डामी वियो जीअं सरउ जे मुंद में हवा जे झटिके सां सुकल पन उड्डामी वेंदा आहिनि।

हिकड़े ड्रींहुं ख़बर नाहे किथां अची टीकम जे दुकान ते पहुतो। मुखी ढोलणदास वेठे ब्रीड़ी छिकी ऐं चांहिं चुकी पीती। दुकान ते चढ़ंदे मुहमद राम वाको करे चयो, ''टीकम ! मस्तु कलंदरु'' ऐं मोट में जवाब न पाए, ब्र चारि कचियूं गारियूं ड्रेई चयाईं, ''टीकम जा ब्रचा, मस्तु कलंदरु चवण खां ब्ररो थो चढ़ेई, जीअं माण्हुनि खे पराओ मालु मोटाइण खां ब्ररो थो चढ़े। तोखे मालूम आहे त मुखी ढोलणदास पाण खे शहर जी पग्र ऐं मोतिबरु माण्हू थो समिझे। वेचारी रहीमा वाछियाणी अमानत तोर ब्र फुलियूं ड्रेई खांउसि ड्रह रुपया उधारा वरता हुआ। पर हाणे उहे फुलियूं मोटाइण खां इंकारु थो करे। भलि उन्हीअ मां मुखी साहबु पंहिंजी धीउ ऐं पुट्रु परिणाए। हां वठु, ही ब्र रुपया मुखी ढोलणदास खे पंहिंजे पुट जे शादीअ जे पिन लाइ मुंहिंजे तरिफ़ां ड्रिजांसि।'' इएं चई हू जीअं तकड़ो आयो तीअं पोएं पेर हेठि लही अखियुनि खां ग़ाइबु थी वियो।

उन्हीअ ड्रींहुं मुहमद राम जो को ब्रियो रूपु हो ! जिन्सी बाहि थे ब्ररी ! संदसि अखियुनि मां उला थे निकता; संदसि चप पिए फड़किया ऐं सज्रो बदनु पिए धुड्रियो। वात मां गजी पिए वहियसि ऐं उभ वांगुरु पिए गजियो। विच चोंक में बीही सभिनी खे गारियूं पिए ड्रिनाईं। कंहिं खे बि कीन छड्रियाईं। वड्र वड्रेरनि जूं टोपियूं पिए लाथाईं। मुखियुनि ऐं मुलनि, चौधिरियुनि ऐं वड्रेरनि जे पग्रुनि में पिए हथु विधाईं। मजाल हुई कंहिं खे जो वेझो वञे ! कंहिं खे ज़ुर्रत कीन थी थिए जो एतिरी कावड़ जो सबबु पुछे। जड्रहिं गारियूं ड्रेई थको तड्रहिं विच चौसूल तां वड्रे वाके रड़ियूं करे चवण लग्रो, ''बुधे रइयत बुधे! राज महाज्रण बुधे! सभेई कन खोले बुधो! वड्रेरो करीमुदादु पाण खे ग्रोठ जो चडो मुड़िसु थो समझे, पाण खे राज्र जो वाली थो क़रारु ड्रिए। पाण खे ख़ल्क ख़िज़िमतगारु थो ज्राणे। मस्जिद में आम खे वाइज्र थो ड्रिए। इहो बि आलमु आश्कारु आहे त खेसि जीअरियूं ज़ालूं घर में वेठियूं आहिनि। हाणे चोड्रहं विरिहयनि जी नींगरि सां लाऊं लहणु थो चाहे, जड्रहिं संदसि हिकु पेरु क़बर में आहे ऐं ब्रियो क़बर जे कप ते। हू चवे थो त खेसि औलाद कोन्हे। हू पंहिंजी पीढ़ी क़ाइमु करणु थो घुरे। तंहिं करे चोथीं ज़ाल थो आज़िमाए। केरु खेसि बुधाए त सउ कुश्ता माज़ूनि खाइण सां पोइ बि हुन खे औलाद पैदा करण जी तौफ़ीक न ईंदी। पीर ड्रिने खे चओ त पाणीअ ढुक में बुड्डी मरे, जो ब्रिनि सौ रुपियनि लोभ ते पंहिंजी कोड्र जहिड़ी सानी धीअ जो सडु मुड़िदे सां थो अटिकाए। उन्हीअ खां त ज्रमण वक्ति निड़ीअ ते नंहुं ड्रेई पूरो करे छड्रेसि हां! हहिड़े राज्र में इज़त ऐं ग़ैरत वारे जो रहणु मुश्किल आहे। मुहमद राम खे हइड़नि बेग़ैरति बंदनि जे विच में रहण खां नफ़रत आहे। हीअ दलूराइ जी नगरी नासु थियणु घुरिजे।'' इएं चई गारियुनि जो धूड़ियो वसाईंदो शाह साहिबु जो बैतु, ''हहिड़ा हाञा थियनि वरी हिन भंभोर में!'' झूंगारींदो हलियो वियो।

अज्रु ताईं कंहिंखे सुधि कान्हे त मुहमद राम केड्रांहुं हलियो वियो।

नवां लफ़्ज़ :

ओनी खथो = ऊनी कंबल।
किश्कोतु = भिख्या लाइ कटोरो।
अयामनि = घणे वक्त खां।
काइनात = कुदरत।
इन्तहा = पछाड़ी।
मैथु = मृत शरीर, पार्थिव शरीर।
मौतिबरु = वड्डो माण्हू, मुरबी।
झूंगार = गुनगुनाइण।
धेतिले = लकड़ी।
रौंशे = मज़ाक।
इब्तिदा = शुरूआत।
खिखो विखो = शर्मिंदो थियणु।
काफ़रु = हिंदू।

:: अभ्यास ::

सुवाल: I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब 10-15 लफ़्ज़नि में ड्रियो:-

(1) मुहमद राम केरु हो?
(2) मुहमद राम वर वर करे कहिड़े शहर में वेंदो हो?
(3) मुहमद राम कंहिंजी मदद कंदो हो?
(4) लेखक कीरत ब्राब्राणीअ खे साहित्य सभा पारां कहिड़ो खिताबु अता कयो वियो आहे।

सुवाल: II. हेठियनि सुवालनि जा जवाब 50-60 लफ़्ज़नि में ड्रियो:-

(1) वक्त जे बारे में मुहमद राम कहिड़ो जवाबु ड्रिनो?
(2) ''वक्त खे न इब्तिदा आहे त इन्तहा।'' सिट जो मतलबु लिखो।

सुवाल: III. हेठियनि सुवालनि जा जवाब खोले लिखो:-

(1) मुहमद राम चांहिं वारे टीकम खां पंज रुपया छो वरिता?
(2) हिन कहाणी खे मुख्तसर में लिखी बुधायो त हिन मां कहिड़ी सिख्या थी मिले?
(3) मुहमद राम मिरचूमल जी पोल कीअं खोली?
(4) मुहमद राम जी शख़्सियत जे बारे में खोले लिखो?

सुवाल: IV. हेठियां हवाला समुझायो:-

(1) ''हिन पाकु घर मां अल्लाह खे नेकाली ड्रिनी वेई आहे ऐं शैतान खे अझो ड्रिनो वयो आहे।''
(2) ''तोखे ख़बर आहे त जेकड्रहिं कंहिं बि किस्म जो रोगु थींदो आहे, त हक़ीमु खिचणी खाइण जी सलाह ड्रींदो आहे।''
(3) ''काइनात जी हर चीज़ पेई फिरे ऐं असीं चऊं त वक्तु पयो फिरे।''

●●

(4)

कुदरत सां कुर्बु

– कु. पोपटी हीरानन्दाणी

(1924-2005)

लेखक परिचयः-

''टहक ड्डींदड़ परी'' जे नाले सां मशहूरु पोपटी हीरानन्दाणी साहित जे क्षेत्र में अणविसरंदड़ सेवाऊं ड्डिनियूं आहिनि। सिन्धी अदब में आंधी तूफ़ान मचाईंदड़, कलम जी सिपहसालार ऐं मुंहं ते सचु चई ड्डियण वारी असांजी दादी पोपटी हीरानन्दाणीअ जो जिस्मु भले हीणो थी वियो हो, पर हुनजो आत्म विश्वास अगे॒ खां अगि॒रो हो। संदसि टहिक ऐं बुलन्दु आवाज़ अजु॒ बि यादि कयो वञे थो। हिन पंहिंजनि लेखनि में जाम ग़ाल्हियूं दर्ज कयूं आहिनि। पोपटी टहिक ड्डियण वारी उहा परी हुई, जेका असांखे खिलाइण लाइ हिन धरतीअ ते आई हुई। हिक मुलाकात में हुन पंहिंजे कॉलेज जा किस्सा, अदबी हलचल, सिन्धियत लाइ कयल पंहिंजूं ख़िज़मतूं ऐं सिन्धियत जी हलचल ते इतिहास वग़ेरह ते रोशनी विधी आहे। संदसि 50 खां वधीक किताब छपियल आहिनि।

संदसि रचनाऊं सिन्धी पाठकनि खे बेहदि मुतासिर कन्दियूं आहिनि। हू वर वर करे संदसि लेख, कहाणियूं ऐं नॉविल पढ़न्दा आहिनि। हकीकत में हूअ सिन्धी अदब जी भीष्म पितामह हुई, खेसि असांजा सौ-सौ सलाम।

हिन मज़्मून में कुदरत सां प्रेम करे प्रेरणा हासुल करण जो संदेश आहे।

वेचारी कुदरत ! हूअ त असांजे वेझो अचण लाइ वड्डा वस थी करे, घणा वाझ थी विझे, साठ सोण जे रूप में शुभ मोके ते अंब जा पन, मृत्यु संस्कार में ढकणनि में कणिक जा सला, धर्म-विधीअ में तुलसी ऐं केवड़ो, सूंहं वधाइण में गुलाब ऐं मोतियो, विन्दुर ड्डियण लाइ बरणीअ में मछियूं

बणिजी पेई लियाका पाए, पेई असां डुांहुं निहारे, पर असीं साणुसि गडु प्रीत रखूं ई कीन, मित्रता जोड़ियूं ई कीन, मिटी-माइटी गुंढियूं ई कीन।

रुगो हिकिड़ो ई खिलण ख़ुश थियण जो पाठु पढ़ू त लख खटियासीं। डिसो न धरती पंहिंजी छातीअ ते वण ऐं बूटा विहारे खिले थी त आकाश पंहिंजे ललाट ते चन्द्रमा रूपी तिलक डेई मुश्के थो। पर्वत मथे ते बर्फ़ खे विहारे टहिक डिए थो त समुन्ड लहिरुनि जे मुंहं में अछी अछी गजी डेखारे खिले थो। सिजु ऐं चन्डु भजण रांदि पिया कनि त लहिरूं क़तार बुधी ''असीं बेर चूंडण अचूं थियूं'' वारो खेल पयूं खेलीनि। बादल गजगोड़ करे पिया गोडु मचाईनि त तारा मस्तीअ विचां अखियूं छिंभे पिया फेरियूं पाइनि। पन ताड़ियूं पिया वजाइनि त टारियूं पींघ पयूं लुडनि। हवा गुलनि जी ख़ुश्बू चोराए लिकी लिकी पेई भजे त पोपट अजीब व ग़रीब रंग पसाए पियो फड़ फड़ि करे। बूंदूं छम छम कन्दियूं पेयूं अचनि त इंडलठ पटापटी साड़ी पहिरे पेई मुश्के। नदी किनारे खां पलउ छडाए खिल खिल कन्दी पेई भजे त झरिणो टप डीन्दो पियो नचे।

पखी 'कूह कूह' या 'टकलूं टकलूं' कन्दे पिया गाइनि त मोरु 'ताथई ताथई' कन्दे पियो नृत्य करे। छेलो ठेंगा टप्पा पियो डिए त हाथी सूंड में पाणी भरे पियो फूहारा वसाए। प्रभात लाल शाल ओढ़े, बादलनि रूपी डाकनि तां चढ़न्दे धीरे-धीरे पेई मुश्के, त रात सितारनि सां भरियल साड़ी पहिरे, फ़ख़ुर सां पेई अगियां वधे, चन्ड जे कटोरे मां चांदनी पेई हारिजे ऐं लहिरूं हथ खणी पेयूं पटड़ी चांदनी झटीनि, त धरतीअ मथां विछायल साए ज़मरदे ग़ालीचे मथां पसूं पखी पिया बाजोलियूं खेलीनि।

घोड़ो तबेले जे 'धा तिन धा' ताल जीआं पियो टाप टाप करे त हंसु मणीपुरी नृत्य जे लइ ते पियो हले। इन तरह कुदरत जो ज़रिड़ो ज़रिड़ो पियो ख़ुशी ऐं आनन्द जो इज़िहारु करे, पोइ भला असां उदास छो गुज़रारियूं?

हक़ीक़त में खिलण जी डाति सिर्फ़ इंसान खे ई मिल्यल आहे। न घोड़ो कडहिं खिले थो ऐं न गांइ कडहिं टहिक डिए थी। हिकु इंसान आहे जो ख़ुशी महसूस करे, डुन्द डेखारे थो उन ख़ुशीअ जो इज़िहार करे थो। जुमण सां ई बालक मुश्के थो ऐं 'खिल खिल' करे थो। खिलण करे असांजे बदन जे रतु जूं नलियूं फुन्डजनि थियूं ऐं पोइ रतु जो दौरो ठीक हले थो। डॉक्टर चवन्दा आहिनि त हर रोज़ु हिक सूफ़ु खाइजे, पर मां चवंदी आहियां त हर रोज़ु हिकु वडो टहिकु डिजे। टहिकु डियण में हिक पाई बि ख़र्चु नथी थिए ऐं न ई असांजो वक्तु थो वञे। बसि घर वेठे हिक पल में मुफ़्त में माजून मिली थी वञे।

कुदरत असांखे बिया बि घणेई सबक थी सेखारे पर हीउ कुदरत जे किताब जो पहिरियों सबकु आहे त हमेशा खिलन्दो रहिजे। मुसीबत में बि मुश्किजे त ख़ुशीअ वक्ति बि खिलिजे।

लगे थो बेज़ुबान ऐं गूंगनि इंसाननि कुदरत मां ई ग़ाल्हाइण जो सबकु पिरायो हूंदो। तहज़ीब जी समूरी तरक़ी, समूरियूं कलाऊं कुदरत मां ई सिरजन शक्ती हासिलु कंदियूं आहिनि।

असांजूं वड्डिड़ियूं पाणीअ में खीरु मिलाए, पिपर जे वण ते जल चाढ़ींदियूं आहिनि। चंड ऐं ब्रियनि डुिणनि ते दरयाह ते चांवर ऐं खंडु जा अखा पाईंदियूं आहिनि, खाधो खाइण खां अवलि पखियुनि-पसुनि लाइ गिरहु कढी रखंदियूं आहिनि। इन किस्म जूं समूरियूं रवायतूं गोया असांजे प्रकृतीअ सां अनादी पेच जो इज़हारु कनि थियूं। इहो वण-बूटे, पखी-पसूंअ जो प्यारु असांजे तहज़ीब जो अहमु जुज़ो आहे।

इनकरे अचो त सूंहं ऐं सोभ्या, ताकत ऐं सिहत वरी हथि कयूं, अचो त शक्तीअ खे प्यारु कयूं ऐं खेसि पूजियूं। अम्बा चओसि या दुर्गा, देवी चओसि या काली पर हूअ असांखे ज़रूर खपे। उमंग ऐं रंग, नृत्य ऐं गीत, लय ऐं मधुरता, पवित्रता ऐं ताज़गी, मौज ऐं बहार, सुर ऐं आलाप, ताकत ऐं सघ, डेघि ऐं वेकरि, फुड़िती ऐं चुस्ती, लालाई ऐं रंगीनी, बीहक ऐं रौनक, बुलु ऐं पराक्रमु, सभु असांखे कुदरत वटां ई मिलन्दो। तंहिंकरे अचो त कुदरत सां कुर्बु रखूं।

नवां लफ़्ज़ :

मुतासिर = असर करण।
ड्रात = जनमजात गुण।
तहज़ीब = सभ्यता।
कुर्बु = प्यार।
ललाट = निरिड़।
माजून = ताकत ड्रींदड़ शइ।
रवायतूं = परम्पराऊं।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब ड्रियोः-

(1) कुदरत कहिड़े कहिड़े रूप में असांजे वेझो अचणु चाहे थी?

(2) कुदरत कहिड़े कहिड़े रूप में असांखे खिलाइणु चाहे थी?

(3) पखी ऐं पसूं कीअं खिलणु सेखारीनि था?

सुवालः II. हेठियां हवाला समुझायोः-

(1) "बादल गजगोड़ करे पिया गोडु मचाईनि त तारा मस्तीअ विचां अखियूं छिंभे पिया फेरियूं पाईनि।"

(2) "न घोड़ो कड्हिं खिले थो ऐं न गांइ कड्हिं टहिक ड्रिए थी।"

●●

(5)

मुंहिंजो तजुर्बो

– ईश्वरी जोतवाणी
(1930-2013)

लेखक परिचयः-

ईश्वरी जोतवाणी मुख्य रीति मज़्मून निगार आहे, हिन 'मुहबत जो तियागु' ऐं 'उल्फ़त जी आगि' ॿ धार्मिक किताब 'महावीर अर्जन' ऐं 'भीष्मु पितामह' लिखिया आहिनि।

हिन रचना में इन्सान खे मनोविज्ञानिक नज़रीए सां ज़िंदगीअ सां मुंहुं मुक़ाबिलु थियण जी सिख्या ॾिनल आहे।

पाकिस्तान खां पोइ मां पूना में आयसि त वाडिया कॉलेज में दाख़िल थियसि। उते हॉस्टिल में रहंदे बम्बई यूनिवर्सिटीअ मां बी.ए. ऑनर्स पास कई ऐं पोइ 1955 में अध्यापिका थी कमु कयमि ऐं पिणु एम.ए. इम्तहानु बि पूना यूनिवर्सिटीअ मां पासि कयमि। मां मैट्रिक क्लास खे सिन्धी पाढ़ींदी हुअसि ऐं ॿियनि टिनि क्लासनि खे संस्कृत सेखारींदी हुअसि। मुंहिंजे क्लास में अटिकल 30-35 शागिर्द हूंदा हुआ। छोकरा ऐं छोकरियूं ॿई हूंदा हुआ। उन्हनि शागिर्दनि में हिकिड़ो हो गोबिंद, अड़ी ! छोकरो, जो ॾिसण जो ठाहूको ऐं क़द बुत में सुठी शख़्यित वारो हो। कपिड़ा वग़ैरहः बि सुठा ऐं ढंग सां पाईंदो हो। ख़मीस जो कालरु लड़हियल या स्त्री न थियलु, कॾहिं न ॾिठोमांसि। हू छोकरो हिक ॻाल्हि में ॿियनि खां अलहदा लॻंदो हो। छो त हू उस जो टोपलो (Solo-hat) ज़रूर पाईंदो हो, जॾहिं क्लास खां ॿाहिर वेंदो हो। क्लास में ॾाढो गुम-गुम ऐं पंहिंजी ई धुन में लॻंदो हो। ॻाल्हाईंदो बि घटि हो। खेसि अणलखो जाचींदो महिसूसु थियुमि त हुन खे मिड़ेई अहिसास

कमतरी आहे। केतिरा दफ़ा त चुप चापु पहिरीं कतारनि मां उथी पुठियां आखिरीं क़तारनि में ख़ाली जाइ ते वेही रहंदो हो। हिक ड्रींहुं संदसि माता मूं सां गड्रिजण आई। मूंखे चयाईं त, ''महरबानी करे गोबिंद सां थोरो प्यार भरियो वहिंवारु करियो ऐं हटकंदे चयाईं थोड़ो ख़ासु ध्यानु रखोसि, ''मूं अजब मां ड्रांहुंसि निहारियो, मुंहिंजूं सुवाली निगाहूं ड्रिसी चयाईं कंहिं वक्तु कुझु थोरो अर्सो मूं पिणु टीचरु थी करे कमु कयो हो पर कुंवारे हूंदे ऐं बी.ए. में मुंहिंजो हिकु विषय मनोविज्ञान (Psychology) हूंदो हुओ। इन्हीअ सां मां समुझां थी त माउ खां वधीक टीचरु जो असरु ब्रार ते वधीक पवे थो।''

''छो, घर में को अहिड़ो प्राब्लम आहे छा? जो तव्हीं खेसि मदद न था करे सघो?'' मूं अल्बति मुन्तज़रु थी पुछियो।

''ख़ास प्राब्लम कान्हे। फ़कति जाचियो अथमि त जड्रहिं मुंहिंजो घोटु ब्रियनि पुटनि सां गड्रिजी ग्राल्हि-ब्रोल्हि कन्दा आहिनि त गोबिन्द खे ज़णु अकेलो करे छड्रींदा आहिनि। छो त हू नंढो पुटु आहे ऐं ब्रियो त उन ड्रांहुं ध्यानु घटि अथनि। हू पंहिंजे धन्धे धाड़ीअ जे ग्राल्हियुनि में मशग़ूल थी वञनि। इन्हीअ करे गोबिन्द खे ड्रिसां थी त खेसि अची अहिसासु कमतरी पैदा थी आहे। कंहिं ग्राल्हि में दिलचस्पी न थो ड्रेखारे न खाइण पीअण में ऐं न ई रांदियुनि-रूंदियुनि में। जंहिं लाइ मूंखे चिन्ता थी पेई आहे। मर्द त इहा ग्राल्हि समझनि न था। मूंखे अज़ु तव्हां सां गड्रिजण जो वीचारु आयो। तव्हां इन ब्रार खे तमामु सुठो नगरवासी बणाए सघो था। मुंहिंजो इहो विश्वासु, हिक टीचर जे नाते आहे।''

हिनजी ग्राल्हि बुधी मूं खेसि दिलदारी ड्रींदे चयो, ''फ़िकिरु न करि मां कोशशि कंदियसि।''

उन ड्रींहं खां पोइ मां गोबिंद में चाहु (Interest) वठण लग्रसि। मूं हिकु तज़ुर्बो करणु थे चाहियो त अध्यापक जो प्यारु ऐं ध्यानु ब्रार में कहिड़ो बदलाव ऐं फेरो आणे सघे थो। इतिफ़ाकु अहिड़ो थियो जो हिक दफ़े क्लास में को ब्रार चोरी कंदे पकिड़िजी पयो। शागिर्द उन छोकिरे खे सख़्तु सज़ा ड्रियण लाइ वाका करण लग्रा। मूं ओचतो गोबिंद डे मुख़ातिबु थी चयो, ''इन हालति में तूं जेकर छा करीं गोबिंद।'' गोबिंदु पहिरीं त हैरानु थी वयो। पोइ हालति समझी संदसि दिमाग़ु सोचण लग्रो। सोचणु शुरू कयाईं त वाह जो फ़ैसिलो बुधायाई। चयाईं, ''ड्रिसण में अचे थो त हुन कंहिं मजबूरीअ सबिबां चोरी कई आहे। सो जे खुलमु खुला माफ़ी थो घुरे त इहा ई संदसि वड्डी सज़ा आहे। इन्हीअ करे सुधरण लाइ हिकु वझु ड्रियणु ड्राढो सुठो थींदो। अजबु लग्रुमि जो सज़ो क्लासु गोबिंद सां सहिमत थियो ऐं गोबिंद खे शाबास-शाबास चवण लग्रा। गोबिंद जे अखियुनि में चमक अची वेई! मूं उहा चमक ड्रिठी ऐं समुझियुमि त तज़ुर्बे जी ड्राकणि ते पहिरियों कदमु चढ़ी चुकी आहियां। हाणे मां गोबिंद खां क्लास जा नंढा वड्डा कम कराईंदी हुअसि ऐं खेसि अस्सिटेंट मॉनीटर जो दर्जो ड्रेई छड्रियुमि। हुन में ज़णु नई जानि अची वेई। ज़िन्दगीअ में चाहु वधण लग्रुसि। स्कूल जे हर कंहिं प्रोग्राम में उभियुनि खुड़ियुनि ते बीही मदद कंदो हो। ख़बर पियमि त हू रांदियुनि में पिणु बेहदु होशियारु आहे ऐं छोकिरियुनि तोड़े छोकरनि सां हमदर्दीअ सां पेशि अची खेनि सही नमूने में रांदि सेखारण लाइ

तियारु थी वेंदो हो, मूं में हुन जो डाढो विश्वासु हो। जंहिं विश्वास अगिते हली इज़त ऐं प्यार जो रूप वरितो। हींअर खेसि का बि दिक्कत ईंदी हुई, घर में या बाहिरि, चुप चाप मूं सां अची हालु ओरींदो हो। मां संदसि दिल वठंदी हुअसि ऐं मसइले जो हलु गोल्हण में मदद कंदी रहियसि।

हिक दफ़े स्कूल जे मैट्रिक क्लास खे पिकनिक ते वठी वियासीं। 30-35 विद्यार्थी ऐं 4 अध्यापक गड्डिजी वियासीं। खड़ीकी में बोटनीकल बाग़ जो सैरु करण। घुमी फिरी उथियासीं त चपो चूरो करण खां अगु सख़्तु उज्र महिसूसु थी। हेडांहुं-होडांहुं निहारण लगासीं, के छोकरियूं पाणीअ जी तलाश में अगिते हलण लगियूं पर पाणीअ जो पतो नदारदु, अखियूं मथे खणी जींअ साम्हूं निहारियुमि त डिठुमि गोबिंद टोपले समेति परियां बाग़ जी जुणु चकास करे रहियो हो। मूं खेसि सडे चयो, ''गोबिन्द इन्हीअ कोट सूट ऐं टोपले सां त तूं जुणु प्रोफेसरु पियो लगीं'' गोबिंद खां टहिकु निकिरी वियो ऐं हू निहायत ख़ूबसूरत इन्सानु थे लगो। हिकदमु टोपलो मथे तां लाहे हथ में झले अगियां अची चयाई, ''फरिमायो को खासि कमु?'' बिल्कुल हाणे तूं इहो टोपलो मथे ते भली पाइ ऐं वञी पाणीअ जी तलाश करि। किथे हिन बाग़ जो माल्ही वेठो हूंदो ऐं पिणु ऑफिस बि ज़रूर हूंदी।

'ओ.के. दादी फिकिरु न करियो मां पाणीअ बिना न मोटंदुसि।''

मूं रड़ि करे चयो, ''इएं न ! तूं वापसि ज़रूर मोटन्दें।'' लेकिन इन खां अगु हू वड्डा कदम खणी अगियां हलियो वियो।

असीं पाण में इन्हीअ गोबिन्द जी चर्चा करे रहिया हुआसीं, त हुन में केतिरो न फेरो अची वियो आहे। हू त लिकलु लालु आहे। हुन लाइ का बि गाल्हि नामुम्किन कीन आहे।''

अटिकल अध कलाक अंदरि डिसूं त परियां गोबिंद पाणीअ जो वड्डो मटको बिन्हीं हथनि में झले वधन्दो पयो अचे। यकदमु बु छोकरा खेसि मदद करण लाइ अगिते डोड़िया। लेकिन हुन पाण मटको खणी अची मुंहिंजे अगियां रखियो ऐं कोट जे खीसे मां बु गिलास कढी वरताईं। सभु शागिर्द खेसि वाह वाह करे वराए विया। हुन नम्रता सां चयो त मां ऑफीस में वञी मैनेजर सां गड्डिजी खेसि वेनिती करे पाणी वठी आयुसि।

बस मूंखे त अहिड़ी ख़ुशी थी जो मूं छिके खणी गोबिंद खे भाकुरु पातो! एतिरे में छोकरा खेसि हंज खणी वाह गोबिंद ! वाह गोबिंद ! चई फेरा पाइण लगा। मुंहिंजूं अखियूं आलियूं थी वेयूं ऐं चयुमि:

मुंहिंजो तजुर्बो काम्याबु वियो।

———

नवां लफ़्ज़ :

गुमसुम हुजणु = बेसुर्त हुजणु। **मुंतिज़रु** = इंतिज़ारु करणु।

दिलदारी = आथतु। **मुखातिबु थियणु** = दूबदू ग़ाल्हाइणु, आम्हूं साम्हूं ग़ाल्हाइणु।

अलहदा = अलग़ु। **तजुर्बो** = आज़मूदो।

:: अभ्यास ::

सुवाल: I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब 10-20 लफ़्ज़नि में ड्रियो:-

(1) 'मुंहिंजो तजुर्बो' रचना में इन्सान खे कहिड़ी सिख्या मिले थी?

(2) लेखिका एम.ए. जो इम्तिहानु किथां पास कयो?

(3) गोबिंद माउ लेखिका खे अची छा चयो?

(4) गोबिंद ब्रियनि ब्रारनि खां अलहदा कीअं लग़ंदो हो?

(5) हिक टीचर ते गोबिंद माउ जो कहिड़ो विश्वासु हो?

सुवाल: II. हेठियनि सुवालनि जा जवाब 50-60 लफ़्ज़नि में ड्रियो:-

(1) अध्यापक जो प्यारु ऐं ध्यान ब्रार में कहिड़ो बदलाउ ऐं फेरो आणे सघे थो? समुझायो।

(2) गोबिंद माउ अध्यापिका खे अची कहिड़ी प्राब्लम बुधाए थी?

(3) लेखिका जो तजुर्बो कीअं काम्याबु थियो? समझायो।

सुवाल: III. हेठियां हवाला समुझायो:-

(1) ''छो, घर में को अहिड़ो प्राब्लम आहे छा?''

(2) ''ओ.के. दादी फिकिर न करियो मां पाणीअ बिना न मोटंदुसि।''

●●

(6)

परी

– हरी हिमथाणी

लेखक परिचयः-

हरी आसूमल हिमथाणीअ जो जनमु 13 फरवरी 1933 ई. ते ग्रोठ हिसब ज़िलो नवाबशाह सिन्धु में थियो। विरहाङे बइदि अजमेर अची रेल्वे जी नौकरी कयाईं। संदसि 18 किताब, 10 नॉविल ऐं 8 कहाणियुनि जा मजमूआ छपियल आहिनि:- नॉविल- 1. अभाग्रिणि (1954ई.) 2. डिंगियूं फिड्रियूं लकीरूं (1977ई.), 3. रात जो ब्रियो पहरु (1983ई.), 4. माज़ीअ जां ड्रंग, गुल जलनि पिया वग़ैरह। कहाणी संग्रह- 1. अरचना रचना (1977ई.), 2. अचेतन (1993ई.), 3. उड्रामंदड़ अरमान (1998ई.)।

इनाम- 1993ई. में अखिल भारत सिन्धी ब्रोली ऐं साहित्य सभा पारां इनाम, हरूमल सदारंगाणी गोल्ड मेडिल (1995ई.), 1993ई. में राजस्थान सिन्धी अकादमी पारां नॉविल ते, 1996 में सामी पुरस्कार, 2002ई. में 'समय' नॉविल ते साहित्य अकादमी पुरुस्कार, राष्ट्रीय सिन्धी भाषा विकास परिषद (भारत सरकार) पारां लाईफ़ टाईम अचीवमेन्ट अवार्ड हासुल। कहाणियुनि ऐं नाटकनि जो वक्त बि वक्त आकाशवाणीअ तां प्रसारण। जज़्बात जो छोह, प्रेम जी गहराई ऐं इन्सानी संब्रंधनि ते पक्की पुख़्ती सवली आम फ़हम वणन्दड़ ब्रोलीअ में रचना कन्दड़ लग्रातार सिन्धी साहित्य जा घड़ा भरे रहियो आहे।

हिन कहाणीअ में वार कटाइण वारी सुन्दरीअ जे मन जी हालति जो दिलचस्प ऐं असराइतो चिट चिटियलु आहे।

जीत नेठि सुन्दरीअ जी थी हुई। हूअ ठरी गॾ थी पेई हुई। संदसि ख़ुशीअ जो को पारु न हो। चवन्दा आहिनि, औरत हेठियों पुड़ आहे, पर हिते हिन मामले में इहा चवणी उल्टी साबित थी हुई।

सरला ऐं सुन्दरी साग़ीअ ऑफ़ीस में गड्डोगड्ड टेबल ते कमु कन्दियूं हुयूं। सरला अक्सर सुन्दरीअ खे संदसि डिघनि वारनि तां टोकीन्दी हुई। दुनिया अलाइजे किथे वञी पहुती आहे, तूं अञां अरड़हींअ सदीअ में पेई हलीं। हेड्डा डिघा वार को ठहनि था छा? बॉब कट में सौ सहिंज आहिनि। कंगो फेरण बि सवलो। जड्डहिं मथे में कपहि फुटण लग़न्दइ, तड्डहिं पतो पवन्दुइ त घणे वीहें सौ आहे।

सुन्दरी टहिक डेई खिली ड्डींदी हुई। जेतोणीकु सरला जूं के ग़ाल्हियूं खेसि दिल सां लग़न्दियूं हुयूं। स्नान करण खां पोइ वार सुकाइणु वड्डो आज़ार थी पवन्दा हुआ या स्नान करण वक्त उहे बदन सां इएं चुंबड़ी पवन्दा हुआ, ज़ुणु बलाऊं, लेकिन डिघनि वारनि में जेका सुन्दरता आहे, तंहिं खां संदसि हीअ सखी अणज़ाणु आहे। चेल्हि ताईं डिघा वार ई त औरत जे सूंहं में इज़ाफ़ो था आणीनि। ख़ास करे मोकल जे ड्डींहुं घर में रहन्दे हूअ वारनि खे खुलियल रखन्दी हुई। तड्डहिं संदसि रूप में को निखार ईन्दो हो! सूंहं सां गोया ब्री का सूंहं अची गड्डिबी हुई।

कमरे में दर ते भरिसां रखियल गोदरेज अलमारीअ वटां लंघन्दे, आदम कद आईने में ज़रूर लीओ पाईन्दी। कड्डहिं त कन खनण लाइ बेसुध बणिजी बीही रहन्दी। अहिड़नि ई किनि खिणनि में मोहन हिक ड्डींहुं संदिस पुठियां अची बीठो हो। खेसि ब्रांहुंनि जे घेरे में आणे, ग़िल सां ग़िल मिलाए चयो, ''हाणे ड्डिसु कीअं थो लगे?''

सुन्दरीअ मुर्की ड्डिनो हो। बेहदि ई मधुर झीणे आवाज़ में चयो हुआईं, ''अर्ध नारीश्वर''।

उन सुन्दरीअ खे छा थी वियो हो!? मोहन खे न रुग़ो इन ग़ाल्हि जो ताज़ुब हो पर डुख बि थी रहियो होसि। छा हीअ उहाई सुन्दरी हुई, जंहिं वारनि वधाइण जा वड्डा वस कया हुआ। आधीअ रात ताईं लेप लग़ाए ज़ुणु तपस्या में वेठी हून्दी हुई, ऐं हाणे उन्हनि ई वारनि मथां कैंची हलाराइण लाइ तियार थी वेई आहे !

इहो त हिन बि ज़ातो थे त इहा दूंहीं किथां दुखी हुई ! सरला खेसि पाण जहिड़ो बणाइण थे चाहियो। जड्डहिं कि बॉब कट वारनि में हूअ सफ़ा खोब़िली लग़न्दी हुई। मोहन खे ड्डिठी बि न वणंदी हुई।

सरला चयो, ''मां दिलीप खे को हर्फ़ त चवां, वेचारो सज़ो विछाइजी वेन्दो आहे। तूं इन ख़सीस ग़ाल्हि पोइ मोहन खे नथी मञाए सघीं? मूंखे उन्हनि औरतुनि ते कियासु ईन्दो आहे, जेके मुड़िसनि अग़ियां अब़ालियूं ऐं बेवसि थी हलन्दियूं आहिनि, या ब्रियनि लफ़्ज़नि में इएं चवां त संदनि औरतपणे ते हैफ़ आहे।''

सुन्दरीअ खे झोब़ो आयो हो त सरला ही छा चई वेई हुई? ब्रियनि औरतुनि जे ओट में इहा संई सिधो मथिसि जुल्ह हुई त हूअ मुड़िस अग़ियां कींअ लाचार ऐं बेवस आहे, ऐं इन कारण खेसि

मथिसि तरस अची रहियो हो। उन ड़ींहं खां ई हुन पक्को पहु करे छड़ियो त हूअ कीअं बि मोहन खे मञाए रहन्दी।

ऐं कुझ ड़ींहंनि खां हलंदड़ उन्हीअ थधीअ जंगि में मोहन पंहिंजा हथियार फिटी करे छड़िया। घर जो वातावरण बूसाट सां एड़ो जकिड़ियलु हो जो कड़हिं त साहु खणणु बि दुश्वार थी पवन्दो हो। सुन्दरीअ जो मुखड़ो जंहिं मुर्क सां महकन्दो ऐं बहिकन्दो हो, उहा अदम पैदा हुई। कम सांगे कुझ ग़ाल्हायाईं त वाह, न त चुप ई चुप। मोहनु खेसि भाकुर में भरे संदसि दिल बहिलाइण जा कहिड़ा बि तौर तरीका अख़त्यार करे पर सुन्दरी जुणु निर्जीव।

हिक ड़ींहुं खेसि गिराटड़ी पाए मुर्की चयाईं, ''पाण खे डिठो अथेई त हिननि थोरनि ड़ींहंनि में तूं छा थी वेई आहीं? जिन वारनि हेड़ो वणाउ पैदा कयो आहे, तिन खे सुभाणे ई वञी कटाए अचु। थीउ तूं बि सरला जहिड़ी। तुंहिंजा वड़ा वार खेसि अखियुनि में चुभन्दा आहिनि न।'' ऐं पोइ मन ई मन में हिन सरला खे कशे गार डिनी हुई।

सुन्दरी उन्हनि खिननि में जुणु मोतिए जे गुलनि जियां हल्की थी वेई हुई। संदसि रोम रोम मां जुणु हुबकार फुटी निकती हुई।

हिन वार बॉब छा कराया जुणुकि ज़िन्दगीअ जो वड़ो मकसद हासिल कयो हुआईं। सरला सचु ई चयो हो, खेसि लगो हूअ उम्र में पंज साल नन्ढी थी वेई हुई। आईने अन्दर जुणु को गुलाब टिड़ियल हो। डाइ कराइण ते वारनि जी शोभा तिहाईं वधी वेई हुई। हींअर त गोल्हींदे बि किथे को अछो वारु नथे डिठो। हिन मोहन जे गले में पंहिंजूं बई बांहूं विझी चयो, ''बुधायो, हींअर कीअं थी लगां?''

''तमामु सुठी।''

''इहो बाहिरां था चओ।''

मोहन टहिकु डेई खिली डिनो हो। संदसि दिल में आयो त औरत केतिरी न सादी आहे, जो कंहिंजी चट में पंहिंजी मेड़ियल पूंजी विञायो विहे!.... ज़ुल्फ़ुनि जी घाटी छांव खां हू महरूम थी वियो हो। अलबति नाले में सो वार ज़रूर हुआ। मन खे मारे संदसि ख़ुशीअ खे बरकरार पिए रखियाईं।

मोहन खे सुन्दरीअ जे ज़ुल्फ़ुनि सां जेको लगाउ या मोहु आहे, उहो संदसि उन रात ई भंग थी वियो हो। संदसि चेहरे ते ज़ुल्फ़ पखेड़े, कल्पना में हू नज़ाण किथे जो किथे पहुची वेन्दो हो, लेकिन हाण न उहा कल्पना हुई ऐं न उड़ाम। मुखड़े जे सुन्दरता खे जुणु को ग्रहण लगी वियो हो।

होड़ांहुं सुन्दीअ जे हलति चलति में अजीब किस्म जो फेरो अची वियो हो। हींअर हूअ हले नथी जुणु बाल वांगुरु कुड़े थी। पेरनि जे तिरियुनि में जुणु स्प्रिंग फिट थी विया हुआ।

हाणे त स्नान जाइ मां निकरन्दे ई उमालक कंघो हथ में खणन्दी हुई, न त हूंअं गपल देर ताईं

छंडींन्दे रड़ि निकिरी वेन्दी हुअसि, पोइ बि वारनि में फुड़ा फाथा ई रहन्दा। फ़र्श सञ्रो पाणी पाणी, ञ्रणु मींहुं वसियो आहे। इन्हीअ हलाखीअ खां कड्रहिं त स्नान खे तिलांजली ड्रेई छड्रीन्दी हुई। हींअर मथो बि हल्को त बुत कि हल्को।

खेसि उहे ड्रींहं याद ईन्दा हुआ, जड्रहिं वारनि वधाइण जे दीवानगीअ जो मथिसि ख़फ़्तु सवारु हूंदो हो। पंहिंजी उन चरी चाहत ते खेसि हाणे खिल ईन्दी हुई। खेसि इहो बि अहसासु थींदो हो त कंहिंजे सुहिबत जो वाक्ए ई असरु थिए थो, उनजो शर्फ़ हूअ सरला खे ड्रींदी हुई। हूअ जे संदसि पुठियां हथ धोई न लग्रे हा त अञ्रु ताईं ग़ौरो मथो खंयो पेई हले हां। रुग्रो अञ्रु ताईं छो, सञ्री उम्र।

हिक लड्डा सरला खेसि मज़ाक मां इएं बि चयो हो, ''सुन्दरी, तूं साड़ीअ बजाइ पड़ो ऐं चोलो पाइ, पोइ तोखे इहा डिघी चोटी इएं सूहंदी छा, क्या बात!''

सुन्दरीअ टहिकु ड्रेई खिली ड्रिनो हो। तड्रहिं उन्हनि खिननि में हुन पाण खे लठि ते हलन्दड़ बुढड़ीअ जे रूप में पसियो हो। खेसि लग्रो हो, लाशक ही डिघा वार नथा ठहनि, ऐं ब्रियनि बि अनेक हलाखियुनि खां छोटकारो मिली वेन्दो, ऐं मथां वरी जेको तानो लग्रो होसि, तंहिं त आकी बाकी संदसि निन्ड फिटाए छड्डी हुई। हुन मोको वठी मोहन सां ग़ाल्हि चोरी त हू ड्रांहुंसि अजब मां इएं निहारण लग्रो, ञ्रणु खेसि विश्वास ई न आयो त इहे अखर हुन को सुन्दरीअ जे वातां बुधा हुआ। चयाईसि, ''चरी, धतूरो त न खाधो अथेई?, तूं वार कटाईन्दीअं !?'

''हा, पोइ छाहे? सरला खे ड्रिसो न, खेसि बॉब कट वार कीअं न ठहनि था।''

''ठहनि था या छेग़िरी थी लग्रे... हाणि समुझियुमि त इहा बाहि किथां विचुड़ी आहे।''

''तव्हां त ड्राड्रे पोटाणियूं ग़ाल्हियूं कन्दा आहियो।''

''ऐं तूं अञ्रु जे ज़माने जी ग़ाल्हि थी करीं, इएं न?''

''हाणे छड्रियो बहस खे, मूंखे ख़ुशीअ ख़ुशीअ मोकल ड्रियो।''

''कमाल थी करीं ! तोखे ख़ुशीअ सां मोकल ड्रियां त वञी वार कटाए अचु। इहो बि सोचियो अथेई त पोइ तूं कीअं लग़न्दीअं?''

''सो त पोइ ड्रिसिजो।'' सुन्दरीअ मोहिणी मुर्क मुर्कन्दे चयो।

''धूड़ि ड्रिसन्दुसि।'' मोहन ख़फ़े थी हिकारत मां चयो। उते ई ब्रीअ खिन चयाईं, ''मुंहिंजे अखियुनि अग़ियां आसमान पियो फिरे त इहो सभु तो चयो आहे !?''

सुन्दरी संदसि चपनि ते सन्हड़ियुनि आडुरियुनि सां रान्दि रमण लग़ी। ''पोइ मां तव्हांजे माठि खे 'हा' समझां न?''

''मूंखे त माठि लग़ी वेई आहे ऐं तूं माठि खे 'हा' थी समुझीं?''

सुन्दरीअ टहिकु ड़ेई खिली ड़िनो, ''चङो छड़ियो, दर-गुज़र करियो। ख़सीस ग़ाल्हि तां हीअं मुंहुं न घुंजायो।'' ऐं इहे पल हूअ ज़ुणु संदसि दिल में समाइजी वेई हुई।

वक्तु गुज़िरन्दो रहियो। सुन्दरीअ पचर छड़े ड़िनी हुजे, इएं कीन हो। औरत खे इन ग़ाल्हि जो इल्म आहे त कहिड़े वक्त ते ढारो उछिलाइजे जो पौं ब़ारहं थिए। मोहन जेको सतें आसमान ते हून्दो हो, बोलाटियूं खाई हेठि अची सटिबो हो।

''एड़ो छो था सोचियो?''

''सोचियां थो तूं पंहिंजी सूंहं खे पाइमाल करण ते छो संदिरो ब़ुधी बीठी आहीं?''

सुन्दरीअ टहिक ड़ीन्दे खिली ड़िनो, ''संदिरो ब़ुधो अथमि!''

''इहो ख़्याल दिल मां कढी छड़ि सुन्दरी। हिन भूतणीअ अलाए तोते कहिड़ो जादू हलायो आहे! तुंहिंजो लिहाज़ थो मारे, न त घर में पेरु रखणु न ड़ियांसि। बुछिड़े बुण जी।''

सुन्दरीअ मुर्की ड़िनो, ''छो था कंहिं लाइ इएं चओ?''

''मूंखे त तोते माठि थी लगे़ त तूं मिसाल वारी हिनजो थी ड़ीं त बॉब कट वारनि में केड़ी न सुठी थी लगे़। सुठी थी लगे़ या बिनह खोती थी लगे़। जंहिंजी क्याड़ी सफ़ा चट आहे, तंहिं लाइ छा चइजे?''

हूंअं त मोहन जी सरला सां कोन पवंदी हुई। हूअ खेसि ड़िठी बि न वणन्दी हुई। रूबरूअ जी ग़ाल्हि निराली आहे, बाकी पर-पुठि हिन कड़हिं बि खेसि नाले सां न सड़ियो हो। को न को गुथो लफ़्ज़ु संदसि ज़िबान ते उमालक तरी ईन्दो हो। उन ड़ींहुं बि खेसि ड़िसी संदसि वातां निकिरी वियो हो, ''सुन्दरी अचेई थी झिंडूली।''

''इहो छा?'' सुन्दरीअ खां छिर्कु भरिजी वियो हो, ''ब़ुधी वठे त....''

ऐं सरला साम्हूं अङण में बीठी हुई।

मोहन ते मन में वक्ते इहे वीचार बि उथन्दा हुआ त सुन्दरीअ जे चाहना अगि़यां छो थो अड़ बणिजे? मथिसि पंहिंजो सभु कुझ निछावर करण वारो, संदसि इहा ख़सीस इच्छा बि नथो रखे?

तड़हिं उन्हनि खिननि में सुन्दरीअ खे एड़ी ख़ुशी थी हुई, गोया सज़ी सृष्टीअ जी ख़ुशी संदसि भाकुर में अची समाई हुई।

ज़िन्दगीअ जो इहो केड़ो न कौड़ो सचु आहे जो इन्सान ज़ाण या अणज़ाणाईअ विचां पंहिंजे चाहनाउनि जो ख़ुदि ख़ात्मो आणींदो आहे ! इहो सचु हो त सरला हुन पुठियां बाहि ब़ारे ड़िनी हुई पर उन बाहि में टपो त ख़ुदि पाण ई ड़िनो हुआईं! कीअं बि हूअ मोहन खे मञाइण में कामयाब थी

वेई हुई, ऐं तड़हिं उन ख़ुशीअ में हिन पंहिंजे दिल जा दरवाज़ा खोले छड़िया हुआ। मोहन मज़ाक में चयो, ''सुभाणे मां बि मथे ते पाकी घुमाए थो अचां। मथो पोइ कीअं बि लगे, पर अछनि वारनि जो त ख़ात्मो थीन्दो। धेजांइ तंगि कयो आहे।''

सुन्दरीअ खे इहा मज़ाक ड़ाढी वणी हुई। कड़हिं कड़हिं खेसि सरला जो चर्चो बि याद ईन्दो हो, ''सुन्दरी तूं साड़ीअ बजाइ चोलो ऐं पड़ो पाइ...''

हूअ मन ई मन में मुर्कन्दी हुई ऐं उन्हनि खिननि में सरला खेसि अज़ख़ुदि प्यारी भासंदी हुई।

शुरूअ में त वरी बि ठीक हो पर ब्रिए दफ़े सरला जे चवण ते हिन अञा बि नन्ढा वार कराया हुआ, नन्ढा छा कराया हुआ, वारनि मथां जुणु कैंची फिरी वेई हुई। हुन जड़हिं आईने में पंहिंजो चेहरो ड़िठो त हथनि मां जुणु कुझ किरी पियुसि। ''अला! ही छा थी वियो?'' सजो आईनो जुणु कंहिं घाटे धुंध पुठियां ढकिजी वियो हो। खिन पल लाइ अखियुनि अगियां अन्धेरो छांइजी वियो। उन धुन्ध में हूअ पंहिंजो चेहरो न, पर कंहिं मठ भिक्षुणीअ जो चेहरो ड़िसी रही हुई। जिन जो नालो वार, उहे हुआ किथे? हुन दांहं कई, ''सरला ही छा थी वियो?''

सरला अण-ज़ाणाईअ मां पुछियो, ''छा थियो?''

''ही मुंहिंजा वार....'' गलो भरजी आयो होसि, ''हींअ हेड़ा नन्ढा वार?''

''तो ई त चाहियो हो इएं!''

''मूं किथे चाहियो हो। किथे चाहियो हो सरला, इएं किथे चाहियो होमि।'' हूअ रुअणहारकी थी वेई। आईने में निहारे न पेई सघे। मोकरे मुंहं ते कुरूकट वार मागुहीं बुछड़ा थे लगा। खेसि मन में आयो त आईने खे भञी टुकिड़ा टुकिड़ा करे छड़े.... आईने खे या पाण खे?- सचु त हूअ अन्दर में टुकिड़ा टुकिड़ा थी वेई हुई। पंहिंजे कए जो न को वेजु न को तबीब। पंहिंजो हीउ चेहरो किथे लिकाईंदी? उन वक्त त ऑटो रिक्शा करे घर पहुची वेई, पर तड़हिं बि खेसि हर घड़ीअ अहिड़ो ख़्याल पिए आयो त ऑटो जेकर मुहाड़ीअ वटां कपिड़े सां ढकियल हुजे।

घर पहुची हूअ गोदरेज जे आईने अगियां को वक्तु बुत बणिजी बीठी रही। साहु बि खज़ियुसि थे अलाए न। हूंअं इन ई आईने में, लंघन्दे पाईन्दे ड़ींहं में अलाए घणा दफ़ा लीआ पाईन्दी हुई। आईने सां अति मोह होसि। पर हींअर?, केरु बि चवन्दो त हीउ संदसि वार हुआ?..... इहे वार केड़ांहुं विया, जेके हूअ सुम्हण वक्त विहाणे ते फहिलाए छड़ीन्दी हुई। हूअ झुरन्दी, गुरन्दी, रुअन्दी रही। आंसूं गिलनि तां झर-झर गुड़ी रहिया हुआ। आईने में संदसि अक्सु धुंधिलो धुंधिलो पिए ड़िठो।

नौकरी न कंदी हुजे त जेकर सजो साल घर खां ब्राहिरि न निकरे। उज़रु कयो घर में वेठी हुजे। ब्रु टे ड़ींहं मोकल ते रहण बइदि नेठि खेसि ऑफीस वञिणो पियो। उते बि हूअ केतिरियुनि ई निगाहुनि

जो मर्कज़ बणी रही। ऑफीस मां मोटन्दे पंहिंजी ई घिटीअ मां लंघण दुश्वार थी पियो होसि, ''अड़े, ही सुन्दरीअ खे छा थी वियो आहे!?''

उतेई कंहिं ब्रीअ आखियो, ''मथे में एड्डियूं जूंकं हुअसि छा, जो असुल सफ़ा इएं....''

लड़ीअ शाम ज़ालूं पंहिंजनि घरनि जे चांउठुनि ते बीठियूं हून्दियूं हुयूं ऐं आवाज़ हुआ, जो संदसि पुठियां ज़ुणु काहीन्दा ईन्दा हुआ। घरि पहुची हूअ उमालक आर्सीअ में निहारींदी हुई। नक, चप ऐं कन इएं लगुन्दो हो त सभु जा सभु ज़ुणु काहींदा ईन्दा हुआ। घरि पहुची हूअ उमालक अर्सीअ में निहरींदी हुई। नक, चप ऐं कन इएं लगुन्दो हो त सभु जा सभु ज़ुणु चेहरे ते चंबुड़ाया विया हुजनि। संदसि असली चेहरो गुम हो, उहो आर्सीअ में किथे बि डिठो नथे।

मोहन खे लगुन्दो हो त सरला जा चयल बद-लफ़्ज़ ज़ुणु खेसि सराप थी लगा हुआ। गोया संदसि बुई ब्रांहूं कटिजी वेयूं हुयूं। हींअर हू कंहिंखे भाकुरु पाए? सुन्दरीअ जी उहा कोमलता, सरलता ऐं सूक्ष्मता ज़ुणु वारनि सां गड्डु लुढ़ी वेई हुई। जंहिं चेहरे खे हू चाह सां चुमन्दो हो, उहो चेहरो हो किथे? वारनि जो त हू नालो बि नथे गिन्हीं सघियो। बस, मथे ते नाले मात्र वार हुआ।

खेसि रुअण ईन्दो हो, पर समुझी न पिए सघियो त हू पाण ते थो रोए या सुन्दरीअ ते? कड्डहिं त सुन्दरीअ ड्रांहुं निहारीन्दे संदसि अखियूं बूटिजी वेन्दियूं हुयूं। हूअ केड्डी न बदज़ेबी थी लगे। साग़िए वक्त संदसि पीड़ा खां बि अण-वाकुफ़ न हो। उन रात सुन्दरीअ केड्डो न रुनो हो ! जीअं जीअं खेसि परचाइण जी थे कयाईं, तीअं तीअं हूअ वधीक छुली थे पेई। तड्डहिं मोहन खे लगो हो त ग़ल्तीअ जो इहो अहसासु ई आहे, जेको खेसि पल पल डुखोए, झोरे ऐं पघारे थो। अहिड़ो अहसास जीवन में हिक वड्डी वथु आहे।

हू खेसि भाकुर में भरे बार बार चुमन्दो रहियो, ''सुन्दरी, तो हीअं पंहिंजी दिल छो हारी आहे? वक्तु ईन्दो जो मां वरी अगे जियां तुंहिंजी ज़ुल्फ़ुनि जे घाटी छांव में आसाइशु वठन्दुसि।''

सुन्दरीअ बुधो बि थे अलाए न! हुन जे कननि में त रुगो सरला जा ई अखर बुरी रहिया हुआ। ऑफीस में चयो हुआईंसि, ''सुन्दरी हाणे त मोहन तोखे 'परी' चई सड्डु कन्दो हूंदो। तूं सचु पचु लगीं बि 'परी' थी।''

''छा!?'' सुन्दरीअ फाटल अखियुनि सां ड्रांहुंसि निहारियो हो ऐं का देरि संदसि अखियूं फाटल जो फाटल ई रहियूं हुयूं।

नवां लफ़्ज़ :

सहिंज = सवलायूं।

हैफ आहे = लानत आहे।

मेड़ियल पूंजी = गड्डु कयलु धनु।

जुल्फ़ूं = वार।

इस्तलाह :

ठरी गुङ थियणु = तमामु घणो ख़ुश थियणु।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि जा हवाला ड्डेई मतलबु समुझायो:-

(1) चवन्दा आहिनि औरत हेठियों पुड़ आहे। पर हिते हिन मामले में इहा चविणी उल्टी साबितु थी हुई।

(2) मूंखे उन्हनि औरतुनि ते कियासु ईन्दो आहे, जेके मुड़िस अग्यिां अब्बालियूं ऐं बेबसि थी हलन्दियूं आहिनि या ब्बियनि लफ़्ज़नि में इएं चवां त संदनि औरतपणे ते हैफ़ आहे।

(3) औरत केतिरी न सादी आहे, जो कंहिंजी चट ते पंहिंजी मेड़ियल पूंजी विञायो विहे।

सुवालः II. हेठियनि सुवालनि जा जवाब खोले लिखो:-

(1) 'परी' कहाणीअ जो इख़्तिसारु लिखो।

(2) हरी हिमथाणीअ जे लिखणीअ जूं ख़ूबियूं बयानु करियो।

●●

(7)

ऐं.... अञां.... छो?

– नन्दलाल परसरामाणी

लेखक परिचयः-

नन्दलाल ईदनदास परसरामाणी जो जनम 16 जून 1933 में सुल्तान कोट (सिन्ध) में थियो हो। ही हैडमास्टर जे ओहिदे तां रिटायर थिया आहिनि। हिननि सिन्धी, अंग्रेजी ऐं तवारीख में एम.ए. ऐं बी.एड. कई आहे। हिननि खे राजस्थान सिन्धी अकादमी जयपुर पारां ब्र दफ़ा ईश्वरचन्द्र पुरस्कार सां नवाज़ियो वियो आहे। हिननि घणेई कहाणियुनि, कविताऊं, नाटक, नाविल, लिखिया आहिनि, जिनि मां मुख्य कहाणियुनि जा किताब- 'पर' जलियल प्यास, अपराजिता। कविताऊं- ख़्वाब, ख़्याल ऐं खिल, कहाणियूं ऐं नाटक- निमु जा पीला पन....। नॉविल- आभा ऐं झोलीअ में भरियो आकाश वग़ैरह आहिनि।

ऐं.... छो कहाणी खे अखिल भारत सतह ते पहिरियों नम्बर जो इनाम मिलियल आहे। हिन कहाणी में लेखक शराब पीअण सां पारिवारिक जीवन जो नाश ऐं स्त्रीअ जी सुजाग़ी ऐं दृढ़ निश्चय जो परिचय मिले थो।

''दादा तव्हां सां मिलणु थी चाहियां।''

बसि ! चिड़ीअ में हिक ई सिट हुई।

'कड़हिं' ऐं 'किथे' जे बारे में कुझु बि लिखियलु कीन हो। सभु कुझु मूंखे ई तय करिणो हो। सबब जी बि ज़ाण कोन हुई।

चिन्ता थियण लग़ी।

कुसुम खे तड़हिं खां सुञाणां, जड़हिं हूअ अञा गुल जहिड़ी कोमल ऐं मासूम गुड़ी हुई। फ्राक ऐं चोलीअ में परीअ जहिड़ी भासन्दी हुई। जड़हिं टहिक डेई खिलन्दी हुई त आस पास महिकन्दो हो। ड़िसंदे ई हुन लाइ प्यारु उमिड़ंदो हो। घर जे अङण में न अचे त ज़ुणु मन में ख़ाल थी पवन्दो हो। सज़ो ड़ींहुं विराण्डे में, छिति ते, खुलियल पधर में पेई ठेंग टपा ड़ींदी। मुंहिंजे श्रीमतीअ लाइ हूअ उहो रान्दीको हुई, जेको खेड़ींदो आहे। पंहिंजनि सां गड्डु हुनखे बि पेई खेड़ाईंदी कुड़ाईंदी हुई।

सचु पचु कुसुम सभ खे प्यारी हुई।

स्कूल जे होमवर्क करण लाइ मुंहिंजी मदद वठन्दी, आड़ा उबता सुवाल करे, मूंखे खिलाईन्दी रहन्दी हुई। माता पिता जी अकेली औलाद हुननि जी लाड़िली हुई। जेकी घुरन्दी हुई, सो मिलन्दो होसि। कंहिं बि शइ लाइ हुनखे 'न' कोन हुई।

बसि, हुन केवल खिलणु सिखियो हो। रुअण ऐं रुसण जी ज़ुणु हुनखे का ज़ाण कान हुई।

अहिड़े मासूम खे वक्त जे गर्दिश कोन बख़्शियो। शादीअ खे अञा ब़ साल बि कोन थिया हुआ, जो संदसि माउ-पीउ हिक हादसे जा शिकार थिया। पैदल पंहिंजे सईं दगि़ वञी रहिया हुआ त हिक जीप ड्राईवर जी लापरवाहीअ करे जीप हेठां अची विया। सभु कुझु ख़तमु थी वियो।

कुसुम मथां पहाड़ किरी पियो। गृहस्थ जे ख़ुशनुमा ख़्वाबनि ऐं जोभन जे जोश, माउ-पीउ जे विछोड़े खे कुझु हल्को ज़रूर कयो, पर संदसि याद सीने में सदा पिए रही।

शादीअ खां अगु अशोक सुठो छोकरु हो। सुडोल, सुन्दर देह वारो अशोक चाल चलन में बि मोचारो हो। विवाह खां पोइ कुझु वर्हि मज़े ऐं मस्तीअ में गुज़िरी विया।

शायदि इनकरे कुसुम माउ-पीउ जे ओचिते विछोड़े खे सही वेई।

वक्तु गुज़िरण ते अशोक जी अन्दिरियों रूपु ज़ाहिरु थियण लगो। संदसि समूरियूं कमज़ोरियूं ग़ाटु उभो करे, अची साम्हूं बीठियूं। कमज़ोर इरादे वारो इन्सान बुरायुनि सां विढ़न्दे घणो टिकी नथो सघे। जल्दु ई हारिजी थो वञे। अशोक आणि मञी हार स्वीकार कई। न चाहीन्दे बि गन्दगी भरियल दुब़णि अन्दरि फासंदो वियो। अन्दर वारो जानवरु हैवानियत सां हमलो करे हैबतनाक थी पियो हो।

पहिरीं सन्तान थियण खां पोइ अशोक बदिलिजण लगो। ऑफीस में कुझु नवां कर्मचारी बदिली थी आया हुआ। तिनि जे संगति में हुनखे पीअण जी आदत पइजी वेई। शुरूअ में हुनखे मज़ो मिलन्दो हो ऐं धीरे-धीरे शराब जो अन्दाज़ वधिजण लगो। हिक पैग खां अधु बोतल ताईं पहुची वियो।

शुरूअ में हू शराब खे पीअन्दो हो ऐं हाणे शराब हुनखे पीअण लगो। नसूं कमज़ोरु ऐं निसतियूं थियण लगसि। ख़ुशीअ जे खोज लाइ दुःखनि जे दरियाह में ग़ोता खाइण लगो।

बुधण में आयो हो त अहिड़ी डुखनि जी बाहि में हिक औरत बि पिए गिह जो कमु कयो। जेकी हूअ चवन्दी हुअसि, हू अखियूं ब़ूटे, बिना कंहिं सोच वीचार जे मञीन्दो हो। हू एतिरो जकिड़िजी

चुको हो, जो न हुनखे घर ब्रार जो को ख़्यालु हो ऐं न नौकिरीअ जी चिन्ता।

सुभावीक घर अन्दरि किलकिल ऐं कोलाहलु थियण लग्गो।

गुड्डी तड़िफण लग्गी। माउ पीउ जे ज़िन्दह हुअण करे शायदि हूअ पाण खे सम्भाले वठे हा, पर हाणे हूअ लाचारु थी पेई हुई। सभु कुझु चुपचाप सहन्दी रही।

कड्डहिं कड्डहिं असां सां मिलन्दी हुई। पंहिंजा दुखिड़ा बुधाए रुअन्दी हुई। मूं ऐं मुंहिंजी श्रीमतीअ हिम्मथ-अफ़ज़ाई कन्दे हिक दफ़े खेसि चयो, ''तूं हिति पेके मकान में अची रहु। असांजो हर वक्तु साथ रहन्दुव। मतां अशोक असांजे करे सिधे रस्ते ते अची वञे।''

पर कुसुम साफ़ इन्कार कयो। चयाईं,

''दादा ! हिति अची रहण सां थी सघे थो साहुरनि में मुंहिंजे लाइ ग़लत वीचारु पैदा थिए।''

असांजे दिलासनि सां हुनजे अन्दर जी मायूसी ज़रूर घटि थीन्दी हुई।

हुनजो आतम ब्रलु ऐं विश्वासु वधाईंदे चवन्दा हुआसीं, ''तुंहिंजे समझदारीअ ऐं प्यार जे हलति सां अशोक ज़रूर संओं रस्तो अख़ित्यारु कन्दो। ज़िन्दगीअ जे लड़ाईअ में डुखनि जा डूंगर डारणा पवन्दा, पोइ ई सुखनि जे सागर में आनन्द मिलन्दो आहे। हाणे जे सुख रुसी विया आहिनि त अजु जा डुख घणा डींहं कोन रहन्दा। निराश न थीउ। निराशा ब्रियो मौतु आहे। आशा रखी वक्त खे मुंहुं डे। तूं ज़रूर फ़तहयाबु थींदीअं।''

कुझु डींहं गुज़िरी विया।

हिक दफ़े अची चयाईं,

''दादा ! मां अशोक खां डिज़ुण लग्गी आहियां। मन में हुन लाइ नफ़रत बि पैदा थिए थी, छा करियां? समुझी नथी सघां।''

''चिन्ता न करि। सभु ठीकु थी वेन्दो। पाण खे एतिरो कमज़ोरु कोन करि।'' मूं चयो। ब्रियो घणो आथतु ड्रिनोसीं।

नएं सिर विश्वास सां हूअ हली वेई।

मुंहिंजो पंहिंजो अकीदो आहे। वक्त जो वहिकरो हिक जहिड़ो कोन थो वहे। रुख़ु बदिलिजणु कुदरती नेमु आहे।

अशोक लाइ बि उम्मेद हुई त हिक डींहुं हू ज़रूर पाण खे संभाले वेन्दो।

वक्तु गुज़िरन्दो रहियो।

हिक डींहुं अचानक घर आई। अखियूं आलियूं हुअसि। मिली त बन्द भज़ी पिया, ज़ुणु

बरसाती नेसारा वहण लगा। चुप ई न करे। समुझी वियुसि, अशोक एतिरो सतायो जो मनु हल्को ई कोन थो थिएसि।

जडुहिं माठि कयाईं, तडुहिं देवीअ (मुंहिंजी धर्मपत्नी) पाणीअ जो गिलास ड्रिनुसि। ढुकु पी सामत जो साहु खंयाईं। मूंखे तडुहिं बि हिम्मथ कोन थी जो कारणु पुछांसि। अगु एतिरो रुअन्दो हुनखे कोन ड्रिठो होमि। मुंहिंजे अखियुनि में बि नमी अची वेई, पर पाणु सम्भाले वरितुमि। सोचियुमि, 'मां पाण ई रुअंदुसि त हुनखे कहिड़ो आथतु ड्रेई सघन्दुसि? मुंहिंजी कमज़ोर जज़िबात कुसुम लाइ केवल ना-उम्मेदी आणीन्दी।'

''दादा !'' कुसुम चवण लगी, ''तव्हां ई मुंहिंजा माउ पीउ आहियो। कंहिं वटि वञां?''

मूं हुनजे मथे ते हथु रखियो। महिसूसु थियो त हुनखे मां वर्ह्यनि खां पोइ थो ड्रिसां। हूअ उहो कोमल गुड्री कोन्हें ऐं न ई फ्राक ऐं चोलीअ वारी खिलन्दड़ कुड्रन्दड़ परी आहे। अरे ! हूअ त हड्रियुनि मथां मामूली गोश्त जो तहु आहे, जंहिंखे झुरड़ियुनि वारी चमड़ीअ ढके लिकाए छड्रियो आहे... उमिरि में मुंहिंजी भेण 'दादी' पिए लगी। चहिरे जे घुंजनि हुनजी सजी नाज़ुकता खसे वरिती हुई। गुलाबी सूंहं खे कारहिं ढके छड्रियो आहे। अखियुनि हेठां कारा धुबा साफ़ पिए ड्रिसण में आया। ड्रन्दनि बिना ग़िल पोला थी पिया हुअसि। ज़ुणु सुकल दुब्रणि मंझि ऊन्हियूं खड्रूं। खिंचाव बिना देहि ढिली थी हुअसि। मन सां गड्रोगड्रि तन बि भुरिजी पियो होसि।

नारीअ जो पीड़ियलु, जीअरो जागन्दो, हलन्दड़ चलन्दड़ कंकाल मुंहिंजे साम्हूं हो। ज़ाहिरु हो त अशोक मर्द ज़ाति खे गन्दी गारि ड्रेई गन्दगीअ जे ग़र्त में उछिलायो हो।

कुसुम जी अहिड़ी हालति ड्रिसी कुझु खिन्न मां सुनि में अची वियुसि। जीअं तीअं पाणु सम्भाले चयोमांसि, ''पुट ! बुधो आहे त अशोक नौकिरी छड्रे ड्रिनी।''

''नौकिरीअ खां जवाबु मिलियुसि.... कोई कमु ई न कन्दो त केतिरो कोई ड्रींदो रहन्दो?''

ड्रिठुमि त हुन में शक्ती अची वेई। रुअन्दे मन तां कुझु ब्रोझु बि हल्को थियो होसि। सभ खां वड्री ग़ाल्हि इहा ड्रिठमि त ड्रुखनि हुनखे विद्रोही करे छड्रियो हो। विद्रोह जी भावना हुनजे मन जे 'कमज़ोरीअ' खे भज़ाए, अन्दर में कुव्वत पैदा कई हुई। वक्तु अचण ते अहिड़ी हिम्मथ वारी संओं कदमु ई खणन्दी।

मूंखे थोरी तसल्ली थी।

''हाणे हू मकान था विकिणणु चाहीनि।''

मूं साफ़ साफ़ समुझणु पिए चाहियो। पुछियुमि,

''कहिड़ो?''

''हितां वारो... मुंहिंजो पेको मकान।''

समुझी वरितुमि। ''अशोक खे पैसे जी तंगीअ अन्धो करे छड्डियो आहे।''

''अञां गंदियूं आदतूं अथसि?''

''अञा घणो बिगिड़ी वियो आहे।'' हुन बुधायो।

''जंहिं मकान में तव्हीं रहो था, उहो बि त अशोक जो पंहिंजो आहे न?'' मूं पुछियो।

कुसुम उभो साहु खंयो... थोरो हल्को थी बुधायाईं, ''नौकिरीअ जे न हुअण करे पंहिंजो मकानु भाउरनि खे विकिणी छड्डियो अथाईं। घणो ई समुझायोमांसि, पर मञियाईं कोन। वेतरि उलर करे आयो... मूं में वधीक हिम्मथ कोन थी। हाणे उन मकान जी मसुवाड़ डींदा आहियूं।

''ओह ! मूंखां थधो साहु खज़ी वियो। पुछियोमांसि, ''त पोइ घर जो?....''

शायदि हूअ समुझी वेई। विच में चयाईं, ''दादा ! डाढा डुख थी सहां.... मकान विकिणी औरत ऐं शराब पोइतां पइजी वियो.... आमदनीअ बिना खूह बि खुटी था वञनि। मकान जा पैसा ई केतिरा?.... घणो जटाउ कन्दा.... सभु कुझु नास थी वियो.... हाणे सिलाई थी कयां.... जींअ तींअ घर ख़र्चु थो निकिरे.... सचु पचु दादा ! थकिजी पेई आहियां।''

मनु भरिजी आयुसि। गोढ़ा गड़ण लगा। रोए बि पेई ऐं बुधाए बि पेई,

''डाढो मारीन्दो हुओ.... हथनि सां.... मुकुनि सां, लकड़ियुनि सां.... बासणनि सां... पीअण खां पोइ समक ई कोन पवन्दसि। जेकी हथ में मिलन्दुसि, मूं तरफ़ उछलाईंदो... हडु हडु डुखे थो, मुंहिंजे.... चहिरे जी चमक हली वेई आहे। डुन्द भज़ी पिया आहिनि। शरीर ते कारहिं चढ़ी वेई आहे... घणोई समुझायोथीमांस... आज़ी नीज़ारी कयमि, हुनजी हरहिक गाल्हि कबूल कई, मन सुधिरी वञे। बीमारीअ जो भउ, समाज जो भउ, लोक लज्जा, ब्रारनि जे ज़िन्दगीअ जो वास्तो, आईन्दह जो वास्तो डिनोमांसि, पर हुन गंदगीअ खे कोन छड्डियो.... हाणे त हिम्मत ई हली वेई आहे.... सचु पचु ब्रारनि जे करे जीअरी आहियां, न त त कड्डहिं जो आत्म हत्या करे छड्डियां हां।''

हूअ ओछंगारूं डेई रुअण लगी। देवीअ साम्हूं अची दिलासो डियणु पिए चाहियो पर रोकियोमांसि। थोरीअ देरि खां पोइ जड्डहिं ख़ुदि माठि कई ऐं गोढ़ा उघिया, तड्डहिं देवीअ पाणीअ गिलासु डिनुसि ऐं ब्र टे ढुक पी हूअ सामति में आई।

''अशोक अज्जु काल्ह कन्दो छा आहे?'' गाल्हि खे थोरो हल्को करे पुछयोमांसि।

''कुझु बि न... बीमार थो रहे... औरत बि छडे डिनो अथसि... सज़ो डींहुं भिटिकन्दो रहंदो आहे... कमज़ोरु थी वियो आहे.... डॉक्टर जो रायो आहे त बुकियूं सड़ी वेयूं अथसि।''

''तड्डहिं बि पिये थो?'' मूं चिड़ मां पुछियो।

''हा, दोस्त था पीयारिन्स।'' हुन बुधायो।

कुझु वक्त इएं ब्रियूं बि ग़ाल्हियूं थींदियूं रहियूं। इन विच में मूं देवीअ खे इशारो कयो। हूअ अन्दरि हली वेई।

''पुट।'' पाब्रोह विचां चयोमांसि, ''बुखिए पेट सुम्हंदीअ त मनु दुःखी थीन्दो। असां ते बि तुंहिंजो हकु ओतिरो ई आहे, जेतिरो पंहिंजे माता पिता मथां हुयुइ।''

एतिरे में देवीअ अन्दिरां हिकु लिफ़ाफ़ो खणी आणे मूंखे ड्रिनो। मूं लिफ़ाफ़ो कुसुम जे हथ में ड्रींदे चयो, ''अशोक अग़ियां मकान विकणण जी ग़ाल्हि टारे छड्रिजांइ।''

ड्रिठुमि त लिफ़ाफ़ो वठंदे हिचिकी पिए। उन खां अगु अहिड़ी नौबत कान आई हुई। देवीअ चयुसि, ''माउ पीउ जे अग़ियां हिचक छाजी, पुट। असीं बि त तुंहिंजा ई आहियूं... असांजी बि पेई सार लहिजांइं।''

घर वेन्दे हूअ बिल्कुल शान्त हुई। चित अन्दरि उथियल उधमा बिल्कुल शान्त थी विया हुअसि। हुनखे एतिरो शान्त ड्रिसी समुझियुमि त हिन ईन्दड़ तूफ़ान सां मुक़ाबिलो करण लाइ पाण खे तैयार पिए कयो।

सचु पचु पीड़ाउनि ऐं अज़ाबनि हुनखे ज़िन्दगीअ जे सच जो दर्शन कराए छड्रियो हो।

.....

पर अज़ु चिड़ी चिन्ता में विझी छड्रियो। हिक सिट मन खे लोड़े छड्रियो। घणेई शक शुबह साम्हूं अची बीठा। ख़राब ख़्यालनि वकोड़े छड्रियो। सोचियुमि,

''हुन सां का अण-थियणी त कान थी आहे?''

''ब्रार त ठीकु अथसि?''

''अहिड़ी कहिड़ी ग़ाल्हि आहे, जो हूअ ख़ुदि कोन थी अची सघे?''

''पाण देहि में हड्रियुनि जो कंकालु आहे। ब्रार रुअन्दा हून्दसि...'' अशोक मार-कुट कन्दो हूंन्दो... घर में ब्राएताल मतलु हून्दो....''

अहिड़ा अनेक वीचार मन में खणी, मां कुसुम जे घर पहुतुसि। हूअ अकेली हुई। ब्रार पाड़े में खेड्रण विया हुआ। शरीर में को ख़ास फ़र्कु कोन हो। मुंहिंजी सज़ी कल्पना कूड़ी निकिती।

मुस्कराहट सां कुसुम मुंहिंजी आजियां कई। हुनजे मुस्कराहट में दब्रियलु दर्दु चिटीअ तरह नज़रि आयो। शुरूआती आदर-भाव खां पोइ वेठुमि त चवणु चालू कयाईं,

''दादा ! मां पाण तव्हां वटि अची नथी सघां। घर अकेलो छड्रणु हाणे मुमकिन कोन्हे.... अशोक अस्पताल में भर्ती आहे.... हुनखे सम्भालिणो थो पवे... बुकियूं बेकार थी चुकियूं अथसि...

ब्र टे दफ़ा डॉयलेसिस ते विहारियो अथाऊंसि।''

कुसुम ख़ामोश थी वेई। ड्रिठुमि त अञा बि कुझु चवणु पिए चाहियाई,

''डॉक्टरनि जी कहिड़ी राय आहे?'' पुछियोमांसि।

''जीअरे रहण लाइ हिक बुकी कढाए, ब्री लग्राइणु लाज़िमी आहे।'' चई हूअ वरी शांत थी वेई।

मुंहिंजी बि धड़कनि कान वधी।

ब्रई अहिड़े हन्धि हुआसीं, जिते इहो महसूस थिए त जंहिं इन्सान जे बारे में हिक ग्राल्हि थी हले, उन लाइ बसि एतिरो वास्तो आहे त हू असांजो फ़कति ज्रातलु सुञातलु आहे।

असां बिन्हीं जे अन्दरि न का उत्तेजना हुई ऐं न दिल दहिलाईन्दड़ जज़िबात।

मूं त अन्दरि ई अन्दरि ज्रणु इएं अग्रु ई सोचे छड्रियो हो त अक्सर शराबियुनि जूं बुकियूं, आण्डा ऐं जेरा शराब जे ख़राब असर करे बीमारियुनि में मुबतला थी वेन्दा आहिनि।

कुसुम सां अशोक जहिड़े सुलूक कयो हो। उहो कुर्ब ज काबिल बिल्कुल कोन हो। इनकरे अशोक लाइ न मूंखे को मोह हो ऐं न को हमदर्दी।

पर कुसुम लाइ त हू सभु कुझु हो। हुनजो हू सुहाग्र हो, घर जो स्वामी हो, सन्तान जो पिता हो। पर तड्रहिं बि कुसुम खे न को भय हो न को दुःख।

आख़िरी जुमिलो त अहिड़ीअ आसानीअ सां चयाई, जो मूंखे बि अजबु लग्रो। हुनजे अन्दरि को बि ग़ैर मामूली अहसास कोन ड्रिठुमि। मूंखे पक थी वेई त सुहाग्रिण, ड्रुहाग्रिण थियणु कबूल करे छड्रियो आहे।

अजु जो सचु उहो हो, जो कुसुम पतीअ खे कुकर्मनि करे पैदा थियल हालाति जे ज़िम्मेवारीअ लाइ बे-रया जजु थी पंहिंजो फ़ैसिलो बुधाए छड्रियो।

ड्रुखनि ऐं अज़ाबनि हुनखे एतिरो कठोर करे छड्रियो हो, जो उन्हनि पीड़ाउनि खे ज़िन्दगीअ जो लाज़मी हिस्सो मञी, हूअ बेफ़िक्र थी पेई हुई। हाणे उहे अज़ाब बेअसर थी पियो हुआ। वर्हिनि जी किलकिल, घर में अशान्ती ऐं अशोक जे दहिशत कुसुम खे मज़बूत करे छड्रियो हो। पीड़ा त पीड़ा, पर जे ज़िलज़िलो बि अची वञे त बि हूअ चुपचाप ड्रिसन्दी रहन्दी, न डिज़न्दी ऐं न दहिलिजन्दी। मन जी ऊन्हाई एतिरी वधियल हुअसि, जो दुख पीड़ा जो बि अहिसासु कोन पिए थियुसि।

हिन लाइ अशोक बसि हिकु पुरुष हो, शायदि पतीअ जे रिश्ते खे हूअ भुलाए वेठी हुई। हूअ ड्रामे जी हकीकत कोन हुई पर हाज़िरीनि हुई। हुनजे चहिरे ते भाव ऐं वहिंवार मूंखे बि भिटिकाए छड्रियो।

कोशशि कंदे कोबि दग्रु न पिये मिलियो। हुन निर्धन कुटुम्ब लाइ गुर्दे (बुकीअ) जो ऑपरेशन कराइणु मुश्किल ई न, पर नामुम्किनि बि हो।

मुंहिंजे अन्दरि कुझु रुकिजी वियो। जीअं तीअं करे पंहिंजी निड़ीअ मां लफ़्ज़ कढी पुछियोमांसि,

''तो छा सोचियो आहे?''

हुन साग़ी सहंजाईअ सां चयो,

''बुई डेर चवनि था त ऑपरेशन लाइ हिकु डेढ लख जी ज़रूरत आहे, पेको मकान विकिणन्दसि त अशोक बची पवन्दो।''

मूं में साहु अची वियो, पुछियोमांसि,

''पाण छा था कनि?''

''कुझु बि न।'' कुसुम बुधायो, ''हू कुझु बि ड्रियण लाइ तैयार कोन आहिनि, हू चवनि था त अशोक अगु ई घणो कुझु वठी चुको आहे, उन्हनि खे बि बारु बुच्चा आहिनि, हू हिकु बि पैसो ख़र्चु कोन कन्दा।

मां ख़ामोश थी वियुसि।

हीउ रिश्ता बि ख़्याली आहिनि। उन्हनि जो को वजूद कोन्हे। जिते आहे बि खणी, त उहो वारीअ जे पीढ़ ते अद्रियलु आहे। वारी खिसिकी वजूद ज़मीन दोज़। न रिश्ते में जुड़ाउ, न कसाउ ऐं न का कशिश आहे.... कमज़ोर रिश्ते जो कहिड़ो कमु?

मां कुझु चवां, तंहिंखां अगु ई कुसुम चई ड्रिनो, ''मकान विकिणण सां अशोक बची बि वञे... पर केतिसाईं? हिकु हिकु पल हुनजे देहि जो ख़्यालु रखणो पवन्दो.... दवा ऐं खाधे लाइ रोज़ु रुपयनि जी ज़रूरत पवन्दी... हिते त सुभाणे लाइ थो सोचिणो पवे.... गंदियुनि आदतुनि करे हीअ हालति थी अथसि.... उनजी सज़ा ब्रिया छो भोगीनि?.... बेकसूरु हूंदे बि काफ़ी कष्ट ड्रिठा अथसि.... गुज़रियल खे वापसि त नथो आणे सघिजे, पर आईंदह बारनि खे डुखियो ड्रिसणु नथी चाहियां, दादा!''

मां समुझी वियुसि त हुनजो कहिड़ो वीचारु आहे। पर वरी बि हुनजे मुख मां बुधणु पिए चाहियो।

हुनजे तरफ़ ड्रिठुमि त हूअ समुझी वेई। चयाईं, ''सच्चाईअ लाइ इन्कार कोन आहे। सुहागु रक्षक आहे, हत्यारो न.... मूंखे सुहागु छा ड्रिनो आहे?.... अकेली बाकी ज़िन्दगी शांतीअ सां गुज़रन्दी.... सन्तान लाइ बि कुझु करे सघन्दियसि।''

हाणे हूअ बिल्कुल सहज हुई।

''दादा ! मुंहिंजा माता पिता तव्हां आहियो। मूंखे दगु डेखारियो। मां छा कयां?.... हिक तरफ़ सींध जो सिन्दूर आहे, जंहिं में कष्टु ई कष्टु आहे, ज़ुल्म आहे ऐं गारियूं गन्दु आहे, घर में किलकिल

आहे, बेचैनी आहे, ॿारनि जो आईन्दह ऊंदाहो आहे, ग़ुरिबत आहे.... सुख जो हिकु कतिरो बि कोन्हे?''

''ॿिए तरफ़ ॾुहागु आहे। उन में मुस्तक़बल जी रोशनी आहे। सन्तान लाइ सुख ऐं शान्ती आहे। उन में हिननि जो वाधारो आहे। संदनि आईन्दहु रोशनु आहे।''

कुसुम जज़्बात खे सच्चाईअ मथां ग़ालिबु थियणु कोन ॾिनो हो। हुन हिकु बेबाकु सचु चयो हो, जंहिं मे का बि लाॻ लपेट कोन हुई।

ऐं मां लाजवाब थी सोच में ॿुॾी वियुसि।

नवां लफ़्ज़ :

गर्दिश = चक्कर।

ओछिंगारुं = ज़ोर-ज़ोर सां सिसकियूं भरे रुअणु।

उधमां = उमंग, वीचार।

दगु = मार्ग, रस्तो।

हैबतनाकु = भयानक।

पाॿोह = मुस्कराइणु।

गुरबति = ग़रीबी।

मुस्तकबल = भविष्य, आईन्दो।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब 10-15 लफ़्ज़नि में ॾियो:-

(1) शादीअ खां पोइ कुसुम सां कहिड़ो हादिसो थियो?

(2) अशोक खे कहिड़ी किनी आदत पइजी वेई हुई?

(3) वक्त बाबत लेखक जो कहिड़ो अकीदो आहे?

सुवालः II. हेठियनि सुवालनि जा जवाब 50-60 लफ़्ज़नि में ॾियो:-

(1) कुसुम लेखक खे पंहिंजो जेको हालु अची ॿुधायो, तंहिंखे पंहिंजनि लफ़्ज़नि में समुझायो।

(2) सुहाॻिण ॾुहाॻिण थियणु कबूलण लाइ कहिड़ो दलीलु ॾिनो।

(3) लेखक जी जॻहि ते जेकॾहिं तव्हां हुजो त कहिड़ो फ़ैसिलो ॾींदा।

सुवालः III. हेठियां हवाला समुझायो:-

(1) ''दादा, मां अशोक खां डिॼण लॻी आहियां।''

(2) ''हाणे हू मकानु विकणणु था चाहीनि।''

●●

(8)

रोशिनीअ जो सौदागरु

– पदम शर्मा
(1934-1999)

लेखक परिचयः-

श्री पदम शर्मा जो जनमु 7 जनवरी 1934ई. ते हैदराबाद (सिन्ध) पाकिस्तान में थियो। हू लेखक ऐं विद्वान पंडित देवदत्त शर्मा जो लाइकु सुपुत्र साबित थियो आहे, एम.ए., बी.एड., एल.एल.बी. जे तइलीम खां पोइ एडीशनल कमिश्नर ऑफ पुलिस (आई.पी.एस.) बणियो ऐं पोइ रिटायर्ड थियो। संदसि छपियल किताबः 1. किशनचन्द बेवस (साहित्यिक आलोचना 1985 ई.), 2. रहीम राजस्थानी (कहाणियूं 1989 ई.), 3. रोशनीअ जो सौदागरु (1996 ई.), 4. सिन्धू ज्योति (1989 ई.), समय 105 टी.वी. सीरियल एपीसोड 'इन मुम्बई' ऐं ए.टी.एन. चैनलस लाइ (1995-96 ई.)

इनाम- 1986 में राम पंजवाणी कल्चरल सेन्टर पारां, 1989 ई0 में 'रहीम राजस्थानी' ते सी.एच.डी. पारां, 1999 ई. में 'रोशनीअ जो सौदागरु' ते राष्ट्रीय सिन्धी भाषा विकास परिषद पारां ऐं राष्ट्रपतीअ हथां पुलिस मेडल।

राष्ट्रीय सेमीनारनि में सरगर्म शिरकत, सदारती तकरीरूं ऐं आलिमाणा वीचार पेशि करणु संदसि मुख्य शौंकु हो । खिलमुख ऐं रिलिणे मिलिणे सुभाअ जो मालिकु हो ।

हिन कहाणीअ में लेखक सूरदास जी मन स्थिति, ड्रिया ठाहिण जो फनु ऐं गुलाबराय जे दरिया दिलीअ जो बयानु कयो आहे।

ड्रियारीअ खां हिकु ड्रींहुं अगु उहा फटाकेदार फ़िज़ां ऐं रोशन रात मूंखे याद आहे। जड्डहिं मां पंहिंजनि थांवनि, ड्रीअनि, कपिड़नि, दिलियुनि, मटिकनि, हटड़ियुनि ऐं मिड़ीअ जे पुतलनि जी पिड़ी लगाए विकिरे लाइ वेठो होसि।

इहा कुम्भरनि जी बज़ार आहे। देवी देवताउनि, इन्सान ऐं साह वारनि जा पुतला कारीगरनि जे कला जो कमाल पेश करे रहिया हुआ। हिन मुर्दा मिट्टीअ खे, जंहिंखे बे खुटके ऐं बे-लिहाज़ असीं पेरनि सां लताड़ींदा वञूं था, उहा कारीगरनि जे हथनि जे हुनुर सां चमकी केड़ी न करामत थी ड॒ेखारे। अण-हूंद मां हूंद करे छड॒े, बेजानि में जानि विझी छड॒े। ब॒ारोतनि जे पींघे खां वठी जनाजे ताईं सज॒ो मिट्टीअ जो त खेल आहे ऐं असीं कुम्भर उन रांदि जा अहम रांदीगर आहियूं। खिलाड़ी बदिलजन्दा रहंदा। उन वक्त बज़ार में ड॒ाढो हुलु मची वियो, वाको वाकाणि छांइजी वेई, टाकोड़ो मची वियो, ज॒णु को ख़ूनख़्वार जानवरु अची वियो हुजे।

मां अंधो आहियां !

सिर्फ़ कननि सां ब॒ुधी सघियुसि थे। माण्हुनि जे भाज॒ि मां अंदाज़ लग॒ाए न सघियुसि त माजिरा छा आहे? कंहिं भज॒न्दड़ वाटहूड़अ वाको करे मूंखे आगाह कयो। ''अड़े अंधो आहीं छा? ड॒िसीं कान थो त बज़ार में ब॒ बैल ताव में विढ़ी रहिया आहिनि, खणु सामान, भज॒ु।''

हूंअं मूंखे पिड़ी लग॒ाइण ऐं समेटण में मुंहिंजे नन्ढपुणि जी साथिण राधा अची वाहर कंदी हुई। हिकु त मां अंधो, ब॒ियो अकेलो; जेसीं पाण संभाले, दांगियुनि, दिलनि, ड॒ीअनि जे भज॒ण जा परलाव पवण लग॒ा। ढग॒नि जी शोख़ वेढ़ि, कराड़ी सिङनि बाज़ी ऐं नासुनि मां निकरंदड़ तेज साहनि जा आवाज़ कननि ते पवण लग॒ा। उन मालिक जी इहा निराली रम्ज़ आहे त जे हिकु हवास या उज़्वो ज़ईफ़ या ग़ैर अमली आहे त उन जी कुवत ब॒ियनि हवासनि या उज़्वनि खे पाणेही पहुचाए थो। मुंहिंजूं अखियूं अंधियूं आहिनि पर कन ऐं ब॒िया हवास सरला आहिनि। मां अञां पंहिंजो पिड़ो संभालियां ई संभालियां त ढग॒नि जे सिङनि जो आवाज़ ऐं नासूं फोटाड़े विढ़ण जो ग़लग़लो मुंहिंजे पिड़ीअ ताईं पहुची वियो ऐं हिक बैल जो पेरु मुंहिंजे ड॒ीअनि जे ढेर में वञी पियो। हिक ई धमाके सां केतिरा ड॒ीआ भज॒ी ठिकिरियूं थी पिया। उन वेढ़ि में मां जेकर चिथिजी वञां हा! मूंखे पतो ई नथे पियो त किथे वञां, छा कयां?

तड॒हिं अचानक हिक माण्हूअ मूंखे छिके पासीरो कयो ऐं जंहिं ढग॒ो मुंहिंजे ड॒ीअनि में पेरु विधो हुओ, तंहिंखे पंहिंजे ड॒ुंडे जे सटिकनि सां पासीरो कयाईं। पर किथे थे मञियो उन ताव में आयल मस्त बैलनि।

हुन पंहिंजे कुत्ते खे हकल करे चयो, ''टाईगर ! टाईगर ! छू.... छू... छू...''

हुन शख़्स असांजी जेका मदद कई। उन लाइ सज॒ी बज़ार हुन खे आफ़रीन ड॒ियण लग॒ी। कंहिं चयो, ही को ख़ुदाई ख़िज़मतगार आहे जो सिर जो सांगो लाहे अची असांजी मदद लाइ भेरे थियो। बैलनि खे बज़ार मां भज॒ाए छड॒ियाईं।

पोइ हुन मूंखे ड॒ढु ड॒ींदे चयो, बाबला! फ़िक्र न करि, मालिक जे फ़ज़ल सां रहिजी आई। पर तोखे बि पंहिंजो ध्यानु ड॒ियणु खपंदो हुओ। हइड़ी वेढ़ि में सामान समेटण खपंदो हो।

''साईं अव्हांजो चवणु बजा आहे। पर मां छा थे करे सघियुसि।'' मूं वराणियो।

उन वक्त ऊंदहि थी चुकी हुई। हू ड्डिसी न सघियो त मां को अंधो आहियां। इनकरे वरिजाए चयाईं, ''पुट ! तोखे पंहिंजो पूरो ध्यानु रखण खपंदो हुओ।''

मुंहिंजे चहिरे ते फिटल मुस्कराहट अची वेई। जवाब ड्डींदे चयुमि, ''साईं ! मां अंधो आहियां। मां छा थे करे सघियुसि !''

संदसि मुंहं मां रड़ि निकिरी वेई, ''तूं सूरदास आहीं?'' पोइ हिक मिन्ट लाइ माठाई छांइजी वेई। शायदि हुन खे पंहिंजे भुल ते पछताउ थियो ऐं मूं ते कियास आयो। हिन समाज जे निज़ाम में हिकु अंधो तरस खाइण जोग्रो त आहे! को अंधनि जी मदद नथो करे !! हर साल ''अंधनि जो ड्डींहुं'' मल्हाए करे उन्हनि खे हिक सिफ़ में बीहारे हिननि जे किस्मत ते कहल कई वञे थी, अरमान भरिया अखर चई हिननि जे अहसास कमतरीअ खे ईंघायो वञे थो।

पाणु संभालींदे हुन चयो, ''तुंहिंजे ग्राल्हाइण ब्रोल्हाइण, निहारण ऐं उथण विहण मां इएं असुल नथो महसूस थिए त तूं सूरदास आहीं!''

एतिरे में राधा डोड़ंदी आई। हुन ड्डाढे प्यार सां मुंहिंजे सज़े बदन ते हथ घुमाए ज़ुणु पड़ताल कई त मां सालिम बदन आहियां या न! पोइ चयाईं, ''बज़ार में हुलु हुओ त किशन खे बैलनि लताड़े छड्डियो।''

मूं खेसि सरबस्ती ग्राल्हि बुधाई। हुन जे अखियुनि में आब अची वियो ऐं हूअ साहिब जे पेरनि ते किरी संदसि शुक्राना मञण लग्री। पिए रुनाईं ऐं शुक्राना मञियाईं। साहिब जूं अखियूं भरिजी आयूं। असां ब्रिन्हीं खे खणी भाकुर में भरियाईं। संदसि कुत्तो ख़ुशीअ मां पुछु लोड्डाए 'कूं कूं- कूं कूं करण लग्रो।

पोइ मूं संदसि पहिरिएं सुवाल जो जवाबु ड्डींदे चयो, ''मां सूरदास आहियां। पर जनम खां सूरदास न आहियां। मां स्कूल में पढ़ंदो होसि। राधा मूंसां पढ़ंदी हुई। असांजे माइटनि नन्ढे हूंदे असांजी शादीअ जी पक कई हुई। पर पोइ मूंखे माता निकिती, जंहिं में अखियुनि जी रोशिनी हली वेई।

राधा विच में उतावलाईअ सां सुवाल कयो, ''बाबूजी ! किशन जो इलाज थी न सघंदो?''

मूं पुठभराई कन्दे चयां, ''मूं हिन सोनहरी संसार में सिज चण्ड खे ड्डिठो आहे। चाण्डोकी रात जी चिल्काणि खे ड्डिठो आहे, तारनि जे महफ़िल खे ड्डिठो आहे, कतियुनि खे कर मोड़ींदे ड्डिठो आहे। उभिरंदड़ सिज जे सोनहरी किरणनि खे समुण्ड जे शफ़ाफ़ पाणीअ जे सतह जे मथां सोनहरी चादर विछाए ड्डिठो आहे। मिट्टीअ मां ठहंदड़ रंगीन रांदीकनि खे ड्डिठो आहे। पोपटनि जे गूनागूं रंगनि खे ड्डिठो आहे। मुन्दुनि जे सर्गस खे हिक ब्रिए पुठियां रौनक फहिलाईंदो ड्डिठो आहे, राधा जे अंग अंग खे ड्डिठो आहे, जाग्राफ़ीअ जे एटलस खे ड्डिठो आहे। स्कूलनि जे किताबनि खे पढ़ियो आहे.....''

राधा मौके जे नज़ाकत जो जाइज़ो वठंदे चयो, ''बाबूजी ! किशन मूंसां गड्डु पढ़ंदो हुओ ऐं हमेशह पहिरियों नम्बर ईन्दो हुओ...''

मूं राधा जे विच में ग़ाल्हाईंदे चयो, ''ज़िन्दगीअ जा घणेई सपना ड्रिठा हुअमि, सभु अधूरा रहिजी विया। मां अंधो थी पियुसि, पीउ माउ चालाणो करे विया ऐं राधा जे पीउ असांजी शादी कराइण खां इंकार करे छड्डियो।''

राधा सुड्किा भरींदे चयो, ''मां फाहो खाईंदियसि, पर ब्रिए कंहिं सां शादी न कंदियसि।''

''राधा जो पीउ वाणिए जे कर्ज़ हेठि दब्रियलु आहे। हू हाणे राधा जी शादी उन बुढे सां कराइण थो चाहे।''

हुन मूंखे ग़िराटिड़ी पाए चयो, ''उलको न करि। तुंहिंजी शादी त राधा सां ई थींदी। अयामनि खां राधा जो नींहुं कृष्ण सां ई थींदो आयो आहे।''

मूंखे लग़ो त अजु इहो पहिरियों ई शख़्सु हो, जंहिं सां मूं दिल खोले ग़ाल्हियूं कयूं हुयूं, सो बि पहिरींअ ई मुलाकाति में। हुन जे शख़्सियत में मकनातीसी कशिश हुई। ग़ाल्हायाई थे त जुणु प्यार जी बरखा थे कयाई। मुंहिंजे जज़्बाति जे समुण्ड में तूफ़ान अची वियो हुओ। मां हुन जा पेर पकिड़ण लाइ हेठि झुकियुसि, पर हुन मूंखे पकड़े छड्डियो।

चयाई, ''इन जी का ज़रूरत कोन्हे। पर जेकड्डहिं तुंहिंजे अखियुनि जी रोशनी हुजे हा त राधा जा माउ-पीउ तोखे कबूलु कनि हा?''

मूं कंधु, लोड्डे हाकार कई।

मुंहिंजे मथे ते हथु रखी चयाई, ''ज़िन्दह पीर तुंहिंजूं आसूं पुज़ाईंदो।''

मूं खेसि चयो, ''साईं, मूं अंधे सां छोथा ठठोलियूं कयो? मुंहिंजे हाल ते मूंखे जीअणु ड्रियो। साईं अव्हांखे हज़ार नइमतूं ड्रिए, बाकी मां अखियुनि खां अंधो, दीद जो मोहताज, जीअं तीअं करे ड्डींहं कटींदुसि। पर जे राधा जो विहांउ कंहिं ब्रिए सां थी वियो त मां जी न सघंदुसि।''

असांजे ग़ाल्हियुनि जो सिलसिलो टुटी पियो, जो उनजी घर वारी ब्रियो सामान वठी अची पहुती। सभिनी शयुनि जा अघ पुछियाईं। मूंखे ख़बर न हुई त हूअ का संदसि ज़ाल आहे। इनकरे खेसि पंहिंजा वाजिबी अघ ग़ाहकी नमूने बुधायमि। बाबूजी बि न कुछियो, ''काका ! कुछ रियायत करि। तुंहिंजी हर शइ जा अघ ब्रियनि दुकानदारनि जे अघनि जे भेट में वधीक आहिनि।''

चयोमांसि, ''अमड़ि ! मुंहिंजे माल जी ख़ूबी ई निराली आहे।''

बाबूजीअ चयो, ''ड्डीआ ड्डिअनि जहिड़ा, हटड़ियूं हटड़ियुनि जहिड़ियूं, ख़ास वरी कहिड़ी ख़ूबी आहे?''

''साईं ! मुंहिंजा ड्रीआ सिधे तरे वारा आहिनि। उन्हनि खे चक मां कढण वक्त सही तरह धाग़ो लग़ाए कटियो वियो आहे। इहे हवा में न किरन्दा, न लुड़ंदा ऐं न लाईनि में ड्रिंगा फिड्डा नज़रि ईंदा। सभु हिक सरीखा आहिनि।''

अमड़ि चयो, ''ब्रु ड्रीआ ब्रारिणा आहिनि, केरु थो अहिड़ियूं बारीकियूं ड्रिसे?''

पर बाबूजीअ वरी पाब्रोह सां चयो, ''किशना ! ब्रियूं कहिड़ियूं ख़ूबियूं आहिनि?''

लग़े थो त बाबूजीअ खे हर ग़ाल्हि ग़ूढ़ाहीअ ऐं बारीकीअ सां ड्रिसण जी आदत हुई। मूं चयो, ''तव्हांजो चवणु सही आहे त अज़ु काल्ह कंहिंखे वक्तु आहे हिन मुर्दा मिट्टीअ जे थांवनि ऐं ड्रीअनि जी ख़ूबियुनि ऐं कला खे परिखण जो। पर तंहिं हूंदे बि मुंहिंजो अर्ज़ु आहे त मुंहिंजा ड्रीआ तमामु सुठा चीकी मिट्टीअ जा ठहियल आहिनि ऐं छाकाणि त संदनि मिट्टीअ जी सुठी जिंस आहे, इनकरे एतिरो तेलु न पीअनि। सादा ड्रीआ वटि खे तेल पहुचाइण बदिरां केतिरो तेलु पंहिंजनि सोराख़नि में पीअंदा आहिनि। मुंहिंजे ड्रीअनि जो मुंहुं अहिड़ीअ तरह ठहियलु आहे, जो वटि मुंहं ते मज़बूतीअ सां टिकियल हूंदी आहे ऐं आख़िर ताईं सही तरह ब्रुरंदी रहंदी आहे। मुंहिंजा मटिका सर्दीअ में ठाहे रखिया विया आहिनि, इनकरे मंझिनि इहा ख़ासियत आहे त गर्मीअ जे मुंद में पाणी तमामु थधो रहेनि। मुंहिंजे मूर्तुनि जा रंग पक्का आहिनि, जे वक्त पुज़ाणां बि फिका न थियनि। मां ड्रीआ नथो विकिणां, मां रोशनी विकणां थो। जंहिं रोशिनीअ खां मां वांझियल आहियां, उहा रोशनी विकिणां थो।

अञां ताईं मूंखे कल न पेई त हूअ संदसि ज़ाल आहे।

बाबूजीअ चयो, ''भाग़वान ! मूंखे सभु सामानु हिन खां वठिणो आहे। ब्रिनि चइनि रुपयनि सां छा फ़र्कु पवंदो? असांखे हिक इन्सान जे कला जो कदुरु करण खपे।''

मूं महिसूस कयो त ब्रई ज़ाल मुड़िस ई आहिनि। माफ़ी वठी भुल बख़्शाए सभु कुछ बिना पैसनि जे कढी संदनि अग़ियां रखियुमि।

चयाईं, ''हे रोशनीअ जा सौदागर ! हिसाब में ब्रु भाउर, टियों लेखो। मां पैसे बिना कुछु बि न खणंदुसि। पर रोशनीअ जो सौदागर केरु आहे, ख़रीददारु केर आहे, इहो त ख़ुदा जे काग़ुर में लिखियलु आहे। बंदे खे कहिड़ी तोफ़ीक जो ग़ैब में हथ विझी ड्रिसे।

घणेई नीज़ारियूं कयूंमानि, पर पैसा पूरा चुकाए पोइ सामान खंयाऊं।

उन खां पोइ असांजो बाबूजी ऐं संदसि ज़ाल सां घरू रिश्तो थी वियो। इहा बि ख़बर पेई त हिन खे औलाद न हुओ। पंहिंजे भाइटियनि जे पढ़ाईअ ते ख़ूबु ख़र्चु कयो हुआईं। सरकार में हू रवाजी क्लार्क मां वधी डिप्टी सेक्रेट्रीअ जे उहिदे ताईं पंहिंजे महिनत ऐं अवरचाईअ सां पहुतो हो। राधा ऐं मां वटिनि ईन्दा वेंदा हुआसीं। असीं सरकारी ज़मीन खे वालारे हटु हलाईंदा हुआसीं। नगर विकास निगम जा कारपुरदाज़ असां खां रिश्वतूं बि वठंदा हुआ, कड़ुहिं कड़ुहिं चालान बि कंदा हुआ, मुफ़्त

में माल वठी वेंदा हुआ। बेरुख़ीअ ऐं बदफ़ज़ीलत सां ग़ाल्हाईंदा हुआ। बाबू साहिब अदालत ऐं सरकार ताईं असांजे पैरवीअ जो इंतज़ाम कयो ऐं आख़िर असांजी एसोसिएशन ठहिराए, असांजे जाइज़ हकनि ऐं घुरूनि खे तस्लीम कराए, सरकार खां ज़मीन तस्लीम कराई। बैंक खां माली मदद ड्रियारे दुकान ठहिराए ड्रिनाईं। दुकान ठहिराइण खां पोइ असां उन बाज़ारि जो नालो बाबूजी जे नाले ते रखणु थे चाहियो पर पाण हिक बि न बुधाईं। असांजे बज़ार जे उहिदेदारनि दलील ड्रींदे चयो, ''तव्हीं हाणे नौकरीअ मां रिटायर्ड थिया आहियो, इनकरे सरकार तरफ़ां बि एतराज़ न थींदो, जेकड्रहिं बज़ार जो नालो तव्हांजे नाले ते रखियो वञे।

ठह-पह जवाबु ड्रिनाईं, ''मूं पंहिंजे नाले लाइ अव्हांखे मदद न कई आहे। बज़ार जे उहिदेदारनि आछ कयसि त ब्रु टे दुकान अव्हीं पंहिंजे नाले बेनामी दर्ज करायो या पंहिंजे भाइटियनि खे ड्रियारियो। चयाईं, ''इनजी माना त तव्हां पंहिंजे बाबूजीअ खे अञां न सुञातो आहे।''

ब्रियनि उहिदेदारनि जे चवण ते मूं ऐं राधा बाबूजीअ ते ज़ोरु आंदो त हू के दुकान खणे छाकाणि त बज़ार ठहण करे दुकाननि जे कीमत में तमामु घणो इज़ाफ़ो थी रहियो हो। ड्रुख मां चयाईं, ''किशना, इहे माण्हूं त मूंखे कोन सुञाणनि, पर तो बि मूंखे न सुञातो। ब्रियनि जे चवण जो मूंखे को ड्रुखु न आहे पर तुंहिंजे चवण जो ज़रूर मूंखे ड्रुखु थियो आहे !''

बाबूजी महान हुआ !

जड्रहिं राधा जे पीउ पैसनि जी मजबूरीअ करे राधा जी शादी कस्बे जे वाणिए सां थे कराई त हिन पुलिस ऐं अदालत में दरख़्वास्त ड्रेई शादीअ जी कार्रवाई बन्दि कराई त राधा बालिग़ आहे ऐं उनजे मर्ज़ीअ जे ख़िलाफ़ संदसि शादी हिक पोढ़े सां थी कराई वञे। ग़ोठ जे वाणिए मूंखे गुंडनि खां मार कढाइण जी सोची, हमलो बि थियो, जंहिंमें बाबूजीअ मुंहिंजी मदद करे गुंडनि खे पुलिस खां पकिड़ाए जेल जी सज़ा ड्रियारी। मां ऐं राधा बाबूजीअ जे महिरबानियुनि जे बार हेठि दब्रियल रहियासीं। राधा अमड़ि खे वञी कम में मदद कराईंदी हुई पर मां अंधो छा थे करे सघियुसि।

अर्सो गुज़िरी चुको।

मां दुकान ते वेठो होसि। टाईगर भौं.... भौं... कंदो डोड़ंदो आयो। हर घड़ीअ मुंहिंजे कपिड़नि खे छिके ज़ुणु उते हलण लाइ पियो चवे। इएं महसूस करे रहियो होसि त टाईगर रोई कीकड़ाहट करे मूंखे कुछु चई रहियो आहे। हिकु बे-ज़ुबान जानवरु हिक अंधे खे कुछु चई रहियो हुओ। हूंअं टाईगर घणेई दफ़ा मूंखे सड्रु करण ईंदो हो पर अज़ु हिनजे आवाज़ में दर्द हो। मूं दुकान बंदि करण शुरू कयो। एतिरे में राधा रुअंदी अची पहुती, सहिकी रही हुई। संदसि मुंहं मां अखर नथे उकिलियो।

''किशना, किशना...!''

''छा थियो राधा?''

''किशना, किशना...'' हूअ वधीक चई न सघी।

‘‘बुधाइ छा थियो?’’

‘‘किशना ज़ुल्मु थी....’’ राधा रुअंदे चयो, ‘‘बाबूजी...’’

‘‘बाबूजीअ खे छा थियो?’’ मूं पुछियो।

‘‘बाबूजी असांखे छड॒े हलियो वियो।’’

मुंहिंजे पेरनि हेठां ज़मीन निकिरी वेई। पंहिंजे बेहालाईअ जो बयान नथो करे सघां। दिल जे दर्द खे अव्हां ताईं आणण में अखर मोहताज आहिनि। राधा जो सहारो वठी बाबूजीअ जे घर ताईं पहुतासीं। जीअं जीअं घरु नज़दीक अची रहियो हो, तीअं तीअं राधा ऐं टाईगर जे रुअण जो आवाज़ वधी रहियो हो। इएं लग॒ो त माण्हुनि जा हशाम बीठा हुआ। राधा मूंखे बाबूजीअ जे पार्थिव शरीर ताईं वठी वेई। उन कमरे में ब॒ियनि माण्हुनि खे अन्दर अचण न ड॒िनो वियो हो। डॉक्टरनि जी टोली शायदि पंहिंजो कमु पूरो करे चुकी हुई। फ़िज़ा जे ख़ामोशीअ खे टोड़ींदड़ हिक डॉक्टर चयो, ‘‘किशना तुंहिंजो नालो आहे?’’

मूं हा कई।

डॉक्टर वधीक समुझाईंदे चयो, ‘‘बाबू गुलाबराय मरण खां अगु॒ पंहिंजा नेत्र-दान कया हुआ ऐं अखियुनि जे अस्पताल में ब॒िनि शाहिदनि जे साम्हूं लिखी ड॒िनो हुआईं त संदसि मरण खां पोइ संदसि अखियूं किशना खे ड॒िनियूं वञनि। उन सां गडु॒ ऑपरेशन जो पूरो ख़र्चु बि जमा करायो हुआईं।

मूं ओछंगारूं ड॒ेई रुनो।

हुनखे पंहिंजो पीउ समुझी वार ड॒िनमि ऐं लम्बा ड॒िनमि।

मां अजु॒ सालिम अखियुनि वारो आहियां। राधा सां मुंहिंजी शादी थी चुकी आहे। बज़ार जो नालो ‘‘बाबूजी बज़ार’’ रखियो वियो आहे, अमड़ि बि आहे। सभु कुछ साग॒ियो आहे, पर बाबूजी न आहे। सुभाणे ड॒ियारी आहे। बज़ार में गपागीह लग॒ी पेई आहे।

साम्हूं अमड़ि अची रही आहे। अमड़ि चयो, ‘‘हे रोशिनीअ जा सौदागर ! सुभाणे ड॒ियारी आहे। मूंखे ड॒ीआ खपनि, जेके तुंहिंजे बाबूजीअ खे पसन्द हुआ।’’

मुंहिंजे अखियुनि मां लुड़िक वही आया। चयोमांसि, ‘‘अमड़ि इएं न चओ!’’

‘‘छो किशना?’’ अमड़ि सुवालु कयो।

मूं चयो, ‘‘अमड़ि, तूं सभु कुछ ज॒ाणी थीं, मां रोशनीअ जो सौदागरु न आहियां। रोशिनीअ जो सौदागरु त असांखे छड॒े हलियो वियो।’’

मूं ड॒िठो त अमड़ि जूं अखियूं आलियूं थी वेयूं। हूअ कुछ कुछी न सघी।

नवां लफ़्ज़ :

थांव = बर्तन।
माजिरा = मसइलो।
हवास = इन्द्रियूं।
कहल करण = तरस खाइणु।
शफ़ाफ़ = साफ़, पारदर्शी।
पाब्रोह = प्यार सां।
ताव = क्रोध।
आफ़रीन = धन्यवाद।
सरबस्ती = सज्ञी ग़ाल्हि।
उल्को = फ़िक्र, चिन्ता।
तोफ़ीक = मजाल।
वाको वाकिणो = शोर शराबो।
परलाव = आवाज़।
डुथु = आथतु।
आब = आसूं (पाणी)।
दीद = रोशिनी।
कारपुरदाज़ = कर्मचारी।

:: अभ्यास ::

सुवाल: I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब हिक या ब्रिनि सिटुनि में लिखो:-

(1) बाबूजी केरु हो?

(2) किशना सूरदास कीअं थी पियो?

(3) 'रोशनीअ जो सौदागरु' केरु हो?

(4) हिन कहाणीअ मां कहिड़ी सिख्या थी मिले?

सुवाल: II. हेठियनि सुवालनि जा जवाब खोले लिखो:-

(1) 'रोशिनीअ जो सौदागरु' कहाणीअ जा इख़्तिसार लिखी उनजे ख़ूबियुनि ते रोशिनी विझो।

(2) बाबू गुलाबराय किशना जी कहिड़ी मदद कई हुई?

(3) किशना पंहिंजे डि्अनि जूं कहिड़ियूं ख़ूबियूं बुधायूं?

सुवाल: III. हेठियां हवाला समुझायो:-

(1) "हिन मुर्दा मिट्टीअ खे, जंहिंखे बेखुटके, बे-लिहाज़ असीं पेरनि सां लताड़ींदा वञूं था, उहा कारीगरनि जे हथनि जे हुनर सां चिमिकी केड्डी न करामत थी ड्रेखारे।"

(2) "मालिक जी इहा निराजी रम्ज़ आहे त जे हिकु हवासु ज़ईफ़ या ग़ैर अम्ली आहे त हुनजी कुवत ब्रियनि हवासनि या उज़्वनि खे पाणेही पहुचाए थो।

(3) "मां ड्डीआ नथो विकिणां, मां रोशिनी विकिणां थो। जंहिं रोशनीअ खां मां वांझियलु आहियां, उहा रोशिनी विकिणां थो।

●●

(9)

साधू टी. एल. वासवाणी

– डॉ. दयाल 'आशा'

लेखक परिचयः-

प्रोफेसर डॉ. दयाल 'आशा' जो जनमु 1936 ई. में थियो। संदनि जीवन आहे हिकु चमनु, हिकु बागु जंहिं में बुलबुलूं पेयूं गाईनि, पुष्प पिया सूंहं में चिमकनि। हुन केतिराई गीत लिखिया आहिनि। उहे गीत ही गाए बि थो। संदसि गाइण में मेठाजु आहे। सिक ऐं सोज़ु आहे, दिल जो दर्दु आहे। खादी पोष, नम्रता जो पुतलो दयाल आशा, गायक दयाल आशा, भगत दयाल आशा, मन मोहींदड़ दयाल आशा, प्रिंसीपल, आलिमु ऐं रिसर्च स्कॉलर दयाल आशा; इहा आहे डॉक्टर आशा जी मुख़्तसर वाक्फ़ियत। हू केतिरनि सालनि खां शाइरीअ जे मैदान में कलम जो घोड़ो डोड़ाईंदो पिए रहियो आहे। इन डोड़ में हू काफ़ी अगिरो रहियो आहे। साहित ते क्षेत्र में हुन पंजाह खां वधीक किताब लिखिया आहिनि, जेतिरा इनाम दयाल 'आशा' खे मिलिया आहिनि, ओतिरा बिए कंहिं बि सिन्धी अदीब खे न मिलिया आहिनि। सचु-पचु हू इन्हनि जो हकदार आहे। खेसि यूनीवर्सिटीअ जी सभ खां ऊची डी.लिट डिग्रीअ सां नवाज़ियो वियो आहे। सिन्धी महापुरुषनि, संतनि, कवियुनि जे जीवनियुनि ते वड्डा ग्रंथ लिखिया अथसि।

प्यारो दादा साधू वासवाणी हो गुरू नानक जियां सूरत निमाणी, जंहिंजी मधुर आनन्द दायक बाणी, पीआरियो जंहिं सभिनी खे पंहिंजे प्यार जो पाणी, जंहिंजो तख़ल्लस नूरी निमाणी, भगतियाणी मीरां जियां भगुवान श्री कृष्ण लाइ संदसि दिलिड़ी वेगाणी, रूहानी राहत सदाईं जंहिं माणी, दुखियुनि दरिद्रनि सां सदाईं हो साणी। प्रेरणा जो सर चिश्मो संदसि जीवन कहाणी। जंहिंजो रूहानी वारिस दादा जशन वासवाणी।

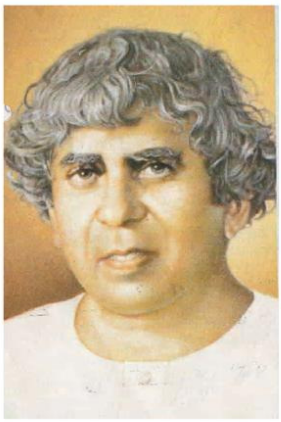

प्यारे दादा वासवाणीअ जो जनमु कार्तिक एकादशीअ 25 नवम्बर 1879 ई. में सिन्ध, जे हैदराबाद शहर में श्री लीलाराम वासवाणीअ जे घर में थियो।

दादा जनि जे जनम जो नालो थांवरदास हो। दादा जनि जो पूज पिता श्री लीलाराम वासवाणी देवी माता जो उपासकु हो ऐं संदसि माता वराण ब्राई श्री गुरूनानक देव जी सच्ची सिदक्याणी ऐं भगतियाणी हुई। हूअ नितु नेम सां प्रभात जो श्री जपु साहिब ऐं श्री सुखमनी साहिब जो पाठु कन्दी हुई। घर जे अहिड़े धार्मिक ऐं भगतीमय वातावरण जो ब्रालक दादा ते काफ़ी असरु पियो।

सिन्धु जो महानु समाज सुधारक, निष्काम शेवक, सिन्धी समाज जो सचो कोहिनूर, आदर्शी अध्यापक साधू हीरानन्द आडवाणी ब्रालक दादा खे स्कूल में उस्ताद जे रूप में नसीबु थियो, जंहिंजे आॅला आदर्शनि जो दादा जे विद्यार्थी जीवन ते वडो असरु पियो। दुखियुनि, दरिद्रनि, मिस्कीननि, मुहिताजनि, बीमारनि जी शेवा जा ब्रिज सला थिया ऐं सलनि मां बूटा ऐं बूटनि मां सीतल वृक्ष थिया, जिनिजे फलनि फूलनि ऐं सीतल छाया हज़ारनि खे फ़ैज़ु रसायो। दादा पढ़ण में बि प्रबीण हूंदो हो। हू ब्रियनि विद्यार्थियुनि खां हिकु निरालो विद्यार्थी हो। खेसि जेका ख़र्ची मिलन्दी हुई, उन मां थोरो ख़र्चे बाकी अपाहिजनि में विरहाए छडींदो हो।

स्कूल में पढ़न्दड़ मिस्कीन विद्यार्थियुनि खे टोल वठी डींदो हो। कडुहिं कडुहिं पंहिंजी नेरनि स्कूल में खणी ईन्दो हो त रस्ते ते को बुखायलु या को फ़कीर ड्रिसी उन खे पंहिंजी नेरनि खाराए छडींदो हो।

प्यारो दादा विद्यार्थी जीवन में सदाईं पियो मुश्कन्दो हो। संदसि पेशानी पई ब्रहिकंदी हुई। हिन खे उस्तादनि लाइ केडी न श्रद्धा हूंदी हुई। हू मर्यादा सां आज्ञा में रहंदो हो ऐं मोट में संदसि उस्ताद पिण खेसि डाढो भाईंदा हुआ।

स्कूल में पढ़ंदे दादा घर जी शेवा बि कंदो हो। तिनि डींहंनि में घरनि में नलका कीन हूंदा हुआ। दादा ब्राहिरां घर लाइ पाणी भरे ईंदो हो। रोज़ माता-पिता लाइ बि हूं पाणी भरे ईंदो हो। सन्तनि महात्माउनि जो जीवन चरित्र पढ़ंदो हो। नंढपुणि में ई दादा जे जीवन में जीव दया जी जोति जगी। हिन मांस आहार जो त्यागु कयो।

दादा अञां चोथें दर्जे अंग्रेज़ीअ में पढ़ंदो हो, जो संदसि पिता श्री लीलाराम वासवाणी परलोक पधारियो। पूज पिता जनि जे परलोक पधारिजण खां पोइ ब्रालक दादा जो मन उदास थी पियो। संसार जी क्षण-भंगुरता ड्रिसी, संदसि मन में वैरागु वृति पैदा थियण लगी ऐं प्रभूअ लाइ प्यार पैदा थियो।

दादा कलाकनि जा कलाक घर में खुड्ड ते सांति में वक्तु गुज़ारींदो हो। ख़ास करे रात जे वक्त चण्ड तारनि डे पियो निहारींदो हो। माता जी मर्ज़ीअ मूजिबु दादा स्कूल में दिलिचस्पीअ सां पढ़ंदो रहियो। पढ़ण सां गड्डु दादा शेवा जा नंढा-वड्डा कार्य बि कंदो हो ऐं रात जो एकांत में प्रभूअ खे बि यादि कंदो हो। हू पंहिंजी काबलियत, होशियारी ऐं वड्डिड़नि जी आसीस सां सारीअ सिन्धु में मैट्रिक इम्तिहान में पहिरियों नम्बरु आयो ऐं खेसि अग्रिते पढ़ण लाइ स्कॉलरशिप पिण अत्ता थी। दादा वधीक ऊच शिक्षा प्राप्त करण लाइ कराची कॉलेज में दाख़िल थियो। दादा पंहिंजी नम्रता, प्रवीणता सबब कॉलेज में पिणु नालो कढायो। दादा कॉलेजी तइलीम पिराईंदो, धार्मिक ग्रंथ श्रीमद् भग्रवत गीता, रामायण, गुरुवाणी ऐं ब्रियनि धार्मिक पुस्तकनि जो अभ्यासु कंदो रहियो। संदसि जीवन में सादगी, सचाई, स्नेह, सेवा ऐं दया जा गुण चमकिया। दादा बी.ए. जे इम्तिहान में अंग्रेजी विषय में बम्बई यूनिवर्सिटीअ में पहिरियों नम्बरु आयो। इनकरे दादा खे बम्बई यूनीवर्सिटीअ तर्फ़ां स्कॉलरशिप अता थी।

दादा खे संदसि काबलियत एं विद्वता सबब कराची कॉलेज में लेक्चरार मुकरर कयो वियो। ब्रिनि सालनि बइदि एम.ए. जी डिग्री पिणु हासिल कई।

कराचीअ में रहंदे दादा ब्रह्म समाज जे सम्पर्क में आयो। ब्रह्म समाज वारा दादा खे व्याख्यानु ड्रियण लाइ वक्त बि वक्त नींढं ड्रींदा हुआ। दादा जे व्याख्यान में अजीबु तासीर हूंदो हो। बुधंदड़, बुधी मंत्र-मुग्ध थी वेंदा हुआ। ब्रह्म समाज जे करे दादा खे कलकत्ते जे विद्या सागर कॉलेज जे प्रिंसीपल जो पद संभालण लाइ तार आई ऐं हू कॉलेज में प्रिंसीपल थियो।

प्यारे दादा जी प्यास हुई प्रभु पसण जी। हू कंहिं परिपूर्ण गुरूअ जी तलाश में हो। कलकत्ते में संदसि इहा प्यास पूरी थी। खेसि श्री नालोदा हिकु महान् दार्शनिक, वड्डो विद्वान सन्त, ब्रह्म ज्ञानी गुरू रूप में प्राप्त थियो। दादा गुरूअ जी कृपा सां भग्रिती ज्ञान ऐं कर्म मार्ग ते वधंदो रहियो।

संदसि माता जी इच्छा हुई त थांवर (दादा) शादी करे सुखी ज़िन्दगी बसर करे। दादा नम्रता पूर्वक माता खे चयो, ''अमी ! मुंहिंजी दिल त लग्री आहे लाहूतियुनि सां'' मां विवाह जे ब्रन्धननि में कीन ब्रधिबुसि।

दादा केतिरनि ई कॉलेजनि में प्रिंसीपल रही, हज़ारें विद्यार्थियुनि जी राह रोशन कई।

पूज माता साहिब जे परलोक पधारजण खां पोइ दादा दुनियवी उहिदनि जो त्याग्रु करे प्रभूअ जी राह में आयो ऐं जीवन में स्मरण, शेवा जी जोति जग्रायाई।

प्यारो दादा हो हीणनि जो हमदर्दु, मिस्कीननि जो मददगारु, पंहिंजो सारो जीवन अर्पण कयाई, पर-उपकार परमार्थ में। ब्रालकनि ब्रालकियुनि खे सची विद्या ड्रियण लाइ प्यारे दादा हैदराबाद में मीरा स्कूल खोलियो। जिते किताबनि सां गड्रोगड्रु सची सिख्या ड्रिनी वेंदी हुई। जीअं हू अग्रिते हली आदर्शी इन्सान थी, कौम जो कंधु मथे कनि। हिति पूने में पिणु दादा मीरा स्कूल ऐं कॉलेजु शुरू कयो, जिते विद्यार्थियुनि खे पवित्रु वायु-मण्डल में सची विद्या ड्रिनी वञे थी।

29 वर्हीनि जी उम्र में दादा बर्लिन में विश्व धर्म सम्मेलन में शरीकु थिया। दादा जो व्याख्यानु बुधी उतां जा लोक मंत्र-मुग्ध थी विया।

प्यारे दादा मधुर वाणीअ द्वारां, हिन्द ऐं विदेश में भारतीय सभ्यता, संस्कृति ऐं सत्पुरुषनि जो सन्देशु सुणायो। संदसि साहित्य सरल, सुपक सिन्धी ऐं अंग्रेज़ीअ में आहे, जंहिं में मइनवी मोती माणिक मौजूद आहिनि।

प्यारो दादा सिन्धु जो टैगोर हो। जीअं गुरुदेव विश्व भारती शांति निकेतन जी स्थापना करे विद्या जी नई जोति जगाई, तीअं दादा स्कूल ऐं मीरां कॉलेज खोले, विद्या जे खेत्र में नईं सुजागी आंदी।

दादा गुरुनानकदेव, कबीर ऐं गुरुदेव टैगोर जो रूप हो। हू महान् दार्शनिक ऐं महान् कवि हो। संदसि काव्य संग्रह ''नूरी'' ग्रन्थ हिकु मानसरोवर आहे, को हंस हुजे जो मोती वेही चुगे। जेतोणीकु ही ग्रंथ भगती रस काव्य सां भरियो पियो आहे, रूहानी रम्ज़ुनि ऐं राज़नि खे सले थो, परमात्मा जे पार जे पांधीअड़नि लाइ राह रोशनु करे थो, मगरि व्यवहारिक जीवन में पिण मुंझियलनि, मायूसनि लाइ रोशन मिनार आहे। दादा पंहिंजा दार्शनिक वीचार सरल, सुपक सिन्धी काव्य में पेश कया आहिनि। वेद शास्त्र, उपनषिदनि जो मखणु कढी ''नूरी'' ग्रंथ में डिनो आहे।

दादा राष्ट्रपिता महात्मा गांधीअ जे आदर्शनि खां डाढो प्रभावित थियो। बुई राष्ट्र भगत, ईश्वर भगत, गीता प्रेमी, बिन्हीं जे दिलियुनि में दीननि दुखियुनि ऐं दरिद्रनि लाइ दर्दु ऐं दया। बुई त्यागु ऐं कुर्बानीअ जूं मूर्तियूं हुआ।

राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन जडुहिं दादा सां मिलण पूने आयो, तडुहिं चयाईं, ''दादा जा ही स्थान मुंहिंजे लाइ तीर्थ आस्थान आहिनि ऐं मां हिक तीर्थ वासीअ जे भाव में हिति आयो आहियां।''

दादा आज़ादीअ जे हलचल में सक्रिय भागु वरितो। न सिर्फ़ पाण, पर पंहिंजे प्रेमियुनि समेति विदेशी शयुनि जो बहिष्कारु कंदो हो ऐं स्वदेशीअ जो संदेशु डींदो हो। सिन्ध वासियुनि में प्यारे दादा भारत जी आज़ादीअ लाइ राष्ट्रीअ चेतना फूंकी। सन् 1918 ई. खां वठी दादा सादी खादीअ जी पोशाक पहिरी।

देश जे विरहाङे बइदि दादा पूने जी पुण्य भूमीअ में अची रंग लगाया। अजु उहो आस्थान मीरां भूमीअ जे नाले सां प्रसिद्ध हिकु तीर्थ स्थानु आहे। दादा उते रोज़ु सत्संग कंदा हुआ, जंहिंजो लाभु सवें प्रेमी रोज़ु वठंदा हुआ।

दादा कर्मयोगी संतु हो। संदसि जागायल जोति अजु बि दादा जशन वासवाणीअ ऐं दादा गंगाराम साजनदास जगाए रहिया आहिनि। 16 जनवरी 1966 ई. ते पूने में सिन्धियुनि जो सूंहारो, भारत जो महान सन्त साधू वासवाणी ब्रह्मलीन थियो।

नवां लफ़्ज़ :

फ़ैज़ु = फ़ाइदो।
वेग्राणी = व्याकुल ।
पेशानी = निरुड़ ।
प्रवीणता = महारत ।
सिदिक्याणी = सिदिकु या विश्वासु रखंदड़ ।

:: अभ्यास ::

सुवाल: I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब लिखो:-

(1) श्री थांवरदास लीलाराम वासवाणीअ खे साधू वासवाणीअ जे नाले सां छो कोठियो वेंदो आहे?

(2) साधू वासवाणीअ तइलीम जे क्षेत्र में कहिड़ो कमु कयो आहे, जो अजु ताईं बि मुकमल तौर सां हलंदो थो रहे?

(3) साधू वासवाणीअ आजीवन कुंवारो रहियो, हुन शादी छोन कई? संदसि जीवनीअ जे आधार ते रोशनी विझो।

(4) लेखक दादा खे कंहिंजो रूपु मञियो आहे?

(5) साधू वासवाणीअ ते सलीस सुहिणी इबारत में हिकु मज़मूनु लिखो।

(6) हिन मज़मून जे लेखक डॉ. दयाल आशा जी मुख़्तिसर वाकिफ़यत लिखो।

●●

(10)

काश

– मनोहर चुघ
(1936-2014)

लेखक परिचयः-

मनोहर चुघ 'आकाशवाणी' मुम्बई स्टेशन ते सिंधी सेक्शन जे प्रोग्रामु एगिज़ीक्यूटिव आफ़ीसर तोर ख़िदमत अंजामु डिनियूं ऐं सिंधी कल्चर खे फरोगु डियण लाइ हर मुमकिन कोशशि कंदे उतां रिटायरमेंट वरिती। हुनजूं केतरियूं ई कहाणियूं रेडियो तां नशरि थी चुकियूं आहिनि ऐं संदसि ब्र कहाणी संग्रह 'नओं युगु' ऐं 'रात गुज़री वेंदी' पिणु मैदान-ए-अदब ते ज़हूरु पज़ीरु थियल आहिनि।

मौजूदह लेख में इहा सिख्या डिनल आहे त कडुहिं बि तकड़ि करे कंहिं बि माण्हूअ जो ब्राहिरियों डेखु वेखु डिसी उन बाबति आख़िरीन राइ न जोड़णु खपे।

असांजी सिंधु में ओड़े पाड़े जी वडी अहमियत हूंदी हुई। पाड़ो आहे अबो अमड़ि। पाड़े बिन न को रुअंदो सूंहे, न को खिलन्दो सूंहे, पर हित मुम्बईअ में ख़ासु करे फ्लैट सिस्टम में रीत ई निराली आहे, न कंहिं जी हरे रामु, न कंहिं जी सतनामु! हरको पंहिंजीअ में पूरो! असां जे 'कृष्ना कुंजु' जी ई ग़ाल्हि वठो, सत माड़ि आहे, हर माड़े ते चार घर। मूंखे ख़बर न आहे त हिति पंजें माड़े ते जिते मां रहां थो, ब्रिया केरु-केरु रहंदड़ आहिनि। हिक घर जी ज्ञाण अथमि त उहो घरु सिन्धीअ जो आहे। घर जे मालिक जो नालो ईश्वरु खिलनाणी आहे। इहो हुन जे दर जी लग़ल तख़्तीअ ते पढ़ियो अथमि। कडुहिं कडुहिं हू लिफ्ट में मिली वेंदो आहे। बसि, हैलो कंदे मुस्कराईदो आहे ऐं अखियूं हेठि करे छडींदो आहे। उम्र अटिकल सठि साल अथसि। अछो कुर्तो, अछी धोती ऐं पेरनि में चम्पल पाईदो आहे। मुंहिंजे घर में कमु करण वारी बुधाईदी आहे त काके जी ज़ाल अटिकल डुह साल अगु

गुज़ारे वेई हुई। काको घर में अकेलो रहंदो आहे, इहा जमुना ई हुन जे घर जा भांडा, बुहारी कंदी आहे। खाधे जो टिफिन डींहं में हिकु वेलो किथां ईंदो अथसि। काको सुबुह जो यारहें बजे घर खे तालो पाए किथे वेंदो आहे त वरी निमा शाम जो घरि वापसि वरन्दो आहे।

वेझिड़ाईअ में हुन जे घर में को महिमानु आयलु आहे। काके जो मसवाड़ी बि थी सघे थो। हू पंजवीह टीहनि सालनि जो नौजवानु आहे। लगे थो त कंहिं ऑफीस या कंहिं कॉल सेंटर में कमु कंदो आहे। ऑफीस जी कार हुनखे वठण ऐं छड्डण ईंदी आहे। छोकिरो हलति चलति में फुड़ित आहे, कड्डहिं लिफ्ट लाइ तरसंदो न! फटाफटि ड्राकणियूं चढ़ी वेंदो। चौकीदार खे गेट वटि पियल कुर्सीअ ते वेठो ड्विसंदो त खेसि आडुरि जे इशारे सां उथी बीहण जी हिदायत कंदो। मूं ड्विठो त हुन नौजवान में अनुशासन आहे। हुन सां मुंहिंजी गाल्हि ब्रोल्हि कड्डहिं कोन थी आहे, लगे थो रुखो रूह आहे।

तव्हां ड्विठो हूंदो त रस्ते में जिते कचिरो पये हूंदो, उतां ब्रिया माण्हू कचिरो हटाईंदा त न, पर पंहिंजे घर जो कचिरो बि उते ई फिटो करे वेंदा। बसि, पोइ वेंदो उते कचिरे जो ढेरु जमउ थींदो। उहा गाल्हि जुणु त पाड़े लाइ हिकु डम्पिंग ग्राऊंड थी पवंदी। अहिड़ो ई डम्पिंग ग्राऊंड असांजे कृष्ना कुंजु जे साम्हूं बि थी पयो। वार्ड ऑफीसर खे चार ख़त बि लिखयमि, पर सरकारी खाते में ड्विनो पुटु छुटे जो आहे। मुंहिंजी केरु बुधंदो! तंहिं डींहुं वार्ड जे ऑफीसर खे पंहिंजी घिटीअ में ड्विठुमि। इहो डम्पिंग ग्राऊंडु डेखारियोमांसि। हथ जोड़े अर्ज़ु कयोमांसि त साईं ! हीउ आज़ारु हितां हटायो। माण्हुनि जी सिहत जो सुवालु आहे। सज़ी घिटीअ में धप थी पेई आहे। ऑफीसरु गंद जे ढेर खे ड्विसंदो रहियो। जुणु अंधे अगियां आर्सी हुजे। को जवाबु न! थियो ईंए जो ठीक उन वक्तु कृष्ना कुंजु जे दर वटि हुन नौजवान जी कार अची बीठी। हेठि लथो ऐं अची मुंहिंजे पासे में बीठो। अखियुनि तां उस जो चश्मो लाथाई। ऑफीसर जे अखियुनि सां अखियूं मिलाए, मुहुकमु आवाज़ में हुन खे चयाईं ''डू यू नो, हू एम आइ?'' तोखे ख़बर आहे त मां केरु आहियां। हीउ मुंहिंजो सेलफोन वठु। म्यून्सिपल कमिश्नर जो नम्बर लगाए डे। अजु ई तुंहिंजो सस्पेंड ऑडरु थो कढायां। बसि ऑफीसर पंहिंजूं अखियूं झुकाए छड्डियूं। खीसे मां रुमालु कढी पंहिंजे चहिरे तां पसीनो उघियाईं। भुण-भुण कंदे चयाईं, हीउ सभु अजु ई साफ़ु थी वेंदो। बराबरि शाम जो कचरे जो ढेरु हटायो वियो। कचरो न फिटी कजे, उन लाइ म्यून्सिपल तर्फां उते हिक तख़्ती बि लगाई वेई।

बसि उहो डींहुं, उहो शींहुं, हू छोकरो सभिनी लाइ भाई साहबु थी वयो, कृष्ना कुंजु जो सेक्रेट्री बि हुन खे राम राम कंदो हो त बिल्डिंग जो चौकीदारु ऐं लिफ्ट मैन बि हुन खे सलाम कंदा हुआ। उन ख़बर मुंहिंजे घर में चौब्रोल खड़ो करे छड्डियो। मुंहिंजी धर्मपत्नीअ तानो हणंदे चयो, छा वरियो तव्हांजे अछनि कारनि करण मां म्यून्सिपल जी ऑफीस में जुतियूं गसाइण मां ! हुन भाई साहब जी हिक ई दब्र सां ऑफीसर जो होश ठिकाणे अची वयो। हुन जो हिकु ई सुवालु हो, ''डू यू नो हू एम आइ?'' सिखो कुझु हुन खां ! मुंहिंजी त मिठी बि माठि, मुठी बि माठि, तलवार जे घाव खां

बि तानो तिखो।

हिक ड्रींहुं गेटि वटि उहो भाई साहबु आम्हूं साम्हूं मिली वयो, न दुआ न सलामु। बस मुंहुं फेरे हलण लगो मूं समझियो, त शायदि न थो सुञाणे। अग॒ियां वधी करे चयोमांसि, भाई साहिब न था सुञाणो छा? मां पंजे माड़े ते तव्हां जो पाड़ेसिरी आहियां; अचो कड॒हिं मुंहिंजे घर; गडि॒जी चांहि पीअंदासीं। हलंदे-हलंदे चयाईं, कंहिं खे वक्तु रखियो आहे ! बसि हलियो वियो। अहिड़ो रुखो माण्हू मूं कड॒हिं बि न डि॒ठो, वरी कड॒हिं हिन सां रामु रामु न करण जो दिल ई दिल में फ़ैसिलो कयुमि।

पाड़ो आहे अबो अमड़ि। हिक ब्रिए में कमु त पवंदो ई न ! हिक रात मुंहिंजी धर्मपत्नीअ जे पेट में ओचतो सख़्त सूरु अची पियो । फकियुनि फ़रकु ई न पिए कयो। ज़रूरी हो त हुन खे अस्पताल वठी वञिजे। राति जा ब॒ वग॒ा हुआ, अकेलो कीअं वञां। ब॒ त ब॒ारिहां, छा करियां। सोसायटीअ जे सेक्रेट्रीअ खे फ़ोन कयुमि। उमेद हुई त डुकंदो ईंदो, पर न! जोणसि ई चयो हुन जी सिहत ठीक न आहे, मां हिननि खे निंड मां उथारणु न चाहींदसि, माफ़ु कजो! हिन बिल्डिंग में मां ब्रिए कंहिंखे सुञाणा बि कोन। कंहिं जो दरु खड़िकायां। छो न ईश्वर खिलनाणीअ जे दर ते दस्तक डि॒यां। काको ज़रूर भाल भलाईंदो। हुन जे दर जो बेल वज॒ायुमि, दरु भाई साहब ई खोलियो। हुन खे अर्जु कयुमि, चयाईं टैक्सी घुरायो, मां हेठि अचां थो। बसि सरकारी इस्पताल में पहुतासीं। एमर्जन्सी कमरे में नर्सि आराम कुर्सीअ ते वेठे खोंघिरा हणी रही हुई। डॉक्टर ज़रूर किथे वञी सुम्ही पियो हूंदो। असां जे अचण जी आहट ते नर्सि टपु डे॒ई उथी त सहीं पर अन्दर ई अन्दर में सौ भेरा पिटियो हूंदाईं। डॉक्टर अचण में पंद्रहां मिन्ट लग॒ाया। मरीज़ खे तपासे चयाईं, मां दवा डि॒यां थो। मरीज़ खे सुभाणे ओ.पी.डी. में वठी अचजोसि। वधीक जाच कई वेंदी, मूं चयो: ठीक आहे डॉक्टर साहब ! दवा डि॒यो। मां हिन खे सुभाणे वठी ईंदुसि, 'महिरबानी !'

भाई साहब, जो उन वक्त ताईं एमर्जन्सी कमरे जे दर वटि बीठो हो, सो अंदर आयो, डॉक्टर खे चयाईं, ''छो, अञां तव्हां जी निंड पूरी न थी आहे छा? डू यू नो, हू एम आइ? हेल्थ मिनिस्टर खे फोन करियां थो या चीफ मिनिस्टर खे फोन करियां? हीअ औरत सूर में कढ़े पेई ऐं तूं थो चवीं त सुभाणे ओ.पी.डी. में वठी अचोसि।'' भाई साहब पंहिंजे खीसे मां हैंड सेट कढियो ऐं को नम्बरु डॉइलु करणु शुरू कयो। डॉक्टर टेड़ी अखि सां सभु कुझु डि॒ठो ऐं तमामु नरम आवाज़ में चयाईं, '' तव्हां फोन छो था करियो, मूं लाइ तव्हां जो हुकुम ई काफी आहे। नर्सि हिन औरत खे एडमिट

करे गुलूकोज़ चाढ़ेसि, मां सुई थो त्यारु करियां। साईं ! तव्हां वेटिंग रूम में आरामु करियो।'' बसि चइनि ड्रींहनि में मुंहिंजी धर्मपत्नी नौबिनी थी अची घरि पहुती। मां गुरूअ जी मूर्तिअ अगियां ड्रीओ ब्रारियो ऐं गुरूअ जा शुकुराना मञिया जंहिं औखीअ वेल अची पति रखी ऐं मुंहिंजी धर्मपत्नी रूपा, सुख सां अची घरि पहुती।

रूपा, मूंखे आराधना कंदे ड्रिसी मुस्कुरायो चयाईं, ''गुरूअ जा शुकुराना मञी रहिया आहियो। सुठो आहे। पर उन जा बि शुकुराना मञणु घुरिजनि; जंहिं अध रात जो पंहिंजी निंड फिटाए तव्हां जो साथु ड्रिनो। डॉक्टर जी कन जी महट कई ऐं खेसि इलाज करण लाइ मजबूर कयो। तव्हां ते डॉक्टर ते अगियां गूंगी गांइ थी विया हुआ। हू भाई साहबु न हुजे हा त पेट सूर मां कोन बचां हा। वञो वञी पहिरयाईं भाई साहब जा शुकराना मञी अचो। हुन खे सुभां जे मानीअ जो नोतो ड्रेई अचो। इन्सान खे कंहिं जो बेशुकुरो थियणु न जुगाए।''

''रूपा ! मूं त हुन ड्रांहुं दोस्तीअ जो हथु घणोई अगु वधायो हो। हुन माण्हूअ जी हिमत लाइ मूंखे वड्डी इज़त आहे; पर हू अहिड़ो त रुखो रूह आहे जो चांहिं लाइ ड्रिनल मुंहिंजे नोते खे ठुकिराए हलियो वयो। अजीबु माण्हू आहे। हुनखे समझणु मुंहिंजे वस खां ब्राहिर आहे। खैरु ! तूं चईं थी त सुभाणे हुन जे दर ते वञी संदसि शुकराना मञींदुसि ऐं हुन खे मानीअ जो नोतो बि ड्रेई ईंदुसि।''

ब्रिए ड्रींहुं ड्रिठुमि त खिलनाणी साहिब जे घर खे तालो लगो पियो हो। मूं समुझियो किथे ब्राहिर विया हूंदा। शाम ताईं अची वेंदा। घर में कमु कन्दड़ माई जमुना खां बि काके लाइ पुछियुमि। पर हुन खे उन्हनि बाबति का बि ख़बर कोन हुई। ब्र ड्रींहं गुज़िरी विया। घर ते उहो ई तालो। कंहिं खे का ख़बर कोन। हिक ग्राल्हि ज़रूर थी त काके जे घर मां अजीब किस्म जी बांस अची रही हुई। इहा शिकायत ब्रियनि बि सोसायटीअ जे सेक्रेट्रीअ सां कई। आखिर टिएं ड्रींहुं पोलीस में रिपोर्ट कई वेई। काके जे घर जो तालो भगो वियो। अंदर हो काके ईश्वर खिलनाणीअ जो लाशु, काके खे घुटो ड्रेई मारियो वियो हो। घर मां पोलीस खे अनेक सबूत मिलिया, त घर में को आतंकवादी रहियलु हो, हिकु पिस्तोल, कुझु गोलियूं, कुझु दस्तावेज़ ऐं फोटा ड्रिसी पोलीस जी निंड हरामु थी वेई। पोलीस सभिनी खां पुछा ग्राछा कई पर केरु जवाबु ड्रे। कंहिं खे कुझु ज्राण हुजे त जवाबु ड्रे न ! पोलीस जी जाँच त जारी रहंदी। मां पंहिंजे घर जो दरवाज़ो बंद करे पिए पाण खां पुछियुमि, ऐं पिए पंहिंजी धर्मपत्नी रूपा खां पुछियुमि त भाई साहब जहिड़ो माण्हू छा आतंकवादी थी सघे थो! रूपा जो हिकु ई आलापु आहे त चडायूं ऐं बुरायूं हर इन्सान में थियनि थियूं; पर भाई साहब जा करतूत ड्रिसी मुंहिंजो त इन्सानियत मां विश्वासु ई निकरी वियो आहे, कंहिं ते विश्वासु कजे ! हाल त वेचारो काको राह वेंदे कुसजी वियो। मां बि हैरानु परेशानु आहियां। काश मां हुनजे गुफ़ते खे समुझी सघां हां ! जड्हिं हू सभ खां सुवालु करे रहियो हो, ''डू यू नो ! हू एम आइ?''

———

नवां लफ़्ज़ :

हिदायत करणु = समुझाइणु। **अनुशासन** = इंतज़ामु।

रुखो रूहु हुजणु = सूब्रटु हुअणु। **मुहकिम आवाज़ में चवणु** = पके इरादे सां चवणु।

अखियूं झुकाइणु = शर्मिसारु थियणु। **चौब्रोल** = गोडु।

होशु ठिकाणे अचणु = दिमाग़ जाइ थियणु। **भाल भलाइणु** = महिर करणु।

नौबनो थियणु = चङो भलो थियणु।

:: अभ्यास ::

सुवाल: I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब हिक ब्रिनि सिटुनि में ड्रियो:-

(1) काको ईश्वर खिलनाणी किथे रहंदो हो?

(2) काके जे घर मसवाड़ ते केरु रहंदो हो?

(3) नौजवान डॉक्टर खे कहिड़ी धमकी ड्रिनी?

सुवाल: II. हेठियनि सुवालनि जा जवाब 50-60 लफ़्ज़नि में ड्रियो:-

(1) काके ईश्वर खिलनाणी जी शख़्सियत जे बारे में तव्हां खे कहिड़ी ज्ञाण आहे?

(2) काके ईश्वर खिलनाणी जे घर में आयल मेहमान जो परिचय ड्रियो।

(3) 'कृष्ण कुंज' जे डम्पिंग ग्राउण्ड जे गंद खे ड्रिसी नौजवान ऑफीसर खे कहिड़ी ताकीद कई?

(4) जड्रहिं पोलीस काके जे घर जो तालो भग्नो त माण्हुनि छा ड्रिठो?

सुवाल: III. हेठियनि सुवालनि जा जवाब 100 लफ़्ज़नि में ड्रियो:-

(1) काके ईश्वर खिलनाणीअ जो ख़ून कंहिं कयो ऐं छो?

(2) काश ! लेख मां तव्हां खे कहिड़ी सिख्या मिले थी?

सुवाल: IV. हेठियां हवाला समुझायो:-

(1) ''डू यू नो, हू एम आइ?''

(2) ''छो अञां, तव्हां जी निंड पूरी न थी आहे छा?''

(3) ''सिखो कुझ हुन खां। मुंहिंजी त मिठी बि माठि मुठि बि माठि। तलवार जे घाव खां तानो तिखो।''

●●

(11)

हिकु ब॒ियो विरहाङो

– झमूं छु॒ग॒ाणी
(1940-2016)

लेखक परिचय:-

झमूं छु॒ग॒ाणी (जनमु 5 सेप्टेम्बर 1940) रीजनल कॉलेज ऑफ एड्यूकेशन, भोपाल मां सेक्शन ऑफीसर तोर 2000 ई. में रिटाइर कयो। 'मध्यप्रदेश सिंधी साहित्य अकाडमी' ऐं 'इक़बाल मर्कज़' जो डाइरेक्टरु ऐं राष्ट्रीय साहित्य सिंधी भाषा विकास परिषद (भारत सरकार) जो मेम्बर पिण रही चुको आहे। सिन्धी अदब में 'महामती प्राणनाथ' ते कयल संदसि तहिक़ीक़ साराह जोग॒ी आहे।

पंहिंजे किताब 'ड॒ाति धणीअ में' हुन लेखकनि, कवियुनि, कलाकारनि जी जीवनी ऐं हासुलाति जो ज़िकिरु कयो आहे।

मौजूदह कहाणीअ में विरिहाङे जो ज़िकिरु कंदे हिंदू मुस्लिम एकता जो संदेश ड॒िनलु आहे।

डिसम्बर जे महिने में मां कंहिं कम सांगे ब॒ाहिर वियलु हुउसु ऐं पुठियां सिंध मां ऐं उहो बि ख़ासि मुंहिंजीअ हैदराबाद मां को सिंधी मुसलमान जेको पेशे खां इंजीनियर हो, भोपाल में थींदड़ अंतर राष्ट्रीय मुस्लिम सम्प्रदाय जे धार्मिक इजलास में आयलु हुओ ऐं बैरागढ़ में बि काके जमियतराइ जे घर आयो हो। हरीअ इहो बुधाईंदे चयो, ''यार! तूं हुजीं हां त मज़ो ई कुझु और हुजे हां!''

मूं खेसि चयो, ''अदल! मूंखे कहिड़ी ख़बर हुई त मुंहिंजीअ सिंध मां को सिंधी अचिणो आहे। ख़ैरु ग॒ाल्हि करि त किस्सो छा आहे।

हरी चवण लगो त गाल्हि इझो हीअं आहे त 1947 जे मुल्क जे विरहाङे वक्ति काको जमियतराइ, जंहिंजी उमिर अटिकल 75 साल खनु आहे; उहो संदसि घर वारी सिंधु मां लङपलाण वक्ति जंहिं गाड्डीअ में हिन्दुस्तान ङांहुं रवाना थियण वारा हुआ, उन्हीअ में जमियतराइ सां संदसि कुंवारि पेवंदब्राई, नंढिड़ो भाउ, ब्र किकियूं ऐं हिकु सिकीलधो पुटु हरदास पिणु हुआ। उन्हनि ङींहंनि में गाड्डियुनि जो सुन्सान जगहियुनि ते बीहणु ऐं उन्हनि में फुरलुट त हिकु आमु गाल्हि थी पेई हुई ऐं थियो बि इएं। गाड्डी जङहिं खोखिरा पारि ङांहुं रात जे सुनसान ऊंदाहीअ में वधी रही हुई जो ओचितो बीही रही। ङिसंदे-ङिसंदे सवें मुहाजर सभिनी गाडनि में धूकींदा आया ऐं ''अल्लाह ओ अकबरु'' जा फलक शुगाफ़ नारा हणंदा गाड्डीअ जे सभिनी दब्रनि में काहे पिया ऐं फुरलुट में लगी विया। थोरीअ देर में गाड्डी त हली, पर सज़ी गाड्डीअ में ब्राकर कुटो मतो पियो हुओ। सभेई मर्द ख़ून सां लथि पथि हुआ। अगीअं स्टेशन ते जमियतराइ जे परिवार जा भाती ऐं के ब्रिया बि परिवार वारा लहण लगा पर अञा माण्हू लहनि ई लहनि त गाड्डी हलण लगी। जेसीं थाईंका थी वेठा त ङिठाऊं त हरदास आहे ई कोन। अगींअ स्टेशन ते ख़ूनरेज़ीअ जो अंदेशो वेतरि वधीक हुओ। इन्हीअ करे जेसीं अगींअ ऐं पोईंअ स्टेशन लाइ का ट्रेन अचे, सभेई पंहिंजे जिगर जे टुकरे खे भगवान जे भरोसे छड्डे वेठा।

अजबु खाईंदे मूं खांउसि पुछियो, ''पोइ छा थियो?''

चयाई, ''थींदो वरी छा? सुबह ताईं ब्रिन्हीं पासे का गाड्डी कोन आई। पोइ जेके गाड्डियूं आयूं उन्हनि मां हिक तरफ जमियतराइ निकतो ऐं ब्रिए तरफ़ संदसि भाउ। हरदास जे लहण जी जगह त हिक हुई ऐं गोल्हण जूं जगहियूं हज़ार; हरदास न मिली न मिल्यो। आख़िर सभु उम्मेदूं लाहे जमियतराइ जो सज़ो परिवार पहरीं अजमेर जे भरिसां देवली कैम्प ऐं पोइ अची भोपाल जे भरिसां बैरागढ़ में रहियो। ब्रिन्ही भाउरनि आसि पासि जे ब्रियुनि कैम्पुनि में बि गोल्हा कई पर हरदास किथे हुजे त मिले। पोइ बि जमियतराइ आस न छड्डी, हिकु दफ़ो वरी पंहिंजे भाउ नंदलाल खे सिंधु मोकिलयाईं। नंदलाल बि आसि पासि जा सभु शहर ऐं गोठ ङिसंदो हर रेलवे स्टेशन तां पुछंदो आख़रि निरास थी वापिस मोटियो। एतिरो सभु हूंदे जमियतराइ कङहिं बि दिलि न हारी ऐं दुनिया भरि जे अख़िबारुनि में पंहिंजे पुट जी उहा ई तस्वीर छपाईंदो रहियो, जेका विरिहाङे वक्त हरदास जी पंहिंजीअ माउ सां गङु निकितल हुई।''

मूंखे लगो त हरी आहे गाल्हियुनि जो गोथरो सो इहा कहाणी किस्तुनि में अठ ङह ङींहं त ज़रूर बुधाईंदो। टेलीविज़न ते हिंदी ख़बरूं शुरू थियण ते हुयूं। हरीअ खे चयुमि ''यार बाकी गाल्हि वरी सुभाणे कंदासीं'' ठह पह चयाई त दिलबर कहाणीअ जो मोड़ त हाणे शुरू थियो आहे। मूंखे बि लगो त हीउ इएं जिंदु छङण वारो न आहे। मजबूरु थी खेसि पंहिंजे ख़ानगी रूम में वठी आयुसि जीअं घर जे ब्रियुनि भातियुनि खे ख़बरूं ङिसण ऐं बुधण में का परेशानी न थिए। कमरे में घिड़ंदें, चयाईं, ''हाणे पुछु त हरदास जो छा थियो?'' मूं बि ब्रोलड़ियुनि वांगुरु हा में हा मिलाईंदे चयो, ''हरदास जो छा थियो?''

चयाईं, ''जंहिं महिल ट्रेन में फुरलुट थी रही हुई त कंहिं हरदास खे गाड्डीअ में हेठि लाहे छड्डियो ऐं हरदास बि स्टेशन जे गेट मां निकरी ब्राहिर हलियो वियो। उहो ड्डींहुं उहो शींहुं, हरदास निधिणकनि जियां पियो हित हुति भिटिकंदो रहियो ऐं इएं ई जीवन जा पंज साल खनु गुज़ारे छड्डियाईं। हरदास ब्र कम सुठा कया, न पंहिंजो नालो विसारियाईं ऐं न पंहिंजी ब्रोली, रुलंदो पिनंदो, हरदास कराचीअ पहुची वियो। उन्हीअ वक्ति संदसि मुलाकात हिक ख़ुदा तरस सिंधी मुस्लमान सां थी जंहिं खे टे धीअरु त हुयूं पर पुटु हिकु बि न हुउसि। हुन हरदास खे चयो त हिन ज़िंदगीअ गुज़ारण खां त बहितर अथेई त मुंहिंजो खणी पुटु थीउ। हरदास बि हुओ ड्डहनि खनु सालनि जो हिकु अबहमु ऐं अनाथु ब्रालक। हुन खे मज़हब जे फेर जी का ज्ञाण बि कोन हुई। पर ब्रिनि टिनि सालनि खां पोइ जड्डहिं इस्लामी रिवायतुनि मुताबिक हरदास जो खुतिनो कयो वियो त उन्हीअ ड्डींहं खां ई ख़ेसि विवेक जा वढ पवण लग्ग त मुंहिंजो नालो हरदासु हो ऐं हाणि हिंदूअ मां मुसलमान बणियो आहियां, मुंहिंजा माउ पीउ त हिंदू हूंदा ऐं बसि खेसि इहा ई चोरा ख़ोरा लग्गी पेई हूंदी हुई त काश कड्डहिं को उन्हनि जो ड्डसु पतो मिली वञे।

वक़्तु गुज़रंदो रहियो। हरदास जेको हाणे हमीदु ख़ान सड्डिजण लग्गो हुओ, मैट्रिक पास करे वधीक तालीम लाइ कराचीअ में वञी रहियो ऐं उतां बी.ए. सिविल इंजीनियरिंग में करे पक्कीअ तरह सां अची हैदराबाद में रहण लग्गो। पंहिंजी नई माउ, पीउ ऐं भेनरुनि सां खेसि पंहिंजाइप बि ख़ूबु मिली ऐं वक्तु गुज़रण सां संदसि शादी बि मुस्लिम रीति मुताबिक थी। फ़र्कु बसि इहो हुओ त सिंधी हिन्दूअ मां सिंधी मुस्लमानु बणयो हुओ ऐं सदाईं खेसि माउ पीउ जे विछुड़िजण जो दर्दु चुभंदो रहंदो हुओ। को सिंधी हिंदू सिंधु मां हिंद वेंदो हुओ त पियो उन्हनि खां पुछंदो हुओ त हिंद में को अहिड़ो परिवारु त कोन आह जंहिंजो विरिहाङे वारनि ड्डींहंनि में हरदास नाले पुटु ट्रेन में गुम थी वियो हुजे। सिंध जे मंदरनि, गुरूद्वारनि, टिकाणनि मां बि पुछा ग्राछा कंदो रहंदो हुओ। हमीदु ख़ान हैदराबाद में जग्रहियूं ठहिराईंदो हुओ ऐं विकणंदो हुओ। हिक ड्डींहुं फ्लैट जे साईट ते बीठो हुओ जो संदसि नज़र हिक सिंधी अख़बार ते पेई जंहिं में हिक औरत जी तस्वीर हुई जंहिं जे हंज में हिकु ब्रारु हुओ। तस्वीर जे हेठां लिखियल हुओ त पेवंदब्राई जमियतराइ पंहिंजे पुट खे तलाश करे रही आहे।

हमीदु ख़ान उन्हीअ अख़बार जे सम्पादक सां गड्डिजण वियो जीअं खेसि का वधीक ख़बरचार पवे। पर उते ख़बर पयसि त इहा ख़बर बि खेनि दुबईअ मां शाया थींदड़ 'ख़लीज टाईम्स' मां मिली हुई। हितां हुतां हमीदु ख़ान उहा ख़बर त हथि कई पर उनहीअ में बि पेवंदब्राईअ जे हिन्दुस्तान में रहण जे शहर जो ड्डसु पतो छपियलु कोन हुओ। क़िस्मत सां हमीदु ख़ान जो हिकु दोस्त दुबई वञी रहियो हुओ, तड्डहिं हमीदु ख़ान हुनखे अर्ज़ु कयो त हू 'ख़लीज टाईम्स' जे दफ़्तर में वञी पेवंदब्राई जमियतराइ जो सरनामो हथि करे।

कुझु ड्डींहंनि बाद 'राईटर' मख़्ज़न जो सिंध जो ख़ातू हमीदु ख़ान वटि पहुतो। कुझु सुवालनि जवाबनि खां पोइ खेसि ख़बर पेई त पेवंदब्बाई भारत जे मध्यप्रदेश जी राजुधानी भोपाल जे सिंधी टाऊनशिप संत हिरदाराम नगर, बैरागढ़ में रहंदी हुई, हमीदु ख़ान जे ख़ुशीअ जी हद न रही। हुन पंहिंजनि दोस्तनि ऐं वाकुफ़कारनि खे चवण शुरू कयो त खेसि पंहिंजा विछड़ियल माउ पीउ मिली विया आहिनि। कंहिं दोस्त चयुसि त डिसम्बर में त भोपाल में हर साल हिकु अंतरराष्ट्रीय मुस्लिम समाज जो धार्मिक मेलो लग्गंदो आहे। सिंधु मां बि घणेई दीन भाई उन मेले में शिरकत करण वेंदा आहिनि ऐं इन्हीअ बहाने तोखे वीज़ा मिलण में बि का दिक़त दरपेशि न ईंदी ऐं शायद बैरागढ़ बि भोपाल जी ई का टाऊनशिप हूंदी ऐं उते सवलाईअ सां पंहिंजनि विछड़ियल माइटनि सां बि गड्डिजी अचजांइ पर ब्बेली इएं न थिए जो उते वञण खां पोइ उन्हनि जो ई थी वञी !

दोस्तनि जे सलाह पटांदड़ि हुन खे भोपाल जे उन्हीअ इस्लामी मेले में शिरकत करण लाइ वीज़ा बि आसानीअ सां मिली वेई। भोपाल में वञण खां अगुवाट सिंध जूं के सूखिड़ियूं पाखिड़ियूं बि ख़रीद कयाईं ऐं ख़ैर सां हमीद ख़ान भोपाल पहुची वियो।''

हरीअ इहा सज़ी ग्गाल्हि हिक ई साह में बुधाए छड्डी मूं खेसि ब्बियो सिगरेट छिकण जी आछ कई। हरीअ पैकेट मां हिकु सिगरेट कढियो ऐं सेंट्रल टेबुल तां लाईटरु खणी सिगरेट दुखायो ऐं वात मां गोलु गोलु छल्ला कढण लग्गो।

हाणे कहाणी नओं मोड़ वठी रही हुई। मूं हरीअ ड्डांहुं निहारींदे पुछियो, ''हा हरी! पोइ छा थियो?''

चयाईं, ''थींदो वरी छा? तोखे फ़ुर्सत मिले त ग्गाल्हाइजे। तूं कड्डहिं कंहिं सेमीनार में पियो गोंडिया घुमीं त कड्डहिं कंहि वर्कशाप में वीरावल। उन्हनि ड्डींहनि में हित हुजीं हा त यार तोखे बि सिंधु जे उन्हीअ सपूत सां गड्डिजारायां हां। हाणे तूं त रुग्गो पियो पुछीं; पोइ छा थियो?''

मूं खिलंदे खेसि वरिजायो, ''हा पोइ छा थियो?''

''अड़े भाई हमीद ख़ान हित पंहिंजीअ माउ पीउ जे साम्हूं हुओ। पंहिंजो दास्तानु बुधाईंदे बुधाईंदे हमीद ख़ान सुड्डिका भरे रोअण लग्गो। संदसि मुलाकात ब्बिन्ही भेनरुनि उन्हनि जे घोटनि ऐं ब्बारनि सां बि थी रुग्गो जमियतराइ जे नंढे भाउ नारायणदास सां न थी, हू कंहिं कम सांगे हफ़्ते ख़न लाइ कंहिं ब्बिए शहर वयलु हुओ।''

मूं ड्डिठो त हाणे हरी उथण जे तियारियुनि में हुओ, कहाणीअ जे तह में वञण लाइ मूं हरीअ खे चयो, ''चङो ! सुभाणे मां बि तोसां गड्डु जमियतराइ जे घरि हलंदुसि।

ब्बिए ड्डींहुं शाम जो कॉलेज मां मोटण बैदि हरीअ खे गड्डु वठी जमियतराइ जे घर वियासीं। हुननिबि सज़ी ग्गाल्हि जीअं हरीअ बुधाई तीअं ई बुधाई। मूं ड्डिठो त हमीद ख़ान भली सिंधु मां आयो

ऐं हल्यो वियो पर जमियतराइ जे सजे परिवार ते हू पुरिज़ोरु असरु छडे वयो हुओ जेको हुओ; संदसि पंहिंजपाईअ वारो सहज सुभाउ ऐं पंहिंजे असुली कुटुंब सां न टुटंदड़ मोहु ऐं रिश्तो।

हमीद ख़ान ई साणियो हरदास आहे या न इन्हीअ खे साबित करण लाइ काफी डॉक्टरी जांच जी ज़रूरत आहे पर हक़ीक़त में डिठो वञे त इन्हीअ खां वड्डा बिया बि घणेई सुवाल आहिनि। छा हू पंहिंजीअ कुंवारि खे छडींदो? छा हू पंहिंजो धर्म बदलाईंदो? छा हू उन्हीअ परिवार लाइ पंहिंजी ज़िमेवारी छडे ड्रींदो, जिनि खेसि पाले पोसे वड्डो कयो ऐं अजु जो जवानु हमीद ख़ान बणायो। सभु ड्ढाढा गंभीरु ऐं नाज़ुक सुवाल आहिनि।

मूं जमियतराइ खां पुछियो, ''काका साईं तव्हां जी आत्मा छा थी चवे?''

जमियतराइ ठह पह जवाबु डिनो, असीं पंहिंजीअ ख़ुशीअ लाइ बिए जे ख़ुशीअ खे दफ़नु त कोन कंदासीं। जेकडहिं कंहिं बि तरह इहो साबितु थी थो वञे त हमीदु ख़ानु असांजो पुटु आहे तडहिं बि असीं इहो न चाहींदासीं त हू पंहिंजे परिवार खे छडे, पंहिंजियुनि ज़िमेवारियुनि खां किनारो करे असां वटि हलियो अचे। असीं हिकु बियो विरहाडो हर्गिज़ न चाहींदासीं।

नवां लफ़्ज़ :

विरहाडो = बटवारो।
ग़ाल्हियुनि जो गोथरो = घण ग़ाल्हाऊ।
चोरा खोरा = उणि तुणि।
ख़ातू = रिपोर्टरु।
तानो बानो = ख़ाको, प्लाटु।
ब्राकर कुटो मचणु = गोड़ ऐं हाहाकार थियणु।
जिंदु छडाइण = आजो थियणु।
सरनामो = ऐड्रेस।
शरिकत करणु = शामिलु थियणु।
तह में वञणु = गहिरी जांच करणु।

:: अभ्यास ::

सुवाल: I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब 10-20 लफ़्ज़नि में डियो:-

(1) जमियतराइ सां गडु हिन्दुस्तान केरु-केरु आया हुआ?

(2) हरदास हाणे कहिड़े नाले सां सडजण लगो हो?

(3) 'हिकु बियो विरहाडो' कहाणीअ जे मार्फ़त लेखक असांखे कहिड़ो संदेशु डिनो आहे?

सुवाल: II. हेठियनि सुवालनि जा जवाब 50-60 लफ़्ज़नि में डियो:-

(1) हरदास कहिड़ा ब्र सुठा कम कया?

(2) हरदास हामिदु ख़ानु कीअं बणियो?

(3) हारदास जे मन में कहिड़ी चोरा ख़ोरा लग़ी पेई हुई।

सुवाल: III. हेठियनि सुवालनि जा जवाब खोले लिखो:-

(1) हरदास पंहिंजे माउ-पीउ खे कीअं वापिस मिलियो?

(2) जमियतराइ हिकु ब्रियो विरहाडो छो न थे चाहियो?

(3) हमीद ख़ान सिन्ध मोटण वक्त जमियतराइ जे परिवार ते कहिड़ो असरु छड्डे वियो?

सुवाल: IV. हेठियां हवाला खोले समुझायो:-

(1) ''यार! तूं हुजीं हां त मज़ो ई कुझु और हुजे हां!''

(2) ''काका साईं तव्हां जी आत्मा छा थी चवे?''

(3) ''असीं पंहिंजीअ ख़ुशीअ लाइ ब्रिए जे ख़ुशीअ खे दफ़नु त कोन कंदासीं।''

●●

(12)

सिन्धी शख़्सियतुनि ते निकितल टपाल टिकलियूं

– डॉ. कमला गोकलाणी

मर्कज़ी सरकार जो कारोबार काम्याबीअ सां हलाइण लाइ घणाई विभाग या खाता बर्पा कया विया आहिनि, तइलीम, मेडिकल, माली वज़रात, इंसानी वसीला, सामाजिक न्याय, जन संचार, टपाल ख़ातो वग़ेरह।

टपाल ख़ातो ख़ासु अहिमयत रखे थो। जंहिंजा घणा ई कम भारतवासियुनि जे भले वास्ते आहिनि, पर ख़ास अहम कमु आहे हिक शहर मां मोकिलयल टपाल ब़िए शहर में ड्रिनल ऐड्रेस ते पहुचाइणु जंहिं लाइ उन लिफ़ाफ़े ते टिकलियूं लग़ायूं वेंदियूं आहिनि, पर टिकल्युनि जी फ़कत इहा अहमियत न आहे, उहे टिकलियूं इतिहासिक अहमियत रखनि थियूं। ज्ञाण वधाईनि थियूं। वास्तेदार शख़्स या जग़हिं जी ज्ञाण खे दाइमी तौर महफ़ूज़ रखनि थियूं। भारत में हर साल अटिकल असी करोड़ रुपयनि जूं टिकलियूं विकामी इस्तैमाल थींदियूं आहिनि।

अजु असीं सिन्धु, सिन्धी शख़्सियतुनि ते जारी थियल टपाल टिकल्युनि बाबत ज्ञाण हासुल कंदासीं।

टपाल टिकिल्युनि जो इतिहासु अटिकल 170 साल पुराणो आहे। दुनिया जी पहिरीं टपाल टिकली जारी करण वारो मुल्क ब्रिटेन हो। सन् 1843 में ब्राज़ील, 1847 में अमेरिका ऐं फ्रांस, 1849 ई. में जर्मनी ऐं जुलाई 1852 में एशिया जी पहिरीं टपाल टिकली गड्डियल भारत जे सिन्ध प्रांत जे कराची शहर मां जारी कई वेई। भारतीय डाक विभाग वक्त बि वक्त देश जे महान शख़्सियतुनि, सियासतदाननि, क्रांतिकारियुनि, देश भग़तनि, कलाकारनि, शहीदनि, संतनि, पसूं-पखियुनि, गुलनि-फुलनि, रांदियुनि, इमारतुनि ते टिकलियूं जारी कयूं आहिनि।

आज़ाद भारत जी पहिरीं टपाल टिकली 21 नवम्बर 1947 ई ते साढे टीं आने जी जारी थी, इनते 'जयहिन्द' लिखियलु हो ऐं आज़ादीअ जी पहिरीं सालग्रह ते गांधीजीअ वारियूं चार टिकल्यूं जारी कयूं वेयूं। इहे टिकल्यूं डेढ आने खां डुहें रुपये ताईं जूं हुयूं। इएं महात्मा गांधीअ ते सज़ी दुनिया में अटिकल 100 मुल्कनि में टिकलियूं ऐं ब्री सामग्री जारी कई वेई आहे।

वीहें पैसे जी सिन्धी समाज जी सभ खां अवल टपाल टिकली मशहूर तइलीमदान साधू टी.एल. वासवाणीअ जे याद में उन्हनि जी जनमु शताब्दी जे मौके जे टिनि वर्हीनि खां पोइ जारी कई वेई। 25 नवम्बर 1969 ई में 3.8सेमी×2से.मी. जी टिकली जारी कई वेई।

पूने में दादा जो मीरा तइलीमी संस्थान ऐं केतिरनि शहरनि में संदसि याद में बर्पा थियल साधू वासवाणी स्कूल, साधू वासवाणी मिशन पारा थींदड़ घणाई परउपकार जा कम संदनि महानता जी साख डियनि था। 25 नवम्बर संदनि जन्मु मीटलेस डे जे रूप में मल्हायो वञे थो।

मशहूर देश भक्त भाई परमानन्द (1869-1958) ते 24 फरवरी 1979 ते 25 पैसे जी टिरंगी टिकली जारी कई वेई।

सदा हयात हेमू कालाणीअ जी लासानी शहादत खे मान डींदे 18 अक्टूबर 1983 ई. ते भारत जी उन वक्त जी वज़ीर-ए-आज़म श्रीमती इंदिरा गांधीअ हथां जारी कई वेई। 50 पैसे जी उहा टिकली याद डियारे थी त हेमूअ कीअं न फूह जवानीअ में देश सदिके फासीअ जो फंदो गिचीअ में विधो।

मुछुनि मस आई हुयइ रेह
फंदो फासीअ जो हथ में पाण
झले बीठे आहे जोधा जुवान
उमिरि हुयइ वीह वर्हीन बि कान
कयइ कुर्बान देस लाइ देह।

आचार्य भगवानदेव पहिरियों सांसद हो, जंहिं पार्लियामेंट में सिन्धीअ में कसम खणी मातृभाषा जो मानु मथाहों कयो। विश्व सिन्धी सम्मेलन कोठाइण में संदसि योगदान हो। उन मोके ते ई हेमूअ जी टिकली जारी थी।

सिन्धी समाज जा गौरव, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीअ जा महासचिव ऐं 1946 ई. में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीअ जा अध्यक्ष रहियल आचार्य जे.पी. कृपलाणीअ ते 11 नवम्बर 1989 ते टपाल खाते 60 पैसे जी टिकली जारी कई।

प्रजापिता ब्रह्मकुमारीज मिशन जे संस्थापक दादा लेखराज ते टपाल खाते 7 मार्च 1994 में हिक रुपये जी टिकली जारी कई। अजु देश विदेश में अठ हज़ार सेंटर धर्मी सिख्या ड्रेई रहिया आहिनि। संयुक्त राष्ट्र संघ पारां बि संस्था खे मञुता हासुल आहे।

जयरामदास दौलतराम हिक कद्दावरु लाइकु ऐं इज़्ज़त याफ़्ता कौमी नेता हो। संदसि जनमु कराचीअ जे नाम्यारे सिन्धी कुटम्ब में 21 जुलाई 1891 में थियो। गांधीजी सां काफी वेझिड़ाई,

स्वतंत्रता सेनानी, 1947 में बिहार जो गवर्नर, 1948 में फुड एंड एग्रीकल्चर खाते जो यूनियन मिनिस्टरु, 1950-1955 ताईं आसाम जो गवर्नर रहियो। दिल्लीअ में 1 मार्च 1979 ते लाड्राणो कयाईं।

भारत जे टपाल खाते संदसि सेवाउनि जो कदुरु करे, खेसि कौमी नेता तस्लीम कंदे मथिसि 21.7.1985 ते 50 पैसे जी टपाल टिकली जारी कई।

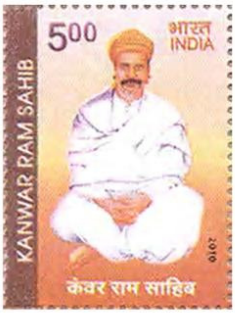

भगुत संत कंवरराम ते टपाल खाते पारां 26 अप्रेल 2010 ते राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल हथां 5 रुपये जी टिकली जारी कई वेई, जिते सवें सिन्धियत प्रेमी मौजूद हुआ।

सिन्धियुनि जे इष्टदेव झूलेलाल ते 5 रुपये जी शानदार टिकली 17 मार्च 2012 ते दिल्लीअ में उन वक्त जे इंसानी वसीला ऐं वाधारे जे मंत्री कपिल सिब्बल हथां भव्य समारोह में जारी थी। साग़िए वक्त अजमेर में उन वक्त जे जन संचार वज़ीर सचिन पायलट ऐं अहम शख़्सियतुनि हथां हज़ारहं सिन्धियत प्रेमियुनि साम्हू झूलेलाल टिकली जारी कई।

———

नवां लफ़्ज़ :

महफ़ूज़ = सुरक्षित, संभाल सां। **बर्पा थियल** = शुरु थियल ।
रेह = लीक, लकीर। **हड्ड ड्रोखी** = भलो चाहींदड़ ।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा मुख़्तसर जवाब लिखोः-

(1) टपाल टिकलियुनि जी कहिड़ी अहमियत आहे?

(2) एशिया जी पहिरीं टपाल टिकलीअ बाबत ज्ञाण ड्रियो।

(3) साधू वासवाणीअ बाबत मुख़्तसर ज्ञाण ड्रियो।

(4) हेमू कालाणीअ ते जारी थियल टपाल टिकलीअ बाबत ज्ञाण ड्रियो।

(5) भगत कंवरराम ते टपाल खाते पारां निकितल टिकलीअ बाबत ज्ञाण ड्रियो।

(6) इष्टदेव झूलेलाल ते जारी थियल टपाल टिकलीअ बाबत ज्ञाण ड्रियो।

सुवालः II. हेठिएं सुवाल जो जवाब खोले लिखोः-

जिन शख़्सनि ते टपाल टिकलियूं जारी थियूं आहिनि, उन्हनि जी मुख़्तसर ज्ञाण ड्रियो।

वहिंवारी कमुः अहमियत रखंदड़ टपाल टिकल्यूं गड्ढु करियो।

●●

(13)

जज़्बो

– डॉ. सुरेश बबलाणी

लेखक परिचय:-

डॉ. सुरेश बबलाणी जो जनम 11 आगस्त 1962 ते अजमेर में थियो। हीउ साहिब पी.डब्ल्यू.डी. में एडिशनल प्राईवेट सेक्रेट्री जे ओहिदे ते कमु कंदा आहिनि। बबलाणी ज़हीनी होशियारु, ब्रहुगुणी प्रतिभा जो धनी, जोशीलो कलाकारु, सुठो कहाणीकार, एकांकीकार, मज़मून निगार आहे। हिनजूं मुख्य रचनाऊं: मुअन जो दड़ो, सिन्धी लोक कलाऊं, ड्राजो, साओ वणु ऐं जज़्बो आहिनि। 'जज़्बो' एकांकी गुलदस्तो आहे। हिन एकांकी संग्रह में सत एकांकियूं आहिनि। जज़्बो में शामिल एकांकियूं ज़ातल सुञातल मुद्दनि ते लिखियल हूंदे बि विषय खे रोचक नमूने पेश कयूं वयूं आहिनि।

हिन एकांकीअ में असांखे फ़र्ज़ अदाई देश भक्ति, सिन्धी संस्कृति ऐं अज़ोकनि मसइलनि जी झलक मिले थी।

पात्र परिचय :

1.	सुन्दरदास	सरकारी मुलाज़िम उमिरि 50-52 साल
2.	कविता	सुन्दर जी ज़ाल सरकारी मुलाज़िम उमिरि 48-50 साल
3.	डॉक्टर	सुन्दर जो दोस्तु उमिरि 40-42 साल

4.	लेडी इंक्वारी ऑफिसर	वणंदड़ पोशाक में ठाहूकी एयरपोर्ट जी मुलाज़िम उमिरि 30-35 साल
5.	मर्दु 1	उमिरि 48-50 साल
6.	मर्दु 2	उमिरि 48-50 साल
7.	मर्दु 3	उमिरि 35-38 साल
8.	सुनीता	सुन्दर ऐं कविता जी नुंहं उमिरि 28-30 साल

(मंच ते रोशनी थिए थी। ड्राइंग रूम जो सीन। मंच ते सोफा ऐं सेन्ट्रल टेबल पई आहे। कविता जो ब्राहिरिएं दरवाज़े खां अचणु)

सुन्दर अख़बार पढ़े थो । कविता चांहि ऐं बिस्कूट खणी अचे थी। अचो चांहि पियूं ..... (ब्रुई चांहि था पियनि) ।

कविता सुबुह जो त कम में टाईम निकिरी थो वञे पर शाम जे वक्त त घरु जुण खाइण थो अचे।

सुन्दर छो भाई?

कविता ब्रार घर में हून्दा आहिनि त विन्दुर लग़ी पेई हूंदी आहे।

सुन्दर ग़ाल्हि त ठीक आहे पर ब्रार जे वड्डा थींदा त कम कार लाइ अन्दर ब्राहिर त अचिणो वञिणो पवंदो न!

कविता केतिरो चयोमांव त नरेश खे हिते ई किथे नौकरीअ ते लग़ारायो।

सुन्दर छा इन्हीअ लाइ नरेश कोशिशूं न वरितियूं? घणा फार्म भरयाई! केड्डी न इच्छा हुअस त मिलट्री या पुलिस में ऑफीसर थियां।

कविता हा, बिल्कुल। मिलट्रीअ में त फिजीकल टेस्ट में डॉक्टरनि अनफिट करे छड्डियुसि।

सुन्दर चवनि त वज़न वधीक अथसि।

कविता खाईंदड़ पीअन्दड़ घर जो ब्रारु वज़न त हूंदो न?

सुन्दर कविता, वजन लम्बाईअ जे आधार खां वधीक हुयुसि।

कविता ऐं पुलिस ऑफीसर लाइ पर्सनल इन्टरव्यू में रहिजी वियो।

सुन्दर हा, छोकरो बि जिद ते त कुझु अलग़ करियांऐं इन चाहना में ब्राहिर वञी सिक्यूरटी ऑफीसर जी पोस्ट ग़ोल्हयांई।

कविता हा बराबर पहिरी मुसाफिरीअ ते आयो त केड्डो न खुश हो। रोज़ नवां चैलेंज। कुझु न कुझु नओं करण लाइ थो मिले।

सुन्दर ऐं हिते ईंदें तो बि नओं करे डेखारियुसि। झट मंगनी पट शादी।

कविता हा ब्रियो, ब्रार पहिंजनि पेरनि ते बीठो आहे ऐं छोकरी बि सुठी नज़र में हुई त पोइ देर छाजी कजे?

सुन्दर हा, ग़ाल्हि त ठीक आहे पर नरेश खे फैमिली गड्डु रखण जी इजाज़त अञां न मिली आहे वेचारी सुनीता अकेली.....।

कविता अकेली छो आहे ? असां जो आहियूं।

सुन्दर आहियूं त सही पर बि जे मुड़िसु गड्डु हून्दो आहे त चेहरे जी चमक कुझु अलग़ हून्दी आहे।

कविता इहो तव्हां कीअं था चई सघो ?

सुन्दर तोखे ड्रिसी करे।

कविता मूंखे ?

सुन्दर हा। मां न ब्र-चार ड्रींह ब्राहिर वेन्दो आहियां त कीअं न उझामी वेन्दी आहीं।

कविता तव्हांखे कहिड़ी खबर?

सुन्दर अरे भाई, नरेश बुधायो हो। त पापा, तव्हां ब्राहिर वेन्दा आहियो त मम्मीअ जे चेहरे जी रौनक ई घटिजी वेन्दी आहे।

कविता चङो हाणे छड्डियो। इहो त बुधायो सुनीता खे घणनि ड्रींहनि लाइ मोकल ड्रिनी अथव।

सुन्दर मूं त पिणसि खे चयो भले जेसीं दिल थियेसि रहे। दिल भरिजी वञेसि त छड्डे वञजोसि।

कविता माइटनि मां बि का दिल भरिजंदी आहे छा ?

सुन्दर तोखे न थो वणे त ठीक आहे मां फोन करे चवांसि थो त छड्डे वञेसि।

कविता हा-हा, भले चओसि.....। हा, पर मूं थे चयो त घणा ड्रींहं थिया आहिनि नरेश जो फोन ई कोन आयो आहे!

सुन्दर अञां टियों ड्रींहुं ई त फोन कयो हुआईं। चयाईं कोन पिए त मुंहिंजी हिक ब्रिनि ड्रींहंनि में मुंहिंजी मोकल मंज़ूर थियण वारी आहे। हाणे टिकेट कराए ई फोन कन्दुसि।

कविता अरे हा मूंखे त वेसरि थी पेई आहे। चयो त हुआंईं पर बि छुट्टी मिलियसि या न फोन करे बुधाएव हां न।

सुन्दर अरे भाई, रुग़ो वन इंडिया-वन रुपीज़ जी घोषणा थी आहे। वन वर्ल्ड-वन रुपी जी न। फोन ते पैसा था लगनि।

कविता माउ पीउ खां मथे पैसा आहिनि छा?

सुन्दर न, भाई न। हुन जे फोन न कयो आहे त तूं ई खणी करि। तुंहिंजे मोबाईल में पैसा त आहिनि न?

कविता हा, आहिनि त सही।

सुन्दर त पोइ लग्राईसि। कंजूसी छा जी?

(कविता मोबाइल नम्बर थी मिलाए। एतिरे में सुन्दर जे मोबाइल ते घंटी वज्रे थी, कढी नम्बर थो ड्रिसे ।)

ड्रिसु, नरेश जो फोन अची वियुइ। कीअं न तार जुड़ियल अथव । तूं हुनखे पेई मिलाईं ऐं हू तोखे।

कविता तार तव्हां सां मिलयल अथसि । न त घिंटी मुंहिंजे मोबाइल ते न अचे हा!

सुन्दर तुंहिंजो मोबाईल बिज़ी लग्रो पियो आहे। उनते घिंटी कीअं ईंदी? हाणे वठु, पंहिरीं तूं ग्राल्हाईंस। (मोबाईल कविता खे ड्रिए थो।)

कविता हा पुट सत्नाम.... कीअं आहीं, ठीक आहीं? छा चयुइ, तो मूंखे पिए फोन लग्रायो अरे, मां वरी तोखे पई लग्रायां। हा पुट, तूं कड्रहिं थो अचीं? छा चयुइ, परीहं जी फ्लाईट सां...। अरे वाह....! केड्री महिल जी अथई....? रात जो ! हा, सुठो सुठो। हा असां तोखे वठण ईंदासीं। छा चयुइ न अचूं... पर छो? दोस्त.....कहिड़ो.....? अच्छा मोहन.....। पोइ बि छा थियो.....? न न, असां तोखे वठण ईंदासीं.....। चङो, ज़िदु न करि.....! हा वठु पापा सां ग्राल्हाइ।

सुन्दर हां बेटू, कींअ आहीं.....? अच्छा..... त पुटड़ा असां एयरपोर्ट ते अची वेंदासीं....। रात जो फ्लाईट आहे त छा थियो....? का तकलीफ़ कोन थींदी । छा चयुइ, मोहन बि तोसां गड्रु आहे । ब्रई टैक्सी करे घरि अची वेन्दा। चङो पुटड़ा जीअं तुंहिंजी मर्ज़ी । अच्छा, फ्लाईट जो नम्बरु कहिड़ो आहे? एयर इंडिया जी फ्लाईट अथई। कहिड़ो नम्बरु आहे? ए.आई. 1108 । अच्छा इहा फ्लाईट हिते घणे बजे पहुचंदी? सुबुह जो 4 बजे । तूं 6 बजे ताईं घरि पहुची वेंदे। छा, सुनीता किथे आहे? पुट, पेके वई आहे। सुठो। छा चयुइ, सुनीता खे न बुधायूं, सरप्राईज ड्रींदेंसि। चङो, ठीक आहे। चङो पुट चङो सत्नाम। कविता, नरेश परींहं पियो अचे। तूं हीअं करि ड्रिसु घर में का शइ शिकिल घटि त कोन्हे? झटु लिस्ट ठाहे ड्रे त मां वञी बाजार मां वठी अचां, अरे हा, नरेश खे ख़ोराक ड्राढी वणंदी आहे, उहा बि ठाहे रखिजांइ।

कविता अरे साईं, घर में का बि शइ घटि कोन्हे । रहियो सुवालु ख़ोराक जो, उन लाइ ख़सख़स, काजू, बादाम, डूंगियूं वठी अचो।

सुन्दर हा हा, जल्दी करि ड्रिसु, नरेश खे खाजुनि जी लाई बि ड्राढी वणंदी अथसि, गुडु ऐं खाजा बि लिखजांइ।

कविता हा सांई हा, सभु लिखां थी। हाणे तव्हां चांहि त पूरी करियो।

(सुन्दरु हिक ढुक में चांहिं ख़तमु करे थो ।)

कविता अचे, हीअ लिस्ट वठो ।

सुन्दर हा, थेल्हो बि डेई छड्डि।

कविता अरे बाबा, प्लास्टिक जी थैलीअ में खणी वठी अचिजो।

सुन्दर कविता, घर में जड्डहिं थेला आहिनि त पोइ प्लास्टिक जे थैलियुनि में छो खणी अचां? अरे भाई, थैली छोड़ो थैला पकड़ो।

कविता तव्हां त असुल घोषणाउनि ते अमल शुरू था करे छड्डियो।

सुन्दर शुरूआत केरु त कंदो।

कविता केर में तव्हां शामिल थियो, ब्रियो न।

सुन्दर ब्रियनि जी नकल असां कयूं यां ब्रिए असांजी नकल कनि, तोखे छा सुठो लगंदो?

कविता ब्रिया असांजी कनि।

सुन्दर त पोइ बस, डे जल्दी थेलो।

(फैड आउट, फैड इन)

सुन्दर ब्राहिरां अचे थो। हथ में अख़बार अथसि कविता खे आवाजु लगाईंदे।

सुन्दर कविता-कविता ! अरे भाई, अञां सुम्ही पई आहीं छा?

कविता सुम्हीं वरी कीअं पई हूंदसि, रधिणे में आहियां, चांहि पई ठाहियां। इझो अचां पई।

सुन्दर हा हा, खणी अचु। मां समिझो त ब्रियनि ड्रींहंनि वांगुरु अजु बि सुम्ही पई आहीं । मां सुबह जो चक्कर बि लगाए आयुसि।

कविता मुंहिंजी त रात खां वठी निंड ई फिटी पई आहे। इहो ई पिए सोचियो त केड्डी महिल सुबुह थींदो ऐं केड्डी महिल नरेश ईंदो।

सुन्दर हा, मूंखे ख़बर आहे त रुगो पिए पासा वरायइ ।

कविता इन जो मतिलबु त तव्हां खे बि निंड कोन आई। (सुन्दर खिले थो ऐं चांहि थो पिये। अख़बार खोले थो।)

कविता साढा छः था थियनि, नरेश अञां कोन आयो आहे?

सुन्दर अची वेन्दो ! फ्लाईट लेट थी सघे थी।

कविता गाड्यूं त लेट थींदियूं आहिनि, फ्लाईट बि लेट थींदी आहे छा?

सुन्दर अरे भाई, थींदियूं आहिनि, थींदियूं आहिनि। (अख़बार पढ़ंदे-पढ़ंदे) अचे हीउ पढु..... छपते छपते, हिकु ब्रियो हवाई जहाज़ु दहशत गर्दनि अग़वा कयो.....।

कविता छा चयुव..... छा चयुव.... मुआ मरनि शल.... पढ़ो पढ़ो।

सुन्दर लिखे थो, एयर इंडिया जो हिकु जहाज़ु जेको मस्कट खां कराचीअ जे रस्ते दिल्ली अची रहियो हो उनखे कराची खां उड़ाम भरण खां पोइ अग़ुवा याने हाई जैक करे छड्डियो अथऊं ऐं दिल्लीअ जे बदिरां अमृतसर हवाई अड्डे ते लाथो वियो आहे। बुधायो वञे थो त हवाई जहाज़ में स्टॉफ सूधा कुल 285 मुसाफिर आहिनि।

कविता छा चयुव, मस्कट खां दिल्ली।

सुन्दर हा।

कविता फ्लाईट जो नम्बरु त ड्रिसो, कहिड़ो ड्रिनो अथनि।

सुन्दर फ्लाईट जो नम्बरु हां, फ्लाईट नम्बरु आहे ए.आई.-1108

कविता छा चयुव..... तव्हां ..... नरेश खां फ्लाईट नम्बरु वरितो हो न? संदसि फ्लाईट जो कहिड़ो नम्बरु आहे?

सुन्दर हा हा, उन जो नम्बरु त मूं हिते कंहिं पने ते लिखियो हो....। हां ड्रिसु, ए.आई.-1108।

कविता छा? छा चयुव.... (चक्कर खाई किरी थी पवे)

सुन्दर कविता..... कविता.... (पाणीअ जो गिलासु खणी थो अचे। मुंहं ते छंडा थो हणेसि)..... कविता.... कविता... (धीरे-धीरे कविता होश में अचे थी.....सुन्दर कुझु नार्मल थो थिए)

कविता मां किथे आहियां..... नरेश..... नरे..... (वरी बेहोश)

सुन्दर कविता..... कविता.... (वरी छंडा थो हणेसि। लोड्डाएसि थो, पर होश में नथी अचे। मोबाईल खणी हिकु नम्बरु थो मिलाए) हैल्लो हैल्लो डॉक्टर साहिब मां सुन्दरु..... सुन्दरु थो ग़ाल्हायां। मुंहिंजी वाईफ़ कविता खे..... कविता बेहोश थी वेई आहे। प्लीज़, तव्हां जल्दी अचो..... छा पंजें मिनट में हा, हा, जल्दी अचो। मेहरबानी, मेहरबानी (चक्कर पियो कटे, केड्डी महिल हथनि ते मालिश,त केड्डी महिल पेरनि खे मालिश थो करे। दरवाज़े ते आवाज़ । डुक पाए दरवाज़ो थो खोले).... अचो अचो डॉक्टर साहब, प्लीज़।

डॉक्टर किथे आहे भाभी, छा थियो? (स्टैथोस्कोप कननि ते लग़ाए चेक थो करे, पल्स थो ड्रिसे, बी.पी.एप्रैटस सां बी.पी. थो मापे।)

डॉक्टर भाई, ओचितो छा थियो, कुझु बुधाईंदा।

सुन्दर डॉक्टर साहब हू... असांजो पुटु नरेश जंहिं फ्लाइट में आयो थे.... उनखे, दहशतगर्दन हाई जैक करे छड्डियो आहे, इहो बुधी कविता बेहोश थी वेई।

डॉक्टर ओह, नो..... ! शॉक जे करे..... आइ सी..... मां इंजेक्शन हणां थो । कुझु ई देरि में होश में अची वेंदी।

सुन्दर जी जी, (डॉ. इन्जेक्शन हणे थो) डॉक्टर साहब, का घब्रिराइण जी ग़ाल्हि त कोन्हे न? सब कुझु ठीक थी वेन्दो न?

डॉक्टर हा हा सुन्दरदास, घब्रिराइण जी का ग़ाल्हि कोन्हे। मां इंजेक्शन हणी छड्डी आहे, तव्हां बेफ़्रिक रहो। थोड़ी ई देर में होश अची वेंदुसि।

सुन्दर मां चाहियां थो जेसीं कविता खे होश अचे तेसीं तव्हां जेकर हिते ई वेठा हुजो।

डॉक्टर सुन्दरदास, इहा का चवण जी ग़ाल्हि आहे? मां हिते ई आहियां।

सुन्दर थैंक यू, डॉक्टर साहब थैंक्स।

डॉक्टर इनमें शुक्राना मञण जी का ग़ाल्हि कोन्हे। सुन्दरदास, इन्सान ई इन्सान जे कमि ईंदो आहे। पाण हम क्लासी ई न पाड़ेसिरी बि आहियूं। दोस्त ऐं पाड़ेसिरी सां गड्डु हिकु डॉक्टर हुअण जे नाते मुंहिंजो फ़र्ज़ु आहे त जेसीं मरीज़ ठीक न थिए मां उनजी चडी तरह परघोर लहां।

सुन्दर हा हा डॉक्टर साहब, तव्हां चओ त ठीक था।

डॉक्टर ड्रिसो तव्हां मूंखे बार-बार डॉक्टर साहब, चई शर्मिन्दो न कयो। तव्हां मूंखे सुनील चई सघो था।

सुन्दर छा.....? ओ.के. मिस्टर सुनील।

डॉक्टर मिस्टर सुनील न, रुग़ो सुनील।

सुन्दर हा सुनील, मूं चयो पिये त सभिनी खे पंहिंजा अधिकार यादि हूंदा आहिनि पर फ़र्ज़ न। जेकड्डहिं सभेई पंहिंजा पंहिंजा फ़र्ज़ अदा कनि त जेकर किथे बि असंतोष न फहिलिजे।

डॉक्टर हा, तूं बिल्कुल ठीक थो चईं। इहा ई सिख्या माइट पंहिंजनि ब़ारनि खे ड्रियनि ऐं स्कूलनि में अहिड़ियूं सिख्याऊं मिलनि त जेकर असांजो मुल्क वरी खुशहालु थी वञे।

सुन्दर हा सुनील, तूं बिल्कुल ठीक थो चवीं पर तुंहिंजी भाभीअ खे अञां..... होश.....।

डॉक्टर हा, हिकु मिन्टु ।(वरी चेक थो करेसि) हा तव्हां चयो पिए पंहिंजो नरेश जंहिं फ्लाईट में आयो थे उनजो अपहरणु थी वियो आहे।

सुन्दर हा, बिल्कुल। हीउ ड्रिसु अख़बार।

डॉक्टर तोखे पक आहे त नरेश इन्हीअ फ्लाईट में बोर्ड थियो हो?

सुन्दर हा, बिल्कुल। हुन मूंखे टियों ड्रींहुं फोन करे फ्लाईट जो नम्बरु बुधायो हो।

डॉक्टर घणाई दफ़ा ईएं थींदो आहे त फ्लाईट में माण्हू बोर्ड न थी सघंदो आहे । तो वटि हिनजी फर्म जो को नम्बरु आहे?

सुन्दर हा, बिल्कुल आहे।

डॉक्टर त पहिरीं कनफर्म करे वठूं।

सुन्दर हा हा, पहिरीं कनफर्म था करियूं । (डायरीअ मां नम्बर कढी मिलाए थो) हैलो, मां दिल्लीअ मां सुन्दरु ग़ाल्हाए रहियो आहियां, नरेश जो पापा.....। छा मां जीवतराम सां ग़ाल्हाए सघां थो.....? छा, ग़ाल्हाए रहिया आहियो..... हा..... ड्रिसो मुंहिंजो पुटु जेको तव्हां जी कम्पनीअ में सिक्यूरिटी ऑफिसर आहे, उहो छुटियुनि में घर अचणो हो काल्ह रात फ्लाईट हुअसि, हू निकितो या न .....? हा.... छा, छा चयुव निकतो आहे। कहिड़ी फ्लाईट में? छा चयुव ए.आई.1108 में। ओह नो!

डॉक्टर सुन्दर प्लीज, हिम्मथ रखु यार।

सुन्दर हा..... हा.....

डॉक्टर भग़वान ते भरोसो रखु सभु ठीक थी वेन्दो, अरे हेड्डांह ड्रिसु, भाभीअ खे होश अची वियो नमस्ते भाभी, नमस्ते।

कविता हू..... हू.... केरु नरेश..... नरेश..... हेड्डांह मां.....।

डॉक्टर नरेश बिल्कुल ठीक आहे। हा, तव्हां पंहिंजे घर में ई आहियो..! सुन्दर हेड्डांह बीठो आहे।

कविता छा चयुव, ठीक आहे? किथे आहे?.....

सुन्दर हा, बिल्कुल ठीक आहे । बिल्कुल । तूं..... तूं .....हाणे कींअ थी महसूस करीं।

कविता (उथी विहे थी) मां ..... पहिरीं खां ठीक..... आहियां, हेड्डांह नरेश....।

सुन्दर डॉक्टर साहिब ठीक था चवनि हू बिल्कुल ठीक आहे।

डॉक्टर भाभी, तव्हां जे टेंशन करण सां कुझु कोन थींदो। थींदो उहोई जेको साईंअ खे मन्ज़ूर आहे। हिम्मथ रखो।

कविता हूं।

डॉक्टर सुन्दरदास, भाभी हाणे ठीक आहे। मां हलां थो, वरी केड्डी महिल बि ज़रूरत पवे त हिज़ाबु न कजांइ। हिकदम फोन करे घुराए वठिजांइ।

सुन्दर ठीक आहे डॉक्टर ओ सुनील, ओके. थैंक्स। (दरवाज़े ताईं छड्डे कविता जे पासे में थो अची विहे ।) कविता तूं टेंशन न कर । टेंशन करे पंहिंजी तबियत ख़राबु थी करीं ।

अञां त पाण खे इहा ई ख़बर मिली आहे न त दशहतगर्दन हवाई जहाज़ खे अगुवा करे छड्डियो आहे। साईअ जी महिर सां कहिं जान माल जे नुक्सान जी ख़बर.... कोन्हे....

कविता पर मूंखे डपु थो लगे ! अलाए दहशत गर्द हुननि सां कहिड़ी हलत हलंदा हूंदा।

सुन्दर न त मुंहिंजो ऐं न ई तुंहिंजो कड्डहिं दहशतगर्दनि सां वास्तो पियो आहे।

कविता हां। तव्हां ठीक था चओ, पर दहशतगर्द त खतरनाक ई थींदा आहिनि। रोज था अखबारुनि में पढ़ूं।

सुन्दर हींअर साईंअ जे दरि वेनिती करण खां सवाइ असां वटि कोबि ब्रियो चाढ़हो कोन्हे।

कविता हा, तव्हां ठीक था चओ..... पर टीवी खोले ड्रिसो त सही आखिर थियो छा आहे?

सुन्दर तूं शायद भुलिजी रही आहीं त पंहिंजी टीवी कल्ह ई ख़राबु थी वेई आहे.....। हाणे असां वटि रुगो हितां हुतां फोन करे पुछण खां सवाइ को चाढ़हो कोन्हे।

कविता त छा पाण एयरपोर्ट ते नथा हली सघूं?

सुन्दर हा, तूं बिल्कुल ठीकु थी चवीं, असां एयरपोर्ट हली करे सज्ञी ज्ञाण हासुलु था कयूं। पर मूं चयो पिए त सुनीता खे बुधायूं ।

कविता हा,पर..... उहा छा चवंदी त मूंखे काल्ह छो न बुधायुव।

सुन्दर सुनीता समझदार आहे। हीअं करि पाण मोबाईल ते था ग्ाल्हायूंस। हलु।

(फैड आउट। फैड इन)

मंच पूरो रोशन आहे । हाणे मंच ते हिक टेबुल पुठियां कुर्सी रखियल आहे जंहिंते हिक छोकिरी वेठल आहे। कुझु माण्हुनि खेसि घेरे रखियो आहे। (गड्डियल आवाज़) न असांखे बुधायो, दहशत गर्दनि जूं कहिड़ियूं घुरं आहिनि ऐं तव्हां छा कयो आहे? हवाई जहाज़ खे जल्दु बि जल्दु आज़ादु करायो। (सुन्दर ऐं कविता जो अचणु)

इंक्वायरी ऑ.असांजे हथ में कुझु बि कोन्हे।

पुरुष 1 तव्हांजे हथ में कोन्हे त कंहिंजे हथ में आहे ?

इं.ऑ. सरकार जे। मर्कज़ जी सरकार जीअं ठीक समुझंदी तीअं हिन समस्या खे हल कंदी।

पुरुष 2 पर अञां ताईं त तव्हां बुधायो ई कोन्हे त दहशतगर्द घणा आहिनि ऐं उन्हनि जूं घुरूं छा आहिनि?

पुरुष 3 हा... हा.... बुधायो बुधायो।

इं.आ. असां खे जेका ज्ञाण मिली आहे तंहिं मुताबिक हवाई जहाज में टे दशहतगर्द आहिनि ऐं उन्हनि घुर कई आहे त तिहाड़ जेल में बंद उन्हनि जे पंजनि साथियुनि खे छड्डियो वञे।

पुरुष 3 त पोइ तव्हां छा सोचियो आहे ?

इं. आ. मिस्टर, मां तव्हां खे पहिरीं बुधायो हो त सोचणु ऐं करणु जो कमु मर्कज़ी सरकार जो आहे । उन्हनि खे फ़ैसलो वठिणो आहे त हू छा था कनि?

पुरुष 2 सरकार, सरकार बिना कंहिं दबाव जे कमु कोन कंदी आहे । जेसींताईं उन्हनि ते चौतरफ़ा दबाव न पवंदो तेसीताईं हू कदमु कोन खणंदा आहिनि।

पुरुष 3 पोइ इहो कीअं थींदो?

पुरुष 2 कीअं थींदो? असां सरकार ते दबावु आणींदासीं।

पुरुष 2 पर कीअं?

पुरुष 1 हिक नेता जी धीउ खे अग़ुवा था कनि त उन्हीअ खे आज़ादु कराइण लाइ दहशतगर्दन खे छड्डियो थो वञे त छा आम माण्हुनि लाइ सरकार कुझु न कंदी?

पुरुष 2 छो कोन कंदी? असां प्रधानमंत्री ऐं गृहमंत्री जे बंगले ते मुजाहिरो कंदासीं। जेसींताईं असांजा माइट दहशतगर्दन जे पंजनि मां आज़ादु न था थियनि तेसींताईं बुख हड़ताल कंदासीं। भाउरो, हलो त पहिरीं गृहमंत्री जे बंगले ते था हलूं ।

पुरुष 4 हा... हा.... हा.... हलो हलो ।

सुन्दर बीहो, हिकु मिन्टु बीहो सोचियो, भाउरो ज़रा सोचियो। छा तव्हां सोचियो आहे त जिनि दहशतगर्दनि खे जेल मां आज़ाद करण जी शर्त रखी वेई आहे तिनिखे पकिड़ण लाइ केड्डी न जाखोड़ कई वेई हूंदी!

पुरुष 1 असां खे उन सां कहिड़ो मतलबु?

पुरुष 2 असां जे दिमाग़ में रुगो हिक ई ग़ाल्हि आहे त पंहिंजे रिश्तेदारनि खे दहशतगर्दन जे चंबे मां आज़ादु करायूं।

पुरुष 3 हा आज़ाद करायूं, बस।

सुन्दर तव्हां सभु असांजे देश जे नेताउनि वांगुरु ख़ुदग़र्ज़ ऐं मतिलबी थी विया आहियो।

पुरुष 1 हा हा, असीं ख़ुदग़र्ज़ आहियूं, मतिलबी आहियूं।

पुरुष 2 लगे थो, हिन हवाई जहाज़ में तुंहिंजो को सगो मिटु माइट अचण वारो कोन्हे।

सुन्दर हिन अग़ुवा थियल हवाई जहाज़ में मुंहिंजो सिकीलधो पुटु ब्रिनि सालनि खां पोइ अची रहियो आहे।

पुरुष 1 छा चयुइ? सिकीलधो पुट ऐं तूं हिन तरह जूं बेवकूफ़ीअ वारियूं ग़ाल्हियूं करे रहियो आहीं।

सुन्दर जेकड्हिं पंहिंजे मुल्क जे लाइ सोचणु बेवकूफ़ी आहे, त मूंखे बेवकूफ़ु चवाइण में फ़ख़ुरु आहे।

पुरुष 2 सिद्धान्तनि जूं ग़ाल्हियूं कबियूं आहिनि, उन्हनि ते भाषण ड्रिबा आहिनि पर उन्हनि खे हंडाइबो कोन्हे।

सुन्दर हीउ वक्तु भाषणनि जो न पर सिद्धान्तन ते हलण जो आहे। मां चवां थो त जेकड्रहिं असीं सभु चवंदासीं त मुल्क खे हाणे सुभाषचन्द्र बोस, भगतसिंह, चन्द्रशेखर, हेमूं कालाणी, ड्राहिर जहिड़नि जुवाननि जी ज़रुरत आहे । उहे पैदा थियण घुरिजनि। पर असांजे घर में न, पाड़े वारे जे घर में । त मुल्क जी हालति बदि खां बदितर थींदी वेंदी। असांखे गड्रिजी प्रधानमंत्री ऐं गृहमंत्री जे घर ते इन ग़ाल्हि लाइ मुज़ाहिरो करणु खपे त मिलिट्री खे पावरु ड्रियनि त हू जहाज़ में वेठल दहशतगर्दनि खे उड्राए छड्रीनि।

पुरुष 1 उन्हनि खे उड्राइण सां असांजा माइट बि उड्रामी वेंदा । मूं पीरनि खां पिनी पुटु वरितो हो, चइनि भेनरुनि में हिकु भाउ आहे।

पुरुष 2 मुंहिंजा माउ ऐं पीउ आहिनि जेके वरी न मिलंदा।

पुरुष 3 ऐं मुंहिंजी साली।

सुन्दर इन्हीअ अगुवा थियल जहाज़ में हरिको सवार कंहिंजो भाउ, कंहिंजो पुट त कंहिंजो माउ पीउ, सालो साली या भेणवियो आहे । पर तव्हां कड्रहिं सोचियो आहे त जिनि दहशतगर्दनि खे पकिड़ण लाइ असां जी मिलिट्री जा जवान शहीद था थियनि उहे बि कंहिंजा न कंहिंजा मिट माइट आहिनि। मां चवां थो सरकार में सभु अहमक ई अहमक आहिनि छा? असांजे रगुनि में वहंदडु खून जी गर्मी ख़तमु थी वेई आहे? छो न था वठनि फ़ैसलो हवाई जहाज़ में वेठल दहशतगर्दनि खे उड्राइण जो।

पुरुष 1 मां चवां थो त तूं हाणे बसि कर न त मां तुंहिंजो गलो दब्राए हिते ई.....।

पुरुष 2 हा बिल्कुल, बिल्कुल, बिल्कुल.....,

कविता छड्रियो छड्रियो, मां चवां थी.....

इ. ऑ. ही तव्हां छा करे रहिया आहियो? छा हिन जे चवण सां सभु कुझु थी वेंदो? ऐं छा तव्हां जे हिन खे मारण सां समस्या जो हलु निकिरी वेंदो? तव्हां सभु वेही करे सही वक्त जो इन्तज़ारु करियो।

कविता अचो अचो त प्रार्थना करियूं।

सभु गड्रिजी मुसीबत में मालिक मददगारु थींदे..... (सुनीता जो अचणु)

सुनीता (हेड्रांह होड्रांह निहारे करे) मम्मी-पापा, छा थियो ? मूंखे कुझु त बुधायो?

कविता पुट, रुग्रो इहा खबर पई आहे त जहाज में टे दहशतगर्द आहिनि। जिनि पहिंजनि पंजनि साथियुननि जे रिहाईअ जी घुर कई आहे।

सुन्दर पुट, जिनि पंजनि खे छड्डाइणु जी घुर कई वेई आहे तिनिखे पकिड़ण लाइ असांजे मुल्कु जी मिलट्रीअ केतरी न जाखोड़ कई हून्दी। मां त चाहियां थो त सरकार हुननि जूं शर्तूं न मञे।

सुनीता पर पापा, जेकड्हिं आतंकवादयुनि जी ग़ाल्हि न मञींदा त छा हू जहाज़ में वेठल मुसाफ़िरनि खे छड्डे ड्रींदा?

सुन्दर न पुट, उहे वेतरि गुस्से में अची नुक्सान पहुंचाये सघनि था।

सुनीता पोइ पापा, तव्हां ईअें छो था सोचियो? पापा.....।

सभई हा, हाणे वेही समिझाइ पंहिजे पापा खे।

सुन्दर पुट, रोज रोज जे दबाव में अची सरकार दहशतगर्दनि खे छड्डींदी त हू रोज़ु अहिड़ियूं हरकतूं कंदा। इन सां असांजे मुल्क जी मिलट्रीअ जो हौसलो खता थींदो ऐं दहशतगर्दनि जो हौसलो बुलन्द थींदो। असांजो मुल्कु कड्हिं बि दहशतगर्दीअ जी समस्या खां आज़ो न थींदो।

सुनीता हा पापा हा, तव्हां बिल्कुल ठीक था सोचियो। पापा सरकार खे दहशतगर्दनि जूं घुरूं न मञिण खपनि।

सभई छा? तूं बि इहो थी चाहीं?

सुनीता हा मां बि इहो थी चाहियां ।

पुरुष 1 त छा तोखे खबर आहे इनसां कंहिंजो बि नुक्सान थी सघे थो, तव्हांजो बि.....?

सुनीता हा, मां समझा थी।

सुन्दर पुट, मूंखे तोते फ़खुरु आहे। मुल्कु खे तो जहड़ियुनि नौजवानिड़ियुनि जी ई ज़रूरत आहे।

इ. ऑ. हींअर हींअर ख़बर मिली आहे त असांजे मुल्क जे रक्षा मंत्रीअ आर्मी चीफ़ खे हुकुम ड्रिनो आहे त अगुवा कयल जहाज़ में वेठल दहशतर्गदनि खे काबूअ में कनि ऐं जहाज़ जे मुसाफ़िरनि खे आज़ादु कराइनि।

पुरुष 1 रक्षा मंत्रीअ खे ख़बर आहे त हिन जहाज़ में न त को वड्डो माण्हू सवार आहे ऐं न वरी संदसि माइट न त जेकर?

पुरुष 2 तूं ख़ुश थीउ, तुंहिंजे मन जी मुराद पूरी थी आहे।

पुरुष 3 हा.... हा.... खुशि थीउ।

सुन्दर हा.... हा.... मां ख़ुशि आहियां त असांजे मुल्क में अञां ग़ैरत मंद माण्हू आहिनि, भले उन्हनि जो तादादु घटि ई छोन हुजे।

पुरुष 1 थी सघे थो त.....

कविता हा... हा... चओ बीहो न , चओ । थी सघे थो त हिन लड़ाईअ में असांजो.... पुट... हा.... हा.... भली.... भली।

पुरुष 3 न.... न.... मालिक सभु भली कंदो । अचो मिली करे साईअ जे दर प्रार्थना करियूं।

पुरुष 2 हा अचो, गड्डिजी प्रार्थना करियूं। (प्रार्थना सांई... ओ साईं...)

इं. ऑ. हाणे हाणे ख़बर मिली आहे त जहाज़ खे दहशतगर्दनि खां आज़ादु करायो वियो आहे। टेई दहशतगर्द मारिया विया आहिनि । कुझु मुसाफिर बि ज़ख़्मी थिया आहिनि ऐं ब्र मुसाफ़िर मारिया विया आहिनि.....।

पुरुष 1 उन्हनि जा नाला बुधायो।

पुरुष 2 जल्दी करियो, उन्हनि जा नाला बुधायो।

पुरुष 3 घणियूं मायूं ऐं घणा मर्द आहिनि?

इ.आ. हा हा बुधायां थी। पर इन खां पहिरीं हिक ज़ाण ड्रियण चाहींदसि त असांजी आर्मीअ खे हीउ ऑपरेशन काम्याब करण लाइ जहाज़ में सवार ब्रिनि नौजवाननि मदद कई। हुननि दहशतगर्दनि सां जहाज़ में अंदर मुकाबिलो कयो ऐं पंहिंजी जानि तां हथु धोई वेठा.....। उन्हनि जा नाला आहिनि.... मोहन ऐं..... नरेश।

कविता छा..... छा....?

सुन्दर कविता, कविता, ड्रिसु अजु असांजे पुट जो सुपनो साकार थियो आहे, असांजे नरेश बहादुरीअ सां मुकाबलो कयो....।

इ. आ. मिस्टर.....

सुन्दर मां सुन्दरदास सुन्दराणी आहियां।

इ. आ. हा. हा. मि. सुन्दरदास सुन्दराणी, असांजी सरकार फ़ैसिलो कयो आहे त ब्रिन्हीं नौजवानि खे शहीद कोठियो वञे ऐं उन्हनि जे घर वारनि खे पंज-पंज लख रुपया मदद तौर ड्रिना वञनि।

सुन्दर शहीद हा शहीद... मुंहिंजो पुट शहीद चवाईंदो। मूंखे फ़ख़ुरु आहे।

कविता असां हिक शहीद जा माउ पीउ आहियूं । हाणे कोई न चवंदो त सिन्धियुनि वतन जे लाइ जानि न घोरी।

सुनीता ऐं मां, हिक, हिक शहीद जी विधवा .....

सुन्दर पर ऑफिसर इहा मदद न खपे, मेहरबानी करे शहादत खे पैसनि में, पैसनि मे ंन.... पैसनि में... पैसनि में न तोरियो, न तोरियो।

(फैड आउट)

———

नवां लफ़्ज़ :

जज़्बो = भावना

दहशतगर्द = आतंकवादी

जाखोड़ = मेहनत ।

मुज़ाहिरो = प्रदर्शन।

अहमक = मूर्ख ।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब 15-20 लफ़्ज़नि में ड्रियो:-

(1) सेवा छो कई वेंदी आहे?

(2) नरेश जी कहिड़ी नौकरी करण जी इच्छा हुई?

(3) कविता जी निंड छो फिटी पेई?

(4) सुन्दर खे कहिड़ी ग़ाल्हि जो फ़ख़ुरु थियो?

सुवालः II. हेठियनि सुवालनि जा जवाब 50-60 लफ़्ज़नि में ड्रियो:-

(1) 'जज़्बो' एकांकी लेखक जो परिचय लिखो।

(2) सुन्दर हवाई जहाज में वेठल दहशतगर्दनि लाइ कहिड़ो फ़ैसिलो बुधाए थो?

(3) लेडी इंक्वायरी ऑफ़ीसर कहिड़ी ज़ाण ड्रिनी?

(4) तव्हां खे हिन एकांकी में कहिड़े किरदार मुतासिर कयो ऐं छो?

सुवालः III. हेठियां हवाला समुझायो:-

(1) "माउ पीउ खां मथे पैसा आहिनि छा?"

(2) "कविता घर में जड़हिं थेला आहिनि त पोइ प्लास्टिक जे थेलियुनि में छो खणी अचां?"

(3) "असां हिक शहीद जा माउ पीउ आहियूं। हाणे कोई न चवंदो त सिंधियुनि वतन लाइ जानि न घोरी।"

●●

(14)

ड॒ाहरसेन स्मारक, अजमेर

– संपादक मंडल

भारत जे ओलह सीमा जी रखिया कंदड़ सिंधुपति महाराजा ड॒ाहरसेन धर्मात्मा, दानी ऐं शूरवीर हो। सिंधु संस्कृति जे वाधारे में अहम भूमिका निभाईंदड़ु, प्रजा जी परघोर लहदंडु ऐं मातृभूमिअ जो सचो सपूत हो ड॒ाहरसेन। सिन्धु जी उपजाऊ धरती ऐं तरक्की बि आसे-पासे वारनि परड॒ेही राजाउनि लाइ साड़ जो सबबु रही। पर सिन्ध जे सुपात्र देश-भग॒तनि ऐं वीरनि जे करे खेनि हर दफ़े शिकस्त खाइणी पेई।

710ई. खां वठी मुहम्मद बिन कासिम सिन्ध ते हमलो कयो, देवल बंदरगाह खां थींदो डाहरसेन जी राजधानी अलोर ताईं पहुतो। डाहरसेन ऐं उनजी सेना बहादुरीअ सां मुकाबलो कंदे दुश्मननि खे टोटा चबाराया। दुश्मन समुझी विया त सिन्ध फतह करण सवली ग़ाल्हि न आहे। इनकरे उन्हनि छल कपट सां डाहर खे शिकस्त डिनी। हू आख़री साह ताईं लड़ंदे-लड़दें जंग जे मैदान में शहीद थी वियो। उनखां पोइ संदसि ज़ाल लाड्डी बाई, भेण पदमा, धीअरु सूर्यकुमारी ऐं परमाल बि दुश्मननि जो आख़िरी साह ताईं मुकाबलो कयो। अहिड़ीअ तरह डाहरसेन जे सज़े कुटम्ब पंहिंजे देश जी रखिया लाइ बेमिसाल कुर्बानी डिनी।

बेहद फ़ख़ुर जी ग़ाल्हि आहे जो अहिड़े वीर जे याद खे कायम रखण लाइ सज़ी दुनिया में पहिरियों दफ़ो राजस्थान जी सांस्कृतिक राजधानी ऐतिहासिक अजमेर में नगर सुधार न्यास पारां हरीभाऊ उपाध्याय नगर में हिक शानदार स्मारक जोड़ायो वियो आहे। पहाड़ी छिपुनि जे विच में कुदरत जी सूंहं सां सजायल सुहिणी जग़ह ते हीउ स्मारक 30 हज़ार वर्ग मीटर में पखिड़ियल आहे।

अजमेर में ईंदड़ सैलानी दरगाह ऐं पुष्कर सां गड्डु हीउ स्मारक ज़रूर डिसंदा आहिनि।

हिन स्मारक में राजा डाहरसेन जी घोड़े ते सवार अष्टधातु सां ठहियल प्रेरणादायी प्रतिमा खुद ब ख़ुद ध्यान छिके थी ऐं हिन वीर आड्डो श्रद्धा विचां कंधु झुकी वञे थो। गड्डोगड्डु जुदा-जुदा टकरियुनि ते सिन्धियुनि जे इष्टदेव झूलेलाल, गुरुनानक देव, श्रीचन्द्र भगवान, संत कंवरराम, हेमूं कालाणी, राणा रतनसिंह ऐं स्वामी विवेकानन्द जूं संगमरमर जूं दिल छिकींदड़ मूर्तियूं स्थापित आहिनि।

स्मारक जे अंदर टकिरियूं ऐं मुख्य भवन आहे। सामुदायिक भवन ऐं जलसनि लाइ तमामु वड्डो शाही मैदान आहे। हिक पासे चच सभा भवन आहे। भग़त कंवरराम खुलियल मंच आहे, जिते वक्त बि वक्त घणेई कार्यक्रम थींदा रहंदा आहिनि ऐं हज़ारें माण्हू शामिल थी आनन्दु वठंदा आहिनि। स्मारक जी सूंहं में चार चंड लग़ाइण लाइ भारत जे नक़्शे में तलाउ ऐं पाणीअ जो फुहारो ठहियलु आहे।

मुलतान जी मशहूर आदि शक्ति हिंगलाज माता जो मंदिर आहे। जंहिंजी श्रद्धालू श्रद्धा सां पूज़ा कंदा आहिनि। चवनि था त 52 शक्ति पीठनि मां मुलतान में माता जो सिंदूर किरियो हो, सिंदूर खे हिंग बि चइबो आहे ऐं उन जग़ह ते हिंगलाज माता जो मंदिर इतिहासिक अहिमियत रखे थो, उन जी याद डियारण लाइ ई स्मारक ते हिंगलाज माता जो मंदिर जोड़ायो वियो आहे।

स्मारक में चटानुनि खे दीर्घाउनि जो रूप डेई हिन में महाराजा डाहरसेन, राणी लाड्डी बाई, पदमा देवी, सूर्यकुमारी ऐं परमाल जे जीवन सां जुड़ियल प्रेरणा डींदड़ ऐं मन मोहींदड़ चित्र लग़ल आहिनि। गड्डोगड्डु मुख़्तसर इतिहास बि लिखयल आहे।

स्मारक जे सिन्धू संग्रहालय में सिन्ध जी सभ्यता संस्कृति ऐं साहित्य बाबति घणेई तस्वीरूं लग़ल आहिनि, टिमूर्ति कवि- शाह, सचल, सामी, संत महात्माऊं- स्वामी टेऊँराम, बाबा श्रीचन्द्र,

साधू हीरानन्द, साधू नवलराइ, साधू वासवाणी, साध बेले जा संत, शहीद हेमू कालाणी ऐं बिया स्वतंत्रता सेनानी ऐं सिन्धु जे मशहूर शख़्सियतुनि जा चित्र लगुल आहिनि। सिन्धु संग्रहालय जे विच में ठहियल शानदार स्मारक ते सिन्ध जा अहम यादगार स्कूल, कॉलेज, शहर डेखारिया विया आहिनि। भाषा ऐं साहित्य सां वास्तो रखंदड़ घणई तस्वीरूं मौजूद आहिनि।

कदीम सिन्धु संस्कृतीअ जी मूर्तिकला ऐं ऐतिहासिकता साबित कंदड़ निशान रखियल आहिनि। जंहिंसां असांखे सिन्ध जो साख्यातु दर्शन थी वेंदो आहे।

स्मारक जे पुठिएं दर जे भरिसां धरतीअ ते सिन्ध प्रांत जो नक्शो ठहियल आहे, जंहिंमें उतांजे ज़िलनि ऐं मुख्य शहरनि खे उकेरियो वियो आहे। बिए पासे वरी बारनि जे लाइ जुदा-जुदा किस्मनि जा झूला लगुल आहिनि। हकीकत में हिन स्मारक ठहण खां पोइ न रुगो भारत वासियुनि पर दुनिया जे जुदा-जुदा मुल्कनि में रहंदड़ भारतवासियुनि जो पिणु ध्यानु छिकायो आहे।

1997 खां वठी हर साल 25 अगस्त ते डाहरसेन जयंती ऐं 16 जून ते बुलिदान डींहुं धूमधाम सां मल्हायो वेन्दो आहे। चित्रकला, गीत, संगीत, डांस, तकरीर ऐं नाटक चटाभेटियूं थींदियूं आहिनि। हज़ारें माण्हू अची हिन मेले में शामिल थी श्रद्धांजलि पेश कंदा आहिनि। सजे भारत मां ख़ास करे राजस्थान जे सभिनी शहरनि मां बसूं भरिजी ईंदियूं आहिनि। हीअ स्मारक अजमेर जो शानु आहे।

नवां लफ़्ज़ :

परघोर = संभाल ।
टोटा चब्राइण = सबक सेखारण।
शिकस्त = हार।
फतह करण = जीतण, खटणु।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब 15-20 लफ़्ज़नि में डियो:-

(1) सिन्ध सां परडेही मुल्क छो साड़ रखंदा हुआ?

(2) डाहरसेन स्मारक में कहिड़ियूं कहिड़ियूं प्रतिमाऊं लगुल आहिनि।

(3) स्मारक में कंहिंजो मंदिरु ठहियलु आहे।

(4) स्मारक में सिन्धु संग्रहालय में कंहिं कंहिं जा चित्र आहिनि?

सुवालः II. डाहरसेन सिन्धु स्मारक ते अटिकल 200 लफ़्ज़नि में मज़मून लिखो।

●●

(15)

छन्द

– गड्डु कंदड़ : डॉ. सविता खुराना

परिचय:-

डॉ. सविता खुराना जो जनम 11 नवम्बर 1971 ते जयपुर में थियो। हूअ सिन्धी लेक्चरार जे ओहदे ते अजमेर में कम करे रही आहे। हिन सिन्धी ऐं संस्कृत भाषा में एम.ए. ऐं संस्कृत में पीएच. डी. कई आहे। हिन खे राजस्थान सिन्धी अकादमी पारां 2013 में 'सरस्वती पुरस्कार' सां नवाज़ियो वियो ऐं राजस्थान शिक्षा विभाग, बीकानेर पारां मंडल सतह ते श्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार सां सम्मानित कयो वियो। हिन समाज सेवा जे खेत्र में घणेई शेवा जा कम कया आहिनि।

जिते अखर मात्रा ऐं विराम (साही पटण) जो विशेष नियम हुजे, उनखे छन्द चइबो आहे। संसार में साहित्य जी शुरूआत कविता सां थी। ऋग्वेद सभ खां पहिरियों ग्रंथ आहे। ऋग्वेद में वेदनि जा मंत्र समुझण लाइ, उन्हनि जी रिथा ऐं संगीत जी व्याख्या करण लाइ नसुर में किताब घणो पोइ ठाहिया विया। उन्हनि मां 'छन्द शास्त्र' पिण हिकु आहे। छन्द शास्त्र खे पिङ्गल नालो पिण ड्डींदा आहिनि। छाकाणि त संस्कृत में पिङ्गल नाले ऋषीअ वैदिक संस्कृत ऐं लौकिक संस्कृत जे सभिनी छंदनि ते हिक ऑला किताब लिखियो। व्याकरण में जेक जगुहि ऋषि पाणिनी जी आहे, छंद विद्या में उहा पिङ्गल ऋषि जी लेखी वञे थी। महर्षि पिङ्गल छन्द शास्त्र जो पहिरियों आचार्य हो।

सिन्धीअ जे शाइरनि पारसी बहरनि ते बि घणो कलाम चयो आहे। भारती छंदनि में काज़ी कादन सैय्यद अब्दुल करीम शाह, शाह अब्दुल लतीफ़, सचल सरमस्त, चैनराइ बचोमल 'सामी', किशनचंद 'बेवस', नारायण 'श्याम', गोवर्धन 'भारती', प्रभु 'वफ़ा', कमला गोकलाणी वग़ैरह कवियुनि जी अमोलक वाणी मिले थी।

सिन्धी कविता जा प्रिय छन्द आहिनि- दोहो, सोरठो, चौपाई, ललित पद, शक्ति, दिग्पाल, रोलो, लावणी, कुंडली, वीर सवैया वग़ैरह। सिन्धीअ में वरी वाई, नज़्म, तन्हा, बैत, तस्वीरूं, पंजकड़ा, ग़ज़ल ख़ास आहिनि।

छन्दनि जा ब्र किस्म थींदा आहिनि- (1) मात्रिक (2) वार्णिक।

जेके छन्द मात्राउनि जी संख्या जे आधार ते बीठल आहिनि से मात्रिक छन्द ऐं जेके वर्णनि जी संख्या ऐं सिलसिले जे आधार ते आहिनि, उहे वार्णिक छन्द सड्रिजनि था।

मात्रिक, छन्द समझण लाइ हेठियूं ग्राल्हियूं ध्यान में रखणु खपनि।

(1) अखर ब्रिनि किस्मन जा आहिनि- (1) स्वर ऐं (2) व्यंजन। छन्द शास्त्र में सिर्फ स्वरनि खे ग्रणियो वेन्दो आहे। छाकाणि त स्वरनि खां सवाइ व्यंजन अधूरा आहिनि, स्वरनि जे गड्रु थियण सां ई व्यंजन ग्राल्हाए सघिजनि था। जड्रहिं असां 'क' चऊं था त उहो आहे क् + अ जड्रहिं खा चऊं था त उहो अखरु ख् + अ आहे।

(2) अखर या वर्ण जे उच्चारण में जेको वक्तु लग्रे थो, उनखे मात्रा चइबो आहे। अ, इ, उ, ऋ जो उचार करे ड्रिसंदासीं त हरहिक में हिक-हिक मात्रा आहे।

(3) आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ जो उचार कबो त हिक मात्रा खां ब्रीणो वक्तु लग्रंदो। इनकरे इन्हनि स्वरनि लाइ ब्र-ब्र मात्राऊं आहिनि।

(4) जिनि अखरनि लाइ हिक हिक मात्रा हूंदी आहे उन्हनि खे छंद शास्त्र में लघु या छोटो ज़ुज़ो चइबो आहे। लघु जी निशानी (।) आहे। जिअं त-

।।।	।।।।	।।।
कमल	रघुवर	इज़्ज़त

(5) जिनि अखरनि जूं ब्र-ब्र मात्राऊं हूंदियूं आहिनि, उन्हनि खे गुरु या डिघो ज़ुज़ो चवंदा आहिनि। गुरु जी निशानी (ऽ) आहे।

ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ
मोती	पाणी	रोटी

(6) हेठियनि हाल्तुनि में लघु बि गुरु मञ्जिया वेन्दा आहिनि:-

(क) गड्रियल अखर खां अग्र, वारो लघु बि गुरु ग्रणियो वेन्दो आहे। जिअं- विस्तार, अद्भुत।

(ख) अनुस्वार (ऐं विसर्ग) वारा लघु बि 'गुरु' मञ्जिया वेंदा आहिनि। जिअं- चंचल, बंदी।

(ग) लघु ऐं गुरु उचार जे करे किथे गुरु खे लघु ऐं लघु खे गुरु ग्रणे सघिजे थो।

1. दोहो

दोहा छन्द में ब्र पद या चार चरण थींदा आहिनि। हर हिक पद में 24 मात्राऊं थींदियूं आहिनि। हिनजे पहिरिएं ऐं टिएं चरण (विषम चरण/इकी) में 13-13 मात्राऊं ऐं उन खां पोइ मेठाज वारो दमु ऐं आखिर में लघु रहण खपे। ब्रिएं ऐं चोथें (सम चरणनि/ब्रधी) में 11-11 मात्राऊं थींदियूं आहिनि ऐं आख़िर में तुक मिले थी।

मिसालु:-

ऽ। । ऽऽ ऽ। ।। ।।। ।ऽ ऽ ऽ।
1. चंडु सितारा, माक, गुल, ड्रियनि इहा ई साख।
सुहिणी आहे रातिड़ी, सुहिणी आहे बाख।
नारायण 'श्याम'
2. जिअं जिअं वरिक वराइएं, तिअं तिअं ड्रिठो ड्रोहु।
रहिणी रहियो न सुपिरीं, (त) कहिणीअ कबो कोहु।
(शाह करीम)

2. सोरठो

सोरठ (सौराष्ट्र) में हिन छन्द जो वधीक प्रचारु हुअण करे हिन जो नालो सोरठो पियो। हिन में ब्र पद या चार चरण थींदा आहिनि। हरहिक पद में 24 मात्राऊं थींदियूं आहिनि। ही दोहे खां उबतड़ थीन्दो आहे। हिनजे पहिरिएं ऐं टिएं चरण (विषम चरण/इकी) में 11-11 मात्राऊं ऐं उन्हनि चरणनि जे आखिर में तुक मिलंदी आहे ब्रिएं ऐं चोथें चरण (सम चरणनि/ब्रधी) में 13-13 मात्राऊं थींदियूं आहिनि।

मिसालु:-

ऽ।। ऽऽ ऽ। ।ऽ ।ऽऽ ऽ।ऽ
1. पोपट माणें सूंह कयूं सजायूं साइतूं।
तुंहिंजी वई विरूंह, वाझाईंदें वक्त लइ।
नारायण 'श्याम'
2. वाई वञेमि शाल (मां) कननि से कीन सुणां।
भलो करे जे भाल, त अखियुनि से अंधो थ्यां।
(शाह करीम)

3. पंजकड़ा

प्रभु वफ़ा पंहिंजे उमंगनि जे उड्राम जे इज़हार लाइ शाइरीअ जी हिक नईं सिन्फ़ ईजादु कई, जंहिं खे हुन पंजकड़ो कोठियो। पंजकड़ो ब्रारहनि मात्राउनि जे वजन ते ब्रधल पंजनि सिटुनि जो शइरु आहे। जंहिं में हिक मुकमिल चिटु चिटियो वञे थो। इनजूं विचियूं ब्र सिटूं हम काफिया हूंदियूं आहिनि, चौथी सिट पहिरींअ सिट सां ठहिकयल हूंदी आहे ऐं पंजी सिट पहिरींअ सिट जो दुहराउ हूंदी आहे। जेका माना खे उभारे वधीक चिटो कंदी आहे, पंजकड़े जी हर सिट ज़ंजीर जे कड़ीअ मिसलि ब्रीअ सिट सां जुड़ियल हूंदी आहे।

मिसालु:-

1. फ़कति मां आहियां हिकु इंसानु,
   न हिंदू आउं न मोमिनु आउं,
   न मुंहिंजो मज़हबु खासि न गांउ,
   वतनु आ मुंहिंजो सञो जहानु,
   फ़कति मां आहियां हिकु इंसानु।

   – प्रभु 'वफ़ा'

2. तूं आहीं हेमूं सदा हयात,
   धरिया लख रूप तुंहिंजे ब्रलिदान,
   वठनि था सबकु सभेई जुवान,
   निडर थी सफल कयइ थञु मात,
   तूं आहीं हेमूं सदा हयातु।

   – कमला गोकलाणी

4. तस्वीर या हाइकू/टिसिटा

नारायण 'श्याम' जापानी हाइकू जे तर्ज ते अनेक बहितरीन नंढिड़ियूं कविताऊं लिखियूं आहिनि। जेके ऊचु ख़्याल ऐं सूख्यमु भावनाउनि सां पुरि आहिनि। नारायण 'श्याम' जे टिसिटनि में पहिरींअ ऐं टींअ सिट में यारहं ऐं ब्री सिट में तेरहं मात्राऊं आहिनि।

मिसालु:-

1. कीअं छिना हीउ फूलु,
   टिड़ियलु इएं ई शाख ते,
   साईं, पवे क़बूलु !
2. ही गंगा जा घाट,
   हाठियूं गुल ब्रेड़ियूं ड्डीआ,
   लहर-लहर ते लाट।

– नारायण 'श्याम'

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब ड्डियो:-

(1) दोहो छा खे चइबो आहे? मिसाल ड्डेई समझायो।

(2) सोरठे ऐं दोहे में कहिड़ो फर्क आहे?

(3) पंजकड़े में घणियूं सिटूं थींदियूं आहिनि। हिन सिन्फ जी ईजाद कंहिं कई?

(4) हाइकू छा खे चइबो आहे? मिसाल ड्डेई समुझायो।

●●

(1)

लीला चनेसरु

– शाहु अब्दुल लतीफ़ भिटाई
(1689-1752 ई.)

कवि परिचयः-

शाहु अब्दुल लतीफ़ भिटाई सिन्धीअ जो वड॒े में वड॒ो दुनिया जे चंदु शाइरनि मां हिकु आहे। जेतोणीक शाह जो कलामु टे सउ साल पुराणो आहे पोइ बि मवाद जे लिहाज़ खां अजु॒ बि बेहद वाज़िबु आहे। शाह भिटाईअ सिन्धु जे कुझु लोक कहाणियुनि ते कलामु चयो आहे जिन मां 'लीला चनेसरु' पिण हिक आहे।

हिननि बैतनि में कवि लीला खे नम्रता रखण, हठु न करण, ग॒िचीअ में पांदु पाइण जी सिख्या डि॒ए थो।

---

(1)

लीला ! हीला छडि॒ ! जे तूं सोभी सखिएं,
पाए पांदु ग॒िचीअ में, पाणु ग़रीबीअ गडि॒,
हडि॒ न चवंदुइ लडि॒, जे कारूं आणिएं कांध खे।

(2)

चई चनेसर ज॒ाम सीं, लीला ! लखाइ म तूं,
ईउ कांधु कंहिंजो न थिए, न का मूं न तूं,
रोअंदियूं डि॒ठियूं मूं, इन दर मथे दादलियूं।

(3)

चनेसर सीं चाउ, मतां का मुंध करे,
कांध, कहीं जो न वणे, गीरबु ऐं गाउ,
जे थिड़ी थोड़ियाउ, त दोसु दसाई दासड़ो।

(4)

सभेई सुहागिणयूं, सभनी मुंहं जड़ाउ
सभ कंहिं भांइयो पाण खे, त ईदो मूं ग़रि राउ,
पेठो तनि राउ, जो पसीं पाणु लज्जाइयूं।

(5)

अवगुण करे अपारु तो दर आयसि दासड़ा !
जीअं तो रुसण संदियूं, तीअं मूं भेणी नांह भतार!
साईअ लग़ सतार ! मेटि मदायूं मुंहिंजूं।

नवां लफ़्ज़ :

सखिएं = साहेड़ियुनि जे विच में।
हड्ड = कड्डहिं न।
लखोइणु = डेखारणु।
दादलियूं = प्यारियूं ।
पांदु ग़िचीअ पाइणु = निवड़त इख़्तियार करणु।
कांधु = घोटु, सुहागु, धणी ।
मुंध = औरत ।
चाउ = मुहबत ।
गीरब ऐं गाउ करणु = अहंकारु, घमण्डु करणु।
राह तां थिड़णु = मार्ग विञाइणु।
थोरड़ियाउ = थोरो बि।
ग़रि = घर।
जड़ाउ = हारु सींगारु।
पेठो = पहुतो।
मेटणु = विसारणु।
सतारु = सतु रखंदड़ु, धणी।
भेणी न हुअणु = वसु न हलणु।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियोः-

(1) शाह साहिब 'लीला चनेसर' खे कहिड़ी हिदायत कई आहे?

(2) सभेई सुहागिणियूं हार सींगर करे कंहिंजो इंतज़ारु करण लगियूं?

(3) लीला पंहिंजे भतार जे दर ते कीअं थी बाडाए?

सुवालः II. शाह अब्दुल लतीफ़ 'सुर लीला चनेसर' में कहिड़ी समुझाणी डिनी आहे?

सुवालः III. हेठियां हवाला समुझायोः-

(1) अवगुण करे अपारु तो दर आयसि दासड़ा !
जीअं तो रुसण संदियूं, तीअं मूं भेणी नांह भतार!
साईंअ लगु सतार ! मेटि मदायूं मुंहिंजूं।

(2) लीला ! हीला छडि ! जे तूं सोभी सखिएं,
पाए पांदु गिचीअ में, पाणु ग़रीबीअ गडि,
हडु न चवंदुइ लडि, जे कारूं आणिएं कांध खे।

●●

(2)
मुंदूं मोटी आयूं

– सचल 'सरमस्त'
(1739-1829 ई.)

कवि परिचय:-

सचल सरमस्त जो असुल नालो अब्दुल वहाब हो। हुन जो जनमु ख़ैरपुर रियासत जे ग॒ोठ दराज़नि में थियो। हिक दफ़े शाह अब्दुल लतीफ़ जो दराज़नि में अचणु थियो, त हुन उन बांबड़ा पाईंदड़ ब॒ार खे डि॒संदे ई चयो त "असां जेको कुनो चाढ़ियो आहे उन जो ढकणु हीउ नींगरु लाहींदो।"

सचलु सतनि ब॒ोलियुनि में माहिरु हो।

हिन रचना में सचलु पिरींअ खे अचण लाइ मिंथूं करे थो।

तुंहिंजी तलब तमामु, मूंखे कयो सुपरीं,
तंहिं डीं॒हं लाकूं न कयो, अखड़ियुनि आरामु
करि अचण जो अंजामु, ब॒ियूं मुदूं मोटी आयूं !

पाणी मोटियो पोइते, डीं॒हं सरउ आया
कांवनि आखेरनि मऊं, उल थे उड॒ाया
डीं॒हं उते तो हेतिरा, कींअं लालन लाया
करि साजन साया, के असां डा॒हुं अचण जा।

साहेड़ियुनि मूं साउ, कोन अचे अरवाह खे
दिलबर हिन जे दिल खे, डि॒नो सूर समाउ
तूं अल्लह कारण आउ, ब॒ियूं मुदूं मोटी आयूं!

तुंहिंजे हिज्र तापु, ज॒णु डि॒नो आहे डी॒ल खे
करि मियां मेलापु, ब॒ियूं मुदूं मोटी आयूं !

मूंखे मुंझायो, हिन विछोड़े तव्हांजे
कडुहिं क़ासिदु कोन को, ऐडुांहुं आयो
करि अचण जो सायो, बियूं मुदूं मोटी आयूं!

थी संभारियो सैर, थो जंहिं में घुमे सुपिरीं,
डुिहाड़ी डुिसण जी, हुई हींअड़े हेर,
हाणे आप पिरीं विझु पेर, बियूं मुदूं मोटी आयूं !

पिरीं उहो परडेहु, अवहां तऊं घोरयो
सभ कंहिं वेले सुपिरीं, थो सारेई साणेहु
जानिब जुदाईअ खऊं, थो डुखियो भांइयां डेहु
हाणे आउ वेढ़े हिन वेहु, बियूं मुदूं मोटी आयूं !

नवां लफ़्ज़ :

तलब = घुरिज।
लाकूं = उन वक्त खां।
डींहं लाइणु = देरि करणु।
हिज्र = जुदाई।
हेर = आदत।
अंजामु = वाइदो।
साउ = मज़ो।
डीलु = जिस्मु।
डुिहाड़ी = हर रोज़ु।
मऊं = उन मां।
अरिवाह = रूह, आत्मा।
क़ासिदु = नियापो आणींदडु

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियोः-

(1) ''असां जेको कुनो चाढ़ियो आहे उन जो ढकणु हीउ नींगरु लाहींदो।'' हीउ लफ़्ज़ कंहिं, कंहिंजे लाइ चया?

(2) हिन कविता में कवीअ जी कहिड़ी तलब आहे?

(3) सचल साईंअ जी वाक़िफ़यत डियो?

सुवालः II. 'मुंदूं मोटी आयूं' कविता जो सारु पंहिंजनि लफ़्ज़नि में लिखो।

सुवालः III. हेठिएं बैत जी माना समुझायोः-

पाणी मोटियो पोइते, डींहं सरउ आया
कांवनि आखेरनि मऊं, उल थे उड्डाया
डींहं उते तो हेतिरा, कींअं लालन लाया
करि साजन साया, के असां डांहुं अचण जा।

●●

(3)

सामीअ जा सलोक

– चैनराइ बचोमल 'सामी'

(1743-1850 ई.)

कवी परिचय:-

चैनराइ बचोमल 'सामी' शिकारपुर (सिन्धु) जो रहाकू हो। हुन पंहिंजे गुरूअ स्वामी मेंघराज खे इज्ज़त ड्रियण लाइ संदसि तख़लुस 'सामी' इख़्तियारु कयो।

सामीअ जे सलोकनि में चयलु आहे त संसार कूडु आहे ऐं अज्ञानी इन्सानु संसार जे महाजा़र में फासी, पाण खे भिटिकाए थो। उन माया ज़ार मां ब़ाहिर निकिरण लाइ रूहानी राह जो पांधीअड़ो थियणु जरूरी आहे।

सामी साहिब हिननि सलोकनि में सही नमूने ज़िंदगी गुज़ारण जी राह डुसी आहे।

अजाइबु अकुलु, सालिक ड्रिनो सिक सां,
समिझी रुह राज़ी थियो, छडे हंगामो हुलु,
चढ़ी नूर महल में, कयाईं हकु हासिलु,
वहिदत में वासुलु, पर्ची थियो प्रेम सां !

जन खे जानी याद, आउं याद करियां नित तन खे,
'सामी' मिलया सुपरीं, पर्ची तंहिं प्रसाद,
तनु मनु अर्पियां भाव सां, छडे वाद विवाद,
इहा आदि जुगादि, वाट बणी वेसाह जी !

सदाईं निर्मल, साधू जन संसार में,
लेपु न लगे तनि खे, जीअं जलि रहनि कंवल,
अंदरि सम सीतलु, ब्राहिर तता ताव जां !

काया कोटु कचो, आहे मुनारो मिटीअ जो,
आहे साहु सरीर में, तंहिं जोड़े रास रचो,
जंहिंखे लधो तन मूं, सो भेरे खूं बचो,
किरी थियो कचो, जडुहिं वयो साहु सरीर मूं !

रात्यूं डींहं छिके थो, चढ़ियो कालु कुल्हनि ते,
समे पिए सभ कंहिं खे, नींदो साणु धिके,
धारियो जंहिं सरीर खे, सो स्थिर कीन टिके,
तोड़े वञी लिके, को 'सामी' लंका कोट में !

नवां लफ़्ज़ :

वहिदत = हेकिड़ाई। **वासुलु** = मेलापु । **निर्मलु** = साफ़ु।
काया = शरीरु। **स्थिरु** = मज़्बूतु, काइमु।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो:-

(1) सालिक सिक सां छा डिनो आहे?

(2) हिन संसार में कंवल जे गुल वांगुरु केरु रहनि था?

(3) काया रूपी कोटु कींअ आहे?

सुवालः II. ख़ाल भरियो:-

(1) तनु मनु ..... भाव सां छड्डे वाद विवाद।

(2) सदाईं निर्मल .....जन संसार में।

(3) रात्यूं डींहं छिके थो, चढ़ियो ..... कुल्हनि ते।

सुवालः III. ज़िद लिखो :-

वहिदत, अंदरि, कचो, डींहं।

●●

(4)

ज़िन्दगी

– पद्मश्री हूंदराज 'दुखायल'

(1910-2003)

कवि परिचयः-

कवि हूंदराज जो नालो हरकंहिं सिंधी शइर ऐं रागु जे ज़ाणूअ बुधो हूंदो। हू राग़ींदड़नि जी मजलिस जो सींगारु हो। हिनजो जनमु 16 जनवरी 1910 ई. में लाड़काणे (सिन्धु) में थियो। संदसि अनेक किताब लिखियल आहिनि। होतु हिरदे में विञायुमि, मुशाहिदो, अक जूं फुलिड़ियूं, धरती माता 'लाहूती लहर' 'संगीत फूल' 'संगीत वर्खा' 'झूंगार' 'कौमी ललकार' 'मुशाहिदो' 'पर्लाउ' वग़ेरह। गांधीधाम समाचार जो सम्पादन बि कंदो हो। खेसि भारत सरकार पारां 'पद्मश्री' खिताब, राज. सिंधी अकादमी पारां 'सिंधू रतन' खिताब, राम बक्षाणीअ पारां 'मैन ऑफ द ईयर' ऐं दिल्ली सिंधी अकादमीअ वटां यारहां लख रुपया इनाम मिलियल अथसि।

दुखायल पंहिंजो जीवन देश सेवा में अर्पण कयो आहे। कौम जो सडु ऊनाए केतिरा दफ़ा जेल यात्रा कयाईं। हुन आचार्य विनोबा सां गडिजी केतिराई गीत भूदान हलचल ते हिन्दी भाषा में ठाहिया आहिनि।

हीउ नज़्म देश भगिती आत्म निर्भरता आशावाद जो संदेश डेई उमंग ऐं उत्साह वधाए थो।

ज़िन्दगीअ में ज़िन्दगीअ खे मौत सां टकिराइबो,
समुण्ड लूणाठियो विलोड़े मिठिड़ो अमृत पाइबो।

आस जे आईने खे जे, लट निराशा जे लटियो,
कौम जी तकदीर खे तदबीर सां चमिकाइबो।

फ़र्ज़ जे पंहिंजो न कहिं पाल्यो, वसीलो कोन थियो,
पाण खे पाणही वरी, हिन देश में वरिसाइबो।

पंहिंजे पेरनि ते बीही, हलन्दासीं ऊंचे ग़ाट सां,
ही ड्रिसी हर हिन्दुस्तानी थी, शकी शरमाइबो।

जे अञा रहंदी का पंहिंजे मुल्क में अन्न जी अणाठि,
पेट धरतीअ जा पटे, पाणी अखुट पहुचाइबो।

बुख न भारत जे कबीले जो, को जीअं भाती मरे,
जो कणो दाणो अथऊं, वन्डे विरहाए खाइबो।

जे लटे हूंदे लखनि खे, लीड़ अजु नाहे नसीब,
पाण थी मालिक मिलियुनि जा पहिरबो पहिराइबो।

कीन ड्रींदासीं रहण का देश में कारी बाज़ार,
रिश्वती सरकारी अमले खे सएं दग़ि लाइबो।

पंहिंजी हरहिक घुरिज जी पाणही कंदासीं पूर्ती,
कारख़ानो अहिड़ो घर घर खोलिबो खोलाइबो।

थो पघर जे पोरिह्यो मां ड्रिसु! फलु मिठो आख़िर मिले,
मर्तबो महिनत जो ज़ाणी तंहिंते हड्ड हेराइबो।

कारगर कोड्डार्यों थी ख़ुदि कुड़मी कीमियागर बणी,
मुल्क जी मिटी ऐं पत्थर सोन सां तोराइबो।

सोन चांदीअ जो सिको जीअं महनतीअ जो थिए मतीअ,
काइदेसाजनि खां अहिड़ो काइदो जोड़ाइबो।

जेकड्डहिं हिन राह में रोड़ो थी को अटिकी पियो,
अहिड़े साईंअ जे संवारिए खे सड्डे समुझाइबो।

मौत जो ख़ुदि ख़ौफ़, खाइक थी भज़ी पासो करे,
रम्ज़ अहिड़ीअ साणु मूजी मार खे हीसाइबो।

मौतु हूंअ भी ख़्यालु आहे, ख़्यालु आहे ज़िन्दगी,
ख़्याल खे बस ख़्यालु समुझी, ख़्याल खे बदिलाइबो।

ख़त्म थियनि जीअं ही 'दुखायल' मौत जा असबाब कुल,
तंहिंकरे अज़ु पाण में जीवन नओं ज़ाणाइबो।

नवां लफ़्ज़ :

लूणाठियो = खारो।
अणाठि = कमी।
तदबीर = कोशिश।
पघर = पसीनो।
कुड़मी = किसान।
पोरिह्यो = मेहनत।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब लिखोः-

(1) लूणाठियो समुंडु कीअं अमृत बणाए थो सघिजे? समुझायो।

(2) दुखायल पंहिंजो जीवनु देश शेवा में अर्पित करे छड्डियो हो। हू कहिड़े नमूने देश जी शेवा कन्दो हो?

(3) कौम जी तकदीर खे तदबीर सां कीअं चिमकाए सघिजे थो?

सुवालः II. ज़िद लिखो :-

ज़िन्दगी, आशा, धरती, मालिक, खत्म।

सुवालः III. हेठिएं सुवाल जो जवाबु खोले लिखोः-

(1) 'दुखायल जे लिखियल कविता 'ज़िन्दगी' जो सारु पंहिंजे लफ़्ज़नि में लिखो।

●●

(5)

देश भगुत जो ख़तु

– पद्मश्री प्रो. राम पंजवाणी

(1911-1988)

कवि परिचयः-

श्री राम पंजवाणीअ जो जनमु 20 नवम्बर 1911 में थियो। ही मशहूरु लेखकु हो। ''कैदी'', ''ज़िन्दगी या मौतु'', ''आहे न आहे?'', ''धीअरूं न ज़ुमनि'' वग़ेरह नॉविल ''सिन्ध जा सत नाटक'', ''पूरब जोती'' (नाटक), ''सिक जी सौग़ात'' (गीतनि जो इंतख़ाब) वग़ेरह कुल 25 किताब लिखियल अथसि। ''अनोखा आज़मूदा'' ते साहित्य अकादमी इनाम 1964 में हासिल थियो होसि। बम्बई में जयहिन्द कॉलेज में सिन्धी विभाग जो प्रधानु हो। हिन फिल्मुनि ऐं नाटकनि में अदाकारी बि कई। 1970 में 'सिन्धु रतन' खिताब ऐं भारत सरकार पारां 1981 में 'पदमश्री' खिताब समेत अनेक संस्थाउनि पारां इनाम ऐं सन्मान हासिल थिया अथसि। भगुत कंवरराम वांगुरु जामो पाए, मटके वज़ाइण वारो ही प्रोफ़ेसरु सिन्धियत जी शेवा कन्दो हो। आख़िरी घड़ीअ ताईं सिन्धियत जी शेवा कंदे मार्च 1988 ई. में चालाणो कयो।

हिननि बैतनि में कवीअ देश भगितीअ जो संदेशु डिनो आहे।

---

(1)

अमां ओ मुंहिंजी अमां ! रखियुमि मुल्क जो मानु,
खैर मल्हायुमि तुंहिंजो, साखी सभु जहानु,
मरण वेले मन में, अथमि अभिमानु,
मां देश मथां कुर्बानु, तूं मुर्की जेड्डियुनि विच में।

(2)

बाबल सूह्रे आहियां, जोधो जुंग जवानु,
सीने ते खिलंदे सठमि, गोलीअ जो निशानु,
मूंखे पंहिंजे मौत जो, कोन्हे को अरमानु,
ज़ाणे थो भगुवानु, हसंदे थो हितां हलां।

(3)

देवी ! मुंहिंजे दिल जी, हंजूं हड्ड्रि म हारि,
सुड्ड्रिका भरे सोज़ सां, सजनी कीन संभारि,
तिलक लगाए खून जो, उथी सींधि संवारि,
ओ कूंधर जी कुंवारि ! तूं कींअ गूंदर घारिएं?

(4)

कहिड़नि अखरनि में ड्ड्रियां, अदी ख़बरचार?
दुश्मन जूं तोबूं तिखियूं, हैबतनाक हथियार,
टैंकूं जबल जेड्ड्रियूं, मीलनि ते जनि मार,
त बि विया खाई मार, रिथूं वियनि रद्द थी।

(5)

साथी कहिड़ो मोकिलियां हितां जो अहिवालु,
अची ड्ड्रिसु दुश्मन जो, कहिड़ो आ बदिहालु,
मची वेरियुनि वटि वियो, जिन्सी ब्राएतालु,
हरहिकु हिन्दु जो लालु, टीह मारे पोइ थो मरे।

नवां लफ़्ज़ :

जेड्ड्रियुनि = साहेड़ियुनि।
कूंधर = वीर।
बदिहालु = बुरो हालु ।
बाबल = पीउ, पिता।
अदी = भेणु।
ब्राएतालु = थिरथिलो ।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो:-

(1) 'देश भगत जो ख़तु' कविता जो सारु पंहिंजनि लफ़्ज़नि में लिखो।

(2) प्रो. राम पंजवाणी 'देश भगत जो ख़तु' कविता रस्ते कहिड़ी सिख्या डियणु थो चाहे?

(3) 'ख़ैर मल्हायुमि तुंहिंजो, साखी सभु जहानु' सिट में कवि राम पंजवाणी छा थो चवणु चाहे?

(4) प्रो. राम पंजवाणीअ जे बारे में मुख़्तसर ज़ाण डियो।

सुवालः II. हेठियां हवाला समुझायो:-

(1) बाबल सूर्ह्या आहियां, जोधो जुंग जवानु,
सीने ते खिलंदे सठमि, गोलीअ जो निशानु।

(2) तिलक लगाए खून जो, उथी सींधि संवारि,
ओ कूंधर जी कुंवारि ! तूं कींअ गूंदर घारिएं?

(3) मची वेरियुनि वटि वियो, जिन्सी ब्राएतालु,
हरहिकु हिन्दु जो लालु, टीह मारे पोइ थो मरे।

●●

(6)

हलो

– परसराम 'ज़िया'
(1911-1958)

कवि परिचयः-

परसराम 'ज़िया' जो जनमु 11.7.1911 टंडो आदम सिन्ध में थियो। विरहाङे बइदि उल्हासनगर खे कर्म भूमि बणायाईं। 'बाग़ बहार', 'आलाप ज़िया', 'पैग़ाम-ए-ज़िया', 'गीत विरह जा' संदसि शइरी मजमूआ आहिनि। भगवत गीता, जप साहिब, सुखमनी साहिब ऐं ऋग्वेद जा सिन्धी तर्जुमा कयाईं। जिनिखे भगवंती नावाणीअ मिठिड़े आवाज़ में ॻायो। मास्टर चन्दर संदसि घणे में घणा गीत ॻाया। अबाणा, लाॾली, झूलेलाल, इंसाफ़ किथे आ' वग़ैरह फिल्मुनि में संदसि लिखियल गीत आहिनि। हिन घणा इनाम ऐं सम्मान हासुलु कया । 28 आक्टोबर 1958 में बेवक्ताइतो चालाणो कयाईं।

हिन ग़ज़ल में कविअ एकता जो संदेशु ॾिनो आहे ऐं कर्म करण जी प्रेरणा ॾिनी आहे।

हर कदम ते हिकु नओं गुलशन बणाईंदा हलो,
बरपटनि में बाग़ जी रंगत रचाईंदा हलो।

प्यार जीअं जाॻी उथे जाॻी उथे इंसानियत,
एकता जा जाबजा बजा नारा लॻाईंदा हलो।

दाणो दाणो धार थियो, माला मुहबत जी टुटी,
हिकई धाॻे में पोई दाणा मिलाईंदा हलो।

सीर में बेड़ो अथव, सहकार खे मांझी करियो,
पंहिंजी कश्तीअ खे किनारे सां लगाईंदा हलो।

काफ़िलो हलंदो रहे ऊन्दहि जो कोई ग़मु न आ,
शौंक ऐं हिमत जी मशाल खे जलाईंदा हलो।

जे रखो था चाहु गुल सां, कुर्ब कन्डनि सां रखो,
ख़ैरु पंहिंजे बाग़ सारे जो मनाईंदा हलो।

भलि हुजनि काबिल लखें, पर कुलनि खे हिकिड़ो करियो,
यकवजूदीअ सां दुई दिल जी मिटाईंदा हलो।

राह में जेकी डिसो, बेशक डिसो ऐं कम कढो,
पर असर खां पंहिंजे दिल खे भी बचाईंदा हलो।

कर्म ई संसार में किस्मत जो बणिजे रूप थो,
कर्म सां तकदीर जी सोभ्या वधाईंदा हलो।

सभु मिली सिर-सिर खणी, ठाहियो हयातीअ जो महलु,
जित भुता भूंगा उते, बंगला बणाईंदा हलो।

हिकिड़ो खाए बोड़ बियो गुणतियूं खाए पियो,
हिन ज़माने जे तफ़ावत खे मिटाईंदा हलो।

छो तबीबनि डे तकियो, खुद दर्द जा दरमान थियो,
थी मसीहा, फूक सां दुख खे उडाईंदा हलो।

दुख सुखनि जी सूंहं, डुख ईंदा त सुख आणींदा साणु,
पेच सूरनि सां ऐं पूरनि सां पचाईंदा हलो।

बहिर में ऊन्हा वञो, डेई टुबियूं मोती लहो,
हीअ ख़बर सभिनी सराफ़नि खे सुणाईंदा हलो।

बर में बाज़ारियूं लगनि ऐं सावकूं सुञ में थियनि,
झंगलनि में ए जिया, मंगल मनाईंदा हलो।

नवां लफ़्ज़ :

सीर = दर्याह जो विचु।
यकवजूदी = एकता।
तबीबु = हक़ीम ।
बरु = रिणपट।
सहकार = सहयोग, एकता।
भुता भूंगा = जर्जर जगुहियूं।
बहिर = समुंड।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब लिखोः-

(1) ज़िया जे कलाम जी इहा विशेषता आहे त उहो दर्दीले नूअ में लिखियलु आहे। खोले समुझायो।

(2) 'हलो' कविता जो सारु पंहिंजनि लफ़्ज़नि में लिखो।

(3) "जे रखो था चाह गुल सां, कुर्ब कंडनि सां रखो।" जो मतलबु लिखो।

सुवालः II. हेठियां हवाला खोले समुझायोः-

(1) प्यार जीअं जागी उथे जागी उथे इंसानियत,
एकता जाबजा बजा नारा लगाईंदो हलो।

(2) सीर में बेड़ो अथव, सहकार खे मांझी करियो,
पंहिंजी कश्तीअ खे किनारे सां लगाईंदा हलो।

(3) काफ़िलो हलंदो रहे, ऊन्दह जो कोई ग़मु न आ,
शौंक ऐं हिमत जी मशाल खे जलाईंदा हलो।

(4) बर में बाज़ारियूं लगनि ऐं सावकूं सुञ में थियनि,
झंगलनि में ए जिया, मंगल मनाईंदा हलो।

(5) हिकिड़ो खाए बोड़ बियो गुणतियूं खाए पियो,
हिन ज़माने जे तफ़ावत खे मिटाईंदा हलो।

●●

(7)

वाझाए त डिसु

– हरी 'दिलगीर'

(1916-2004)

कवि परिचयः-

हरी दर्याणी 'दिलगीर' जो जनमु 15 जून 1916 ते लाड़काणा सिन्धु में थियो। तोलाणी पॉलेटेक्निक कॉलेज मां प्रिंसीपल जे ओहिदे तां रिटायर थियों ऐं पोइ बि डायरेक्टर रहियो। नंढपुणि खां शाइरीअ जी डाति हुअसि। अटिकल वीहारो खनु शइरी मजमूआ छपियल अथसि। हीउ आशावादी ऐं सुखदर्सी शाइरु हो। हिन शाइरीअ जे सभिनी सिन्फुनि ते कलम आज़माई आहे। हिन जा मुख्य किताब 'मौज कई महिराण', 'पल-पल जो परिलाउ', 'मजेदार गीत', 'सुबुह जो सुहाग', 'जीउ जीउ रे जीउ' आहिनि। पल-पल जो परलाउ ते 1979 में साहित्य अकादमी पारां इनाम अता थियो ऐं हिकु लखु रुपये जो 'गुजरात गौरव' सम्मान हासिलु थियो। इन खां सवाइ प्रियदर्शनी अवार्ड नारायण श्याम अवार्ड, इंडस इंड अवार्ड ऐं दिल्ली सिन्धी अकादमी पारां अवार्ड हासिल थिया हुअसि।

दिलगीर हेठिएं गीत में आशावादी नज़रियो अपनाईंदे पिरींअ खे पाइण जी राह डेखारी आहे।

दिल मतां लाहे छडी हिक वार लीलाए त डिसु,
हू सजुणु आहे सखी पर पांदु फहिलाए त डिसु!

हू त तुंहिंजे सड सुणण जे वास्ते वेठो सिके,
सिक मझां सडिड़ो करे, हिक वार बाडाए त डिसु!

बेकिड़ियलु ई आहे, नाहे बंद दरु दिलदार जो,
कुर्ब मां तंहिंजो कड़ो, हिक वार खड़िकाए त डिसु!

होत जंहिं ते हिर्खु हारियो, आहि तुंहिंजो हुस्न सो,
नेण निवड़त साणु खणु, तंहिं साणु लिंव लाए त ड्रिसु!

हूंद जो ड्रिसु ख़ून हारे, बरपटनि खे करि बहिश्तु,
कीन जी कातीअ सां, पंहिंजो कंधु केराए त ड्रिसु!

दिल मंदी मेरी सहीं, पर थी सघे थी सा अछी,
लुड़िक कुझ लाड़े त ड्रिसु, हिक वार पछिताए त ड्रिसु!

नवां लफ़्ज़ :

हिक वार = हिकु भेरो।
पांदु फहिलाइण = झोलु झलणु।
बहिश्त = सुर्ग ।
लीलाइणु = ऐलाज़ करणु, मिन्थू करणु।
ब्राड्राइणु = अर्ज़ु करणु।
कंधु केराइणु = कुर्बानु थियणु।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब लिखो:-

(1) 'वाझाए त ड्रिसु' शइर में शाइर कहिड़ो नज़रियो अपनाइण जी हिदायत कई आहे?

(2) शाइर कंहिंजे अग्रियां पांदु फहिलाइण लाइ चवे थो?

(3) कंहिंजो दरु बंद न पर ब्रेकिड़ियल आहे?

(4) मंदी ऐं मेरी दिल अछी कीअं थी सघे थी?

सुवालः II. ख़ाल भरियो:-

(1) सिक मंझां सड्रिड़ो करे, हिक वार ..... त ड्रिसु।

(2) .....मां तंहिंजो कड़ो, हिक वार खड़काए त ड्रिसु ।

(3) नेण निवड़त साणु खणु, तंहिं साणु ..... लाए त ड्रिसु।

सुवालः III. ज़िद लिखो :-

ब्रेकिड़ियलु, बहिश्त, अछी, पंहिंजो।

●●

(8)

तस्वीरूं

– नारायण 'श्याम'
(1922-1989)

कवि परिचयः-

नारायण 'श्याम' सिन्धी शाइरनि में बर्खु हस्ती आहे। संदसि जनम 22 जुलाई 1922 ई. ते जिले नवाबशाह सिन्धु में श्री गोकुलदास जे घर में थियो। 'श्याम' जे शइर में नवाणि ऐं ताज़गी आहे। ही ब्रोली ऐं फ़न में माहिरु आहे। हिन जे शइर जा मुख्य मजमूआ- वारीअ भरियो पलांदु, माक-फुड़ा, माक भिना राबेल, पंखड़ियूं, रूप माया, ड्राति ऐं हयात ब्र भाडा वग़ैरह आहिनि। **वारीअ भरियो पलांदु** शइरनि जे मजमूए ते साहित्य अकादमीअ इनामु ड्रेई संदसि इज़्ज़त अफ़ताई कई वेई। संदसि शइरी मजमूओ 'बूंद लहरूं ऐं समुंड' सिन्धु मां छपारायो वियो।

नारायण 'श्याम' जपानी हाइकू जे तर्ज़ ते ही टि-सिटा लिख्या आहिनि ऐं इन्हनि खे तस्वीरूं नालो ड्रिनो आहे।

---

1. साम्हूं डठलु मकान
   इअं अजु कीअं लुड्डी वई
   धरती धीरज वान

2. वञनि न शंख न घिंड
   हिन बस्तीअ जे ख़ल्क जी
   चउ कीअं फिटंदी निंड

3. ड्रींहं जो पहिरियों ख़्वाब
   आहि टिड़ियो ओभर तरफ़
   सुहिणो लालु गुलाब।

4. गुल त रहिया खिन काणि
आहि समायल साह में
अञा संदनि सुरहाण

5. वाझाए उभ ड्रांहुं
सिंधी ग॒ोली शाह पिए
बीही भिट मथांहं

6. सखिणा सखिणा टार
पन छणिया उड्रिरिया पखी
वण हा छायादार

7. ड्रिसु पखियुनि जा ड्रांव
उडुंदे हिक ब्रिए जे मथां
कीअं न पवे थी छांव

नवां लफ़्ज़ :

डठलु = भगु॒ल टुटल।
सुरहाण = खुश्बू ।
सखिणा = खाली, खाली ।
ड्रांव = हुनुरु ।
ओभर = पूरब दिशा।
उभ = आकाश, आसमान।
टार = टारियूं।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब ड्रियो:-

(1) बस्तीअ जे ख़ल्क जी निंड छो न खुलंदी।

(2) कवीअ ड्रींहं जो पहिरियों ख़्वाबु कंहिंखे कोठियो आहे?

(3) कवीअ पखियुनि जे ड्रांव जो कहिड़ो ज़िक्र कयो आहे? खोले लिखो।

सुवालः II. हेठियनि मिसराउनि जी माना समुझायो:-

(1) ''साम्हूं डठलु मकानु
इअं अजु॒ कीअं लुड्री वई, धरती धीरज वान।''

(2) ''गुल त रहिया खिन काणि
आहि समायल साह में, अञा संदनि सुरहाण।''

●●

(9)

सिन्धु सागर

– गोवर्धन महबूबाणी 'भारती'

(1929-2010)

कवि परिचयः-

श्री गोवर्धन महबूबाणी 'भारती' भारत देश जी सिन्धी साहित्य खे सौग़ात आहे। हिन शाइर बेशकि खीरूं लहिणियूं। संदसि कविता पुख़्ती आहे। ब्रोलीअ, वीचारनि ऐं उमंग जे लिहाज़ सां हिनजे शइर में बुलन्दी नज़र अचे थी। 'शीशे जा घर' शइरी मजमूए ते साहित्य अकादमी इनामु हासुल कयाई।

गोवर्धन के नाटक, नसुर, मज़मून 'सूर जूं सउ सूरतूं' सिरे सां नाविल ऐं नंढियूं कहाणियूं पिणु लिखियूं आहिनि। इएं चवण में वधाउ कोन्हे त सन् 1947 ई. खां वठी 1955 ई. ताईं जेके नवां शाइर पैदा थिया आहिनि, तिनिजो अग्रवानु 'भारती' आहे। संदसि शइर में मेठाजु, नरमी, संवाई, लसाई ऐं मध्यम रवानी आहे। संदसि शइर ज़िन्दगीअ जे वधीक वेझो आहे, जंहिंमें रोज़ानी हयातीअ जे आज़मूदनि जूं झलिकूं चिटाईअ सां ज़ाहिरु कयल आहिनि। 'लातियूं', 'गुल ऐं मुखड़ियूं' वग़ैरह संदसि शइरनि जा किताब आहिनि। 'भारतीअ' जी ब्रोली सई, सलीसु ऐं सादी आहे, जा संदसि ख़्यालनि खे ज़ाहिरु करण में समर्थु आहे।

हिन नज़्म में सिंधु नदीअ जो मानवीकरण कयो वियो आहे। हिते कवीअ सिंधुअ खे प्रेमिका ऐं सागर खे संदसि प्रेमीअ जे रूप में ड्रेखारियो आहे।

---

(1)

छम छमाछम छेर जी, झीणीअ मधुर झंकार सां,
मर्म सां ऐं शर्म सां, कुछ दर्द सां कुछ ढार सां,
गोदि मां कैलाश जे, सिन्धु सखी आई वही,
सख़्त जज़्बनि जे जिगर मां भी हलियो पाणी वही,
हेठि बीठी मानसरोवर, नेण आंसुनि सां भरे,
सोज़ मां तंहिंसां मिली, सिन्धु सखी भाकुर भरे।

(2)

मोकिलाए माउ खां, सिन्धु हली दुल्हन बणी,
उन समे प्रभात आई, प्यार सां सिन्दूर खणी,
हेज मां उति हीर आंदी, फूह फूलनि जी झड़ी,
साण सूरज जी भरी, आयो जवाहरनि जी भरी,
शौंक सां लामन मथां, पंछियुनि वज़ाया साज़ भी,
किन विछोड़े खां वरी दर्दीं कया आवाज़ भी।

(3)

पेरु पाए पेर में सा नारि सागर डे हली,
राह में संझा संदसि हथड़नि मथां मेहंदी मली,
रातिड़ीअ बि चंड जी, चिन्दी लग़ायसि चाह सां,
हार तारनि जा वठी, सिन्धु हली उत्साह सां,
प्रेम जो रस्तो अणांगो, मुहिब जी मंज़िल परे,
हूअ मगर हलंदी रही, बस ध्यानु प्रीतम जो धरे।

(4)

मुहिब जे ई दर्स जी, जिनजे अखियुनि खे प्यास आ,
आस प्रीतम जी रुग़ो, जिनजे दिलियुनि जी आस आ,

दिल नशे में नींहं जे, तिनजे वञे थी तार थी,
बस ! इझो हीउ डिसु सखी, प्रीतमु न तोखां दूर आ,
हाइ ! तुंहिंजे प्रेम में, हिनजो बि हिरदो चूर आ।

(5)

हां अड़े ! ही छा चरी !! छा लाइ डुकीं थी जोश में?
प्रेम में पाग़ल थी, कुछ शर्मु करि, अचु होश में,
ड़े संभाले हलु !! मतां तुंहिंजो पवे घूंघट लही,
ऐं वञनि किन बेगुनाहनि, जे मथां नज़रूं वही,
छड्डि उछल ओ छेग़िरी, जोभनु मतां छलिकी उथे,
छिकि पल्लव खे, हुसुनु पोशीदा मतां झलिकी उथे।

(6)

ध्यानु छाजो? सोचु छाजो? होशु छाजो प्रीत में?
शर्मु छाजो? मर्मु छाजो? पोशु छाजो प्रीत में?
प्रेम में छल-छल कंदी, छल-छल कंदी सिंधु वई,
पाण खोहे सा पिरींअ जे, प्रेम चरननि में पई,
सिक मंझां सागर उथारियो, कुंवारि खे भाकुरु भरे
प्रेम जे तासीर सिंधूअ खे छड्डियो सागरु करे।

नवां लफ़्ज़ :

सोज़ = दर्द।
लामन = टार्युनि।
मानसरोवर = मानवरोवर ढंढ ।
अणांगो = डुखियो ।
छेग़ुरी = चंचल।
हीर = सुबुह जी थधी हवा।
चिन्दी = बिन्दी।
सिंधु सखी = सिंधु धारा।
प्रीतम = प्रेमी।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब ड्ियोः-

(1) गोवर्धन भारतीअ जी लिखियल 'सिन्धु सागरु' कविता जो सारु पंहिंजनि लफ़्ज़नि में लिखो।

(2) 'सिन्धु सागरु' कविता जो मुख्य उद्देश्य कहिड़ो आहे?

(3) 'प्रेम जो रस्तो अणांगो, मुहिब जी मंज़िल परे' सिट में कवि छा थो चवणु चाहे?

सुवालः II. हेठियां हवाला समुझायोः-

(1) हेठि बीठी मानसरोवर, नेण आंसुनि सां भरे,
सोज़ मां तंहिंसां मिली, सिन्धु सखी भाकुर भरे।

(2) हेज मां उति हीर आंदी, फूह फूलनि जी झड़ी,
साण सूरज जी भरी, आयो जवाहरनि जी भरी।

(3) मुहिब जे ई दर्स जी, जिनजे अखियुनि खे प्यास आ,
आस प्रीतम जी रुग्रो, जिनिजे दिलियुनि जी आस आ,

सुवालः III. 'सिन्धु', सागर कीअं बणिजी वेई? पंहिंजनि लफ़्ज़नि में लिखो।

●●

(10)
सिंधु ऐं सिंधी

– कृष्ण 'राही'
(1932-2007)

कवि परिचय:-

कृष्ण वछाणी 'राही' बख़्‌ु शाइरु, कहाणी नवीसु ऐं आलोचकु रही चुको आहे 'कुमाच' ऐं 'वसण संदा वेस' हुन जा शइरी मज्मूआ शाया थियल आहिनि। खेसि साहित्य अकादमीअ समेत घणाई इनाम हासुल थिया हुआ। साहित्य अकादमीअ जे सिन्धी सलाहकार बोर्ड जो कन्वीनरु पिणु रहियो।

मौजूदा बैतनि में सिंधियुनि जी मानसिक पीड़ा जो छुहंदड़ बयान थियलु आहे।

वतन जे लाइ जान घोरी पोइ बि थोरी
सिंधियुनि जान न घोरी वतन घोरे आया !

वतन घोरे आया हाणे रतु रोअनि
पंहिंजा वरी पसण लाइ तिन जा नेण सिकनि
ॿेरियूं, खॿुर, खजियूं हित ॻोलींदे न मिलनि
माण्हू हित बि थियनि, पर असांजा के ॿिया हुआ !

असां जा के ब्रिया हुआ, जिन सां हुआ नींहं
ओसीअड़ा ई उन्हनि जा, था रहनि रातयां ड्रींहं
अखियुनि संदा मींहं मुंद न ड्रिसनि महिल का !

मुंद न ड्रिसनि महिल का, अंदर जूं आहूं
मुल्क मोटी वञण जूं, बंदि थियूं राहूं
से दिलियूं कनि दांहूं, वतुनु वियो जिन हथां !

वतन वियो जिन हथां, नाहे तिन आरामु
कड्रहिं विसरे कीन की कंहिं खां पंहिंजो गामु
नदियूं हित बि जाम, पर सिंधूअ में को साहु थनि !

सिंधूअ में को साहु थनि, सिंधू भांइनि माउ
पंहिंजा नेठि बि पंहिंजा, धारियनि कहिड़ो साउ
अहिड़ो लग्गो वाउ, हिकड़ा हित ब्रिया हुति थिया !

हिकड़ा हित ब्रिया हुति, सिंधी थिया ब्रेई
पर हिकिड़ा सिंधी ड्रेही, ब्रिया थिया परड्रेही
माण्हू हिकड़ा ई पर रहनि राज्रनि ब्रिन में !

रहनि राज्रनि ब्रिनि में, के सिंधु त के हिंदु
मिटी जा हिक मुल्क जी, जुड़ियल तिन जी जिंदु
से छा ज्राणनि सिंधु, जेके हिते ज्रम्या !

जेके हिते ज्रम्या, से बि सिंधी सड्रिबा
सिंधी थी बि सिंधु खे ड्रिसण खां सिकंदा
धारियनि वांगुरु जड्रहिं सिंधु वञी ड्रिसंदा
माण्हू इएं चवंदा त 'सिंधी आया सिंधु ड्रिसण' !

———

नवां लफ़्ज़ :

घोरणु = कुर्बानु करणु।
पसणु = ड्रिसणु।
ओसीअड़ो = इन्तज़ारु ।
रतु रोअणु = पछिताइणु।
नींहु हुअणु = प्यारु हुअणु।
गामु = ग़ोठु।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब लिखोः-

(1) सिंधु ऐं सिंधी शइर में शाइर छा जो बयानु कयो आहे?

(2) सिंधियुनि जा नेण छा पसण लाइ सिकनि था?

(3) 'सिंधी आया सिंधु ड्रिसण' माण्हू इएं छो चवंदा?

सुवालः II. ख़ाल भरियोः-

(1) नदियूं हिते बि जाम, पर ..... में को साहु थनि।

(2) पर हिकड़ा सिंधी ड्रेही, ब्रिया थिया.....।

(3) मिटी जा हिक ..... जी, जुड़ियल तिन जी जिदु।

सुवालः III. ज़िद लिखो :-

पंहिंजा, ड्रेही, हित, ड्रींहं।

●●

(11)

कलजुग॒

– मिर्चूमल सोनी

(1933-2011)

कवि परिचयः-

मिर्चूमल सोनीअ जो जनमु मांझादनि (सिन्धु) में थियो। हू हिकु सुठो गायक कलाकार हो । शेवकराम सोनीअ सां गड्डिजी सिन्धी भगु॒त खे औज ते रसायो। हिन जा कविताउनि जा मजमूआ छपियल आहिनि- 'मुंहिंजो मुल्कु मलीर', 'रूह जा रोशनदान' ऐं 'मोत्युनि जो महराणु' गोवर्धन भारतीअ सां गडु॒ भारत जे जुदा-जुदा शहरनि में वञी सिन्धियत जो नादु वजा॒यो। संदसि रचनाउनि में सिन्धु जी यादि, देश प्रेम, भाईचारो, इंसानियत ऐं धार्मिक एकता बाबत वीचार दर्ज आहिनि।

हिन गीत में कलजुग॒ जो साभियां चिटु चिटियुल आहे।

कलजुग॒ जा करतूत चवां मां, चवां रंगीअ जा रंग,
कांग चुगु॒नि पिया माणिक मोती, हंस चरनि झरि झंग,
ड॒िसो ही अजब दुनिया जा रंग।

अहिड़ो आयो वक्तु अजायो, अहिड़ी पई आहे घाणी,
तेलु न बु॒री रहियो आहे अजु॒ बु॒री रहियो आहे पाणी,
भउ भाउ जो वेरी थियो आ, रहियो न कोई नातो,
पुटु पीउ खे साम्हूं थींदो, कडु॒हिं न कंहिं थे ज॒ातो,

शर्म हया जा लक लताड़े, बणिया अलड़ अड़िबंग,
ड्रिसो ही अजब दुनिया जा रंग।

न्याय मथां अन्याईअ, आहि ज़ुमायो धाको,
ड्रींहं ड्रिठे जो ख़ून ख़राबो, ड्रींहं ड्रिठे पियो डाको,
भाग़ियो वेठो कुंड में रोए, चोरु खणी वियो बाज़ी,
काणि पई आ जंहिं में सा कीअं, न्याउ कन्दी ताराज़ी?
सन्त सड्राइनि मगरि लग़ाइनि, ड्रेंभुनि जहिड़ा ड्रंग,
ड्रिसो ही अजब दुनिया जा रंग।

मन्दिर बणिया भड़भांग मती आ, मैखाने में मस्ती,
ही छा थी वियो ! मुल्क बणी पियो बेगाननि जी बस्ती,
हिकिड़ी गुरबत ब्री महिंगाईअ कई आ हालत खस्ती,
शेवाधारी कीन मिले को, नेतागिरी सस्ती,
इंसानियत जा अंग सुकाया, शैतान अधिरंग।
ड्रिसो ही अजब दुनिया जा रंग।

आम जाम कतलाम थियनि था, सरेआम थिए चोरी,
निगहबान रखवालो पहिरेदार, करे पियो ज़ोरी,
दीन धर्म जूं धज्जूं उड्राइनि, फिरकेवार फसादी,
हीअ कहिड़ी आज़ादी चइबी, हीअ कहिड़ी आज़ादी,
नस नस में नफ़रत फहिलाइनि, विझनि सुलह जा नंग।
ड्रिसो ही अजब दुनिया जा रंग।

———

नवां लफ़्ज़ :

रंगीअ = कुदरत।
भागियो = सुखी इंसान शाहूकारु ।
गुरबत = ग़रीबी ।
फिरकेवार = वर्ग भेद ।
लक = सीमा, हदूं।
भड़भांग = सुन्सान।
निगहबान =चौकीदारु।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो:-

(1) शाइर मिर्चूमल सोनीअ जी कविता 'कलजुग' जो सारु लिखी शाइर जे मक्सद खे ज़ाहिरु करियो।

(2) शाइर मिर्चूमल सोनीअ जी मुख़्तसर वाकिफ़यत लिखो।

सुवालः II. हेठियां हवाला समुझायो:-

(1) पुटु पीउ खे साम्हूं थींदो, कडहिं न कंहिं थे ज़ातो,
शर्म हया जा लक लताड़े, बणिया अलड़ अड़िबंग,
डिसो ही अजब दुनिया जा रंग।

(2) काणि पई आ जंहिं में सा कीअं, न्याउ कन्दी ताराज़ी?
सन्त सडाइनि मगरि लगाइनि, डेंभुनि जहिड़ा डंग,
डिसो ही अजब दुनिया जा रंग।

(3) आम जाम कतलाम थियनि था, सरेआम थिए चोरी,
निगहबान रखवालो पहिरेदार, करे पियो चोरी,
डिसो ही अजब दुनिया जा रंग।

●●

(12)

सौदागरु

– खीमन यू. मूलानी

कवि परिचयः-

खीमन मूलाणी (जनमु 10 जून 1944 ई.) बैरागढ़ भोपाल जो रहवासी आहे। सिन्धी शइर जे मैदान में तबउ आ-ज़माई कंदो आहे। 'टारियुनि झलिया बूर' ऐं 'अङण मथे ओपिरा' संदसि काबिले ज़िक्र शइरिया मजमूआ आहिनि। खेसि साहित्य अकादमी जो ॿाल साहित्य ऐं अनुवाद इनाम हासुलु थी चुको आहे। सामीअ जे सलोकनि जो हुन सुहिणो हिन्दी तर्जुमो कयो आहे। कहाणियुनि ऐं मज़मून जा किताब बि छपियल अथसि।

हिन नज़्म में कवीअ दहशतगर्दनि जी ख़िज़मत कंदे इहो ॿुधायो आहे त दहशतगर्द जो को धरमु कोन हूंदो आहे। हू फ़कति लाशनि जो सौदागरु आहे।

ए लाशनु जा सौदागर तूं, चैन न हरगिज़ पाईंदे,
तो छेड़ियो आहे शेरनि खे, तूं पंहिंजो तड्डो पटाईंदें !

तो वाट वरती बरबादीअ जी, दहशत गरदी नाशादीअ जी,
आज़ाद परिंदनि खे मारे, थो ग़ाल्हि करीं आज़ादीअ जी,
हैवाननि वांगुरु केसताईं, रतु मासु हड्डा पियो खाईंदे !
तो छेड़ियो आहे शेरनि खे.....

ख़ुद सां बि नथो तूं प्यारु करीं, बसि नफ़रत जो प्रचारु करीं,
तूं जीएं न जीअण ड्डिएं थो कंहिंखे, थो लाशनि जो वापारु करीं,

तूं कत्ल व ग़ारत सां जग़ में, केसीं शमशान सजाईंदे !
तो छेड़ियो आहे शेरनि खे.....

हर धर्मु सुठाई सेखारे, थो सच जो रस्तो ड़ेखारे,
तूं करीं धर्म जी ग़ाल्ह मगर, वेठो आहीं ब़ारणु ब़ारे,
मिलंदो न किथे को सुख तोखे, तूं ब़ेई जहान विञाईंदे !
तो छेड़ियो आहे शेरनि खे.....

नवां लफ़्ज़ :

सौदागरु = वापारी।
चैन = आरामु।
तड्डो पटणु = घरु छड्डणु।
नाशादु हुअणु = दुखी हुअणु।
ब़ई जहान = भौतिक ऐं आत्मिक जहान ।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब लिखोः-

(1) शाइर सौदागर खे कहिड़ी हिदायत कई आहे?

(2) हर धर्म इंसान खे छा थो सेखारे?

(3) हिन कविता जे मार्फ़त खीमन मूलाणीअ कहिड़ो संदेश ड़िनो आहे?

(4) 'सौदागरु' कविता जो सारु पंहिंजनि लफ़्ज़नि में लिखो।

सुवालः II. हेठियां हवाला खोले समुझायोः-

(1) ''तूं जीएं न जीअण ड़िएं थो कंहिंखे, थो लाशनि जो वापारु करीं।''

(2) ''हर धर्मु सुठाई सेखारे, थो सच जो रस्तो ड़ेखारे,
तूं करीं धर्म जी ग़ाल्ह मगर, वेठो आहीं ब़ारणु ब़ारे।''

●●

(13)

अखरु जे अघे

– लछमण दुबे

कवि परिचयः-

लछमण दुबे (जनमु 1945 ई.) केतिरे वक्त खां सिंधी, हिंदी ऐं उर्दू ब्रोल्युनि में शाइरी कंदो रहियो आहे। हुन मुम्बईअ में रिज़ा साहब खां उरूज़ी शाइरीअ जी तरबियत वरती हुई ऐं पंहिंजे ज़िंदगीअ जो वड्डो हिसो मुम्बईअ भरिसां थाणा में गुज़ारियो ऐं हींअर भयंदर में मुक़ीम आहे। खेसि 'अञा यादि आहे' किताब ते साहित्य अकादमी इनाम अता थियो। संदसि किताब आहिनि 'अठ ई पहिर उब्राणिको', 'मधु के द्वीप'।

हीउ ग़ज़ल लछमण दुबे जे शाया मज़मूए 'अञा यादि आहे' तां वरतल आहे। हिन ग़ज़ल में कवीअ जुदा-जुदा वीचार फनाइते नमूने पेश कया आहिनि।

बिना कुझु बुधाए बिना मोकिलाए
हलिया था वञनि देस कहिड़े अलाए !

सुम्हारियो वयो आ बुखियो ब्रारड़नि खे
उहाई परियुनि जी कहाणी बुधाए !

ख़बर थसि त कोई न ईंदो तड्हिं पिण
चरी रोज़ विहंदी अथेई घरु सजाए !

चराग़नि मिसलि मुदतुनि खां जलयूं हिन
कोई काश उञ अखड़ियुनि जी बुझाए !

चवण ऐं करण में वड्डो आ तफ़ावतु
हणे हाम हरको, मगर को निभाए !
संदसि पोइलगु ई कंदा नासु हुन खे
कोई आहि, जो देवता खे बचाए !
अयाणा बिलाशक न समुझाए सघंदइ,
मगर ज्ञान वारा छड्डींदइ मुंझाए !
अंधेरो ड्डिसी दर संदइ ते सवाली,
उजालो ड्डिनोसीं, इझो घरु जलाए !
असां लाइ त 'लछमण' अखरु आसरो आ,
अखरु जे अघे, रोशिनीअ ते रसाए !

नवां लफ़्ज़ :

पोइलगु = पुठभराई कंदड़। **अयाणो** = बेसमुझ।
मुदतुनि = घणे वक्त खां। **रसाए** = पहुचाए।

:: अभ्यास ::

सुवाल: I. हेठियनि सुवालनि जा जवाब लिखो:-

(1) ब्रारनि खे बुखियो छो थो सुम्हारियो वञे?

(2) हिन कविता में कहिड़ो संदेश ड्डिनो वियो आहे?

(3) हिन 'ग़ज़ल' जो सारु पंहिंजे लफ़्ज़नि में लिखो।

सुवाल: II. हेठियां हवाला खोले समुझायो:-

(1) ''चवण में ऐं करण में वड्डो आ तफ़ावतु
हणे हाम हरको, मगर को निभाए !''

(2) ''अयाणा बिलाशक न समुझाए सघंदइ,
मगर ज्ञान वारा छड्डींदइ मुंझाए !''

(3) ''अंधेरो ड्डिसी दर संदे ते सवाली,
उजालो ड्डिनोसीं, इझो घरु जलाए !''

●●

(14)

गड्डिजी घारियूं

– ढोलण 'राही'

कवी परिचय:-

श्री ढोलण 'राही' मोरवाणीअ जो जनमु 6 जुलाई 1949 में अजमेर में थियो। हू सिन्धी विषय जो लेक्चरारु रही चुको आहे। हू सुठो गीतकार, एकांकीकार, संगीतकार ऐं कवी आहे। हुन कविता जे हर शाख़ ते कलमु हलायो आहे। मिसलन गीत, ग़ज़ल, दोहा, सोरठा, पंजकड़ा, तस्वीरूं ऐं वाई। संदसि शाइरीअ जा मुख्य मजमूआ आहिनि- नेणनि ओतियो नींहुं, अक्स ऐं पड़ाडा, डाति जूं डियाटियूं, मोरपंखी पल, अंधेरो रोशनु थिए, स्त्री तुंहिंजा रूप, मां आर्सी तुंहिंजी। राजस्थान सिन्धी अकादमीअ पारां खेसि टे दफ़ा बेहतरीन शाइर तौर इनाम मिली चुका आहिनि। अखिल भारत सिन्धी बोली ऐं साहित्य सभा पारां खेनि 'नारायण श्याम' इनामु मिलियो आहे। साल 2005 में साहित्य अकादमी पारां 50000/- जो आबदारु इनामु अता थियो। साहित्य अकादमी ऐं राष्ट्रीय सिन्धी भाषा विकास परिषद जो मेम्बरु रही चुको आहे।

हिन कविता में कवि प्रेम ऐं मेलाप जो संदेशु डींदे वेर विसारण जी सिख्या डिए थो।

साथी सहसें लहरूं गड्डिजी समुण्ड बणाइन,
ला ताइदाद सितारा हिकु थी आसमान में गड्डिजी घारिन।
रंग बिरंगी गुल फुल मुखड़ियूं,
गुलशन जी सुन्दरता आहिनि।
पन ऐं टारियूं थुड़ ऐं पाड़ूं,
हिक ई वण जा हिस्सा आहिनि।
कणे मंझा ई केच थियनि था,
लीकनि ऐं टुबिकनि सां गड्डिजी अखर जुड़नि था।

अखरनि मां ई लफ़्ज़ ठहनि था,
लफ़्ज़ अमूरत भावनि खे आकारु ड्यिनि था,
अणु अणु मां ही सारो ब्रह्माण्ड जुड़ियलु आ,
तूं ऐं मां पिण
जीवन जे सागर जूं सहसें लहरूं आहियूं,
हिक ई वण जूं टारियूं ऐं पन,
थुड़ आहियूं ऐं पाड़ू आहियूं,
असीं अखण्ड अनाद भाव जा शहद मनोहर,
असीं अखण्ड ब्रह्माण्ड संदियूं सुन्दर रचनाऊं।
जाति पाति ब्रोली या मज़हब,
मानवता खां मथे न कोई,
उल्फ़त आहे धर्म असांजो,
अटल एकता कर्म असांजो,
प्रेम असांजी भाषा आहे।
आउ त पंहिंजी जाति सुञाणू
वेरु, कटरता नफ़रत, कीनो कढी अंदर मां,
गड्डिजी घारियूं।
पंहिंजी प्यारी फुलवाड़ीअ खे
गुलनि फुलनि वांगुरु सींगारियूं,
गले मिलूं ऐं वेर विसारियूं,
आउ त साथी गड्डिजी घारियूं।

नवां लफ़्ज़ :

सहसें = हज़ारें। **लातइदाद** = बेशुमार । **केच** = अंबार ।
अमूरत = निराकार। **उल्फ़त** = प्रेम। **आकारु** = शिकिल।

:: अभ्यास ::

सुवालः I. हेठियनि सुवालनि जा मुख़्तसर जवाब लिखो:-

(1) गुलशन जी सुन्दरता केरु आहिनि?
(2) पन टारियूं थुड़ पाड़ूं कंहिंजा हिस्सा आहिनि?
(3) अखर कंहिंमां था जुड़नि?
(4) अमूरत भावनि खे आकार कंहिंमां थो मिले?
(3) हिन कविता जो सारु पंहिंजनि लफ़्ज़नि में लिखो?

●●

(15)

देश भक्ति ऐं सिन्धी भाषा : पंजकड़ा

– कवयित्री : कमला गोकलाणी

पंजकड़ा निजु सिन्धी सिन्फ़ आहे, जंहिंखे प्रभू वफ़ा शुरू कयो। हिननि पंजकड़नि में डॉ. कमला गोकलाणीअ भारत देश जी महिमा ऐं सिन्धी भाषा बाबत वीचार पेश कया आहिनि।

देश जी महिमा

1. झुके जंहिं धरतीअ ते आकासु,
   चुमे थो चरण संदसि सागरु,
   मुकद्दस मंदिर आ हर घरु,
   आ उनजी महिमा जग़ में खास,
   झुके जंहिं धरतीअ ते आकासु।

2. सज़ो डींहुं सिजु करे गुणगान,
   वहे पवित्र गंगा धारा,
   सुर्ग़ खां वधि मंजर प्यारा,
   अमरता संदो अथसि वरदान,
   सज़ो डींहुं सिजु करे गुणगान।

3. संवारिन जंहिंखे संत फ़कीर,
   शहीदनि ऊंचो कयड़स मानु,

जगुत में बुलंद जंहिंजो शानु,
डियनि कुर्बानी जोधा वीर,
संवारिन जंहिंखे संत फ़कीर।

4. मुल्क जी मिट्टी आ चंदन,
खेत जा संग अथसि सोना,
जगुत में की हिन जहिड़ो,
आ हिन जी रेत बि वृंदावन,
मुल्क जी मिट्टी आ चंदन।

सिन्धी भाषा

1. डुहीं अप्रेल न मूर विसारि,
सिन्धी भाषा खे मिलियो मानु,
जोड़जक में पातईं स्थान,
सिन्धीअ लाइ जीअ में जनून धार,
डुहीं अप्रेल न मूर विसारि।

2. बुावंजवाह जंहिंमें अथई अखर,
ज़ख़ीरो लफ़्ज़नि जो बेशुमार,
उन्हीअ लाइ हिरदे में हुब धार,
सिखी वठु पेशु ऐं ज़ेर ज़बर,
बुावंजवाह जंहिंमें अथई अखर।

3. आहे हर लफ़्ज़ु मिठो माखी,
अचे हर जुमिले मां ख़ुश्बू,
छड्डे जा वासे तन मन रूह,
सिन्धी गाल्हाए डे साखी,
आहे हर लफ़्ज़ु मिठो माखी।

नवां लफ़्ज़ :

मुकद्दस = पवित्र।
मंजर = नज़ारा।
बुलंद = ऊचो।
जोड़जक = संविधान।
वासे = महकाए।
साखी = शाहिदी।
जखीरो = तइदाद।
हुब = प्रेम।
पेशु = उ जी मात्रा।
ज़ेरि = ि जी मात्रा ।
ज़बर = अ जी मात्रा ।

:: अभ्यास ::

सुवाल:1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब ड्वियो:-

(i) सिजु कंहिजो गुणगान थो करे?

(ii) भारत खे केरु संवारिनि था?

(iii) भारत जे रेत बि छा आहे?

(iv) ड्बहीं अप्रेल जी कहिड़ी अहमियत आहे?

(v) सिन्धी ब्रोलीअ में घणा अखर आहिनि?

सुवाल:2. हेठियनि सुवालिन जा जवाब खोले लिखो?

मथियनि पंजकड़नि जो सारु पंहिंजे लफ़्ज़नि में लिखो।

●●